नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 04, अंक 202, नई दिल्ली, मंगलवार 27 अक्टूबर 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

सम्मान मांगने से नहीं, अपने आचरण से कमाया जाता है; और विश्वास शब्दों से नहीं, निरंतर अच्छे कर्मों से बनता है।

● 03 महाप्रभु वल्लभाचार्य - पुष्टिमार्ग के संस्थापक

● 06 फिर हवा खराब: प्रदूषण की लौटती समस्या और हमारी जिम्मेदारी

● 08 झारखंड में धान का एमएसपी रू 2550 से रू 2570 प्रति क्विंटल निर्धारित

परिवहन विशेष समाचार पत्र को जिस तरह आप लोगों के सहयोग लगातार पिछले 3 वर्षों से प्राप्त हुआ और दिन प्रतिदिन आपकी आवाज को आगे पहुंचाने में आपका सहयोगी बना उसको देखते हुए परिवहन विशेष समाचार पत्र के प्रबंधक मंडल और ट्रांसपोर्ट विशेष न्यूज लिमिटेड कंपनी द्वारा जनहित, जनकल्याण जनसूचना और जानकारी को और तेजी से भारत सरकार और राज्य सरकारों के साथ सभी राजनीतिक संगठनों को सबसे पहले पहुंचाने के उद्देश्य से अक्टूबर माह से जनता की आवाज का अपना चैनल "परिवहन विशेष न्यूज दूरदर्शन" शुरू करने का निर्णय लिया है।

जल्द आपके बीच में....

परिवहन विशेष न्यूज दूरदर्शन

बड़ी खुशखबरी! अब आपकी आवाज गूंजेगी पूरी दुनिया में
परिवहन विशेष समाचार पत्र के सफल 3 वर्षों के बाद अब नई क्रांति

आशा करते हैं जैसे आपने आज के इस दौर मे "परिवहन विशेष समाचार पत्रों" को इतना आगे ले कर जाने में सहयोग दिया उसी प्रकार हमारे द्वारा आपकी आवाज बनने के लिए शुरू किए जा रहे "परिवहन विशेष न्यूज दूरदर्शन" को विश्व का सबसे बड़ा चैनल बनवाएंगे।

संजय बाठला
मुख्य संपादक

परिवहन विशेष समाचार पत्र - ऊर्जा-परिवहन महाविश्लेषण

पेट्रोल की बादशाहत को चुनौती - भारत का मास्टरस्ट्रोक, E100 को हरी झंडी, विदेशी तेल पर निर्भरता को करारा झटका

केंद्रीय मोटर वाहन नियम 1989 में ऐतिहासिक संशोधन - फ्लेक्स-फ्यूल वाहनों में 100% एथेनॉल का रास्ता साफ, किसानों से ऑटोमोबाइल तक बदलेगी तस्वीर

लेखक: एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी, गोंदिया महाराष्ट्र । प्रस्तुतकर्ता: पिंकी कुंडू, सह संपादक

तथ्य एक नजर में

- **अधिसूचना:** G.S.R. 911(E) दिनांक 23 अक्टूबर 2026, राजपत्र में प्रकाशन 26 अक्टूबर 2026 से प्रभावी, मंत्रालय - सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय
- **क्या बदला:** उत्सर्जन मानक Rule 115 में E85 के स्थान पर E85 या E100 जोड़ा गया, सकल वाहन वजन सीमा 3000 से बढ़ाकर 3500 किग्रा, HCNG, E20, बायोडीजल नियमों में तकनीकी सुधार
- **स्पष्ट शर्त:** E85/E100 का उपयोग केवल OEM द्वारा विशेष रूप से डिजाइन और प्रमाणित फ्लेक्स-फ्यूल वाहनों में ही होगा, मौजूदा E20 या सामान्य पेट्रोल कारों में नहीं
- **ईंधन का अर्थ:** E20 = 20% एथेनॉल + 80% पेट्रोल, E85 = 85% एथेनॉल, E100 = लगभग शुद्ध एथेनॉल

समग्र व्यापक महा-विश्लेषण - मुख्य बिंदु

1. E20 से E100 तक का ऐतिहासिक सफर: 2013-14 में मिश्रण 1.5% था, 2024-25 में औसत 19.24%, 2025-26 में 20% लक्ष्य समय से पहले हासिल। अब E100 से अगला चरण। उत्पादन क्षमता 2014 में 421 करोड़ लीटर से बढ़कर 2026 में लगभग 2000 करोड़ लीटर, वर्तमान स्थापित क्षमता 18.25 अरब लीटर - जो E25 परिदृश्य में 2030-31 तक 17.9 अरब लीटर की मांग को पूरा करने में सक्षम।

2. चार बड़े फायदे - मास्टरस्ट्रोक क्यों:

- **विदेशी मुद्रा बचत:** भारत कच्चे तेल का बड़ा आयातक, घरेलू एथेनॉल से आयात बिल में कमी।
- **किसानों को लाभ:** गन्ना रस, शीरा, मक्का, अनुपयोगी अनाज से एथेनॉल - चीनी मिलों, डिस्टिलरी, परिवहन में रोजगार। उचित मूल्य और समय पर भुगतान शर्त।
- **स्वच्छ परिवहन:** ऑक्सीजन युक्त एथेनॉल से CO उत्सर्जन में कमी की संभावना, पर



कुल लाभ उत्पादन से लेकर दहन तक के जीवन-चक्र पर निर्भर।

- **ऊर्जा आत्मनिर्भरता:** पश्चिम एशिया संघर्ष के बीच वैकल्पिक घरेलू विकल्प, 19 देशों में सफल उपयोग का अनुभव।

3. फ्लेक्स-फ्यूल कारें कैसे काम करेंगी: विशेष सेंसर, ECU, अनुकूल इंजेक्टर, पंप और सामग्री। मारुति सुजुकी ने जून 2026 में WagonR Flex Fuel पेश की जो E20 से E100 तक अनुकूल। टोयोटा, टाटा, हुंडई के मॉडल पाइपलाइन में। शुरुआत में कीमत अधिक, बाद में बड़े पैमाने पर उत्पादन से कमी।

4. आम उपभोक्ता के लिए सबसे जरूरी चेतावनी: आपकी मौजूदा कार E100 के लिए स्वतः उपयुक्त नहीं। निर्माता के मैनुअल के अनुसार ही ईंधन भरें, अन्यथा सील, पाइप, इंजन को नुकसान। एथेनॉल की ऊर्जा घनत्व पेट्रोल से कम, इसलिए प्रति लीटर माइलेज कम हो सकती है - तुलना प्रति किलोमीटर खर्च से करें। E100 पंप अभी सीमित, 2027 तक 5000 डिस्पेंसर का लक्ष्य है, खरीद से पहले अपने शहर में उपलब्धता जांचें।

निष्कर्ष: यह अधिसूचना सभी गाड़ियों को E100 पर चलाने का आदेश नहीं, बल्कि निर्माताओं के लिए परीक्षण और प्रमाणन का नियामकीय रास्ता साफ करना है। ऊर्जा सुरक्षा की जंग में भारत ने बड़ा दांव चला है।

परिवर्तन योजना के तहत 28 अक्टूबर को बुराड़ी में विशाल परिवहन मेला - पुराने ट्रक-बसों को मिलेगी नई जिंदगी

सड़क परिवहन मंत्रालय का आदेश RT-16011/7/2025-T, BS-VI और इलेक्ट्रिक वाहनों पर जोर, एक ही छत के नीचे स्क्रैपिंग से फाइनेंस तक सुविधा

प्रस्तुतकर्ता विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार पत्र

तथ्य एक नजर में

- आदेश: भारत सरकार, सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय, ट्रांसपोर्ट सेक्शन, ट्रांसपोर्ट भवन, नई दिल्ली
- दिनांक: १६ अक्टूबर २०२६, हस्ताक्षर - अवर सचिव परवीन कुमार
- कार्यक्रम: ट्रांसपोर्ट मेला, वाहन निरीक्षण इकाई, DTO के पास, बुराड़ी, उत्तरी दिल्ली
- समय: २8 अक्टूबर २०२६, सुबह 9:३0 बजे से
- ग्राप्तकर्ता: दिल्ली-NCR के सभी RVSF, OEM, बैंक/NBFC, OMCs/CGD कंपनियां

विस्तृत विश्लेषण - मुख्य बिंदु

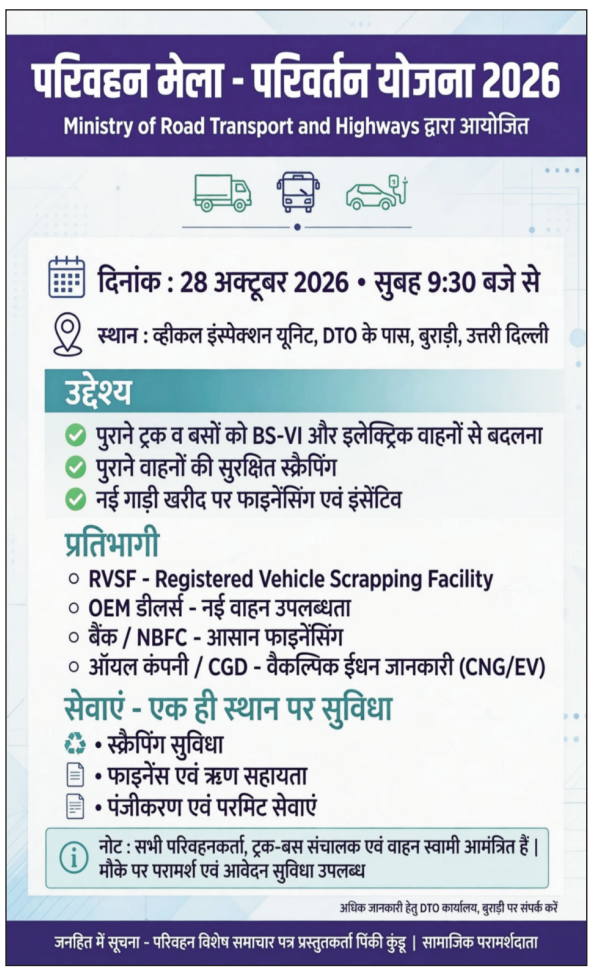
1. परिवर्तन योजना क्या है: मंत्रालय दिल्ली-NCR में वायु प्रदूषण कम करने के लिए पुराने ट्रकों और बसों को BS-VI या उससे अधिक उत्सर्जन मानक वाले क्लीनर वाहनों और इलेक्ट्रिक वाहनों (EVs) से बदलने की योजना लागू कर रहा है। इसके तहत स्क्रैपिंग पर प्रोत्साहन, नई गाड़ी पर सब्सिडी, फ्यूल बेनिफिट और आसान फाइनेंस दिया जा रहा है।

१. मेले का उद्देश्य: पत्र के पैरा 5 में स्पष्ट है - लाभार्थी को दर-दर न भटकना पड़े। स्क्रैपिंग, फाइनेंस, खरीद, पंजीकरण की सभी औपचारिकताएं एक ही स्थान पर, समयबद्ध तरीके से पूरी होंगी। यह वन-स्टॉप सॉल्यूशन है।

3. कौन लगाएगा स्टॉल: मंत्रालय ने सभी को निर्देश दिया है कि वे लैपटॉप और अन्य उपकरणों के साथ अपना कियोस्क, होर्डिंग, बैनर, स्टैंडी लगाएं। कुर्सी-मेज स्थल पर दी जाएगी।

- RVSF: पुराने वाहन की स्क्रैप वैल्यू बताएंगे
- OEM डीलर्स: नई BS-VI, CNG, EV बस-ट्रक मॉडल दिखाएंगे
- बैंक/NBFC: मौके पर लोन स्वीकृति, परिवर्तन योजना के नोडल बैंक
- OMC/CGD: डीजल के बजाय CNG, LNG, इलेक्ट्रिक चार्जिंग पर लाभ समझाएंगे

4. ट्रांसपोर्टरों के लिए सुनहरा मौका: यदि आपके पास 10-15 साल पुरानी डीजल बस या ट्रक है, तो इस मेले में जाकर तुरंत स्क्रैपिंग सर्टिफिकेट, एक्सचेंज बोनस और नई गाड़ी की बुकिंग पर विशेष छूट का लाभ ले सकते हैं।



भारत में इलेक्ट्रिक वाहन, इथेनॉल और वाहन स्क्रैप नीति : बिजली, बैटरी, कानून और जनता के अधिकार

लेखक संजय कुमार बाटला

1. भारत देश में बिजली पर्याप्त है, पर लोकल ग्रिड सुधार जरूरी है।
२. बैटरी रीसाइक्लिंग का प्रदूषण-रहित कानूनी ढांचा २०२६-२७ से 90% रिकवरी के साथ तैयार है, पर जमीन पर ईमानदार इम्प्लीमेंटेशन बाकी है।
3. E100 सिर्फ फ्लेक्स-फ्यूल गाड़ियों के लिए है, आम गाड़ियों में डालना अवैध और खतरनाक है।
4. जबरन स्क्रैप - फिटनेस आधारित स्क्रैप न्यायिक है, केवल आयु आधारित बैंकेट बैन, विशेषकर NCR के बाहर, न्यायिक कसौटी पर कमजोर है। सुप्रीम कोर्ट की नवीनतम रोक इस बात का प्रमाण है। जनता को PUC, फिटनेस सर्टिफिकेट और वैध पंजीकरण होने तक अपनी संपत्ति रखने का संवैधानिक संरक्षण है।

जबरदस्ती स्क्रैप - क्या यह न्यायिक है? जनता के अधिकार क्या कहते हैं? यह सबसे संवेदनशील मुद्दा है।

क. कानून क्या कहता है?

- Motor Vehicles Act, Section 59(1): केंद्र सरकार गजट से वाहन की आयु तय कर सकती है।
- Section 59(4): इसी के आधार पर रीसाइक्लिंग के नियम बना सकती है।
- सरकार ने स्वयं सुप्रीम कोर्ट में कहा था: "Vehicles can ply irrespective of age if they satisfy prescribed norms" और कोई आयु सीमा तय नहीं की गई है। यही बाद में 2015 में भारी उद्योग मंत्रालय ने NGT में दोहराया - जबरन स्क्रैप से "अनगिनत रिट याचिकाएं" आएंगी।

ख. स्क्रैप पॉलिसी का विकास:

- Voluntary Scrappage Policy २०२१: निजी वाहन २० साल, कमर्शियल 15 साल, अगर फिटनेस फेल हो तो स्क्रैप। फिट है तो चल सकता है।
- NGT आदेश 2015 (Vardhaman Kaushik केस): दिल्ली-NCR में 10 साल डीजल, 15 साल पेट्रोल पर बैन। SC ने 2018 में MC Mehta केस में इसे सही ठहराया।
- नवीनतम राहत: सुप्रीम कोर्ट ने २०२5 में आदेश दिया - "no coercive steps to be taken against owners of 10-year-old diesel and 15-year-old petrol vehicles"। दिल्ली सरकार की पुनर्विचार याचिका पर नोटिस जारी है। याचिकाकर्ताओं ने Article 300A (संपत्ति का अधिकार), Article 19(1)(g) और Article 21 का हवाला दिया - पूरी टैक्स देकर खरीदी गाड़ी को प्रदूषण के बिना सिर्फ उम्र से बैन करना मनमाना है।

ग. संवैधानिक संतुलन:

- Article 21: सुप्रीम कोर्ट कह चुका है "Right to life includes right to live in pollution-free environment"। यह अधिकार दिल्ली और देश के बाहर सबका है।
- Article 300A: बिना कानून संपत्ति से वंचित नहीं किया जा सकता। MV Act कानून है, पर उसका प्रयोग फिटनेस आधारित होना चाहिए, न कि बैंकेट आयु आधारित।
- Article 14/19: एक ही PUC पास गाड़ी अगर अच्छी मेंटेनेंस से कम प्रदूषण कर रही है तो उसे सिर्फ उम्र से कबाड़ घोषित करना भेदभाव है।

यही कारण है कि सरकार PARIVARTAN (Rs 9,585 Cr) जैसी योजना में दिल्ली-NCR में BS-IV से पुराने ट्रक/बस को इंसेंटिव - 8% डिस्काउंट, 100% रोड टैक्स छूट, ब्याज सब्सिडी देकर स्वैच्छिक रूपांतरण पर जोर दे रही है, न कि जबरन जब्ती पर। गुजरात ने भी 50% टैक्स छूट का नोटिफिकेशन दिया है।

अगर सरकारी विभाग इस के लिए वाहन मालिकों पर दबाव बना कर वाहनों को परिवर्तन करवा रहे हैं तो यह गैर कानूनी है।

प्रस्तावना: आपने जो 4 प्रश्न उठाए हैं, वही आज देश के ३३ करोड़ वाहन मालिकों के मन में है। सरकार EV को प्रमुखता दे रही है, E100 का गजट आज ही २६ अक्टूबर २०२६ को G.S.R. 911(E) के रूप में जारी हुआ है, और उसी दिन स्क्रैप से जुड़ा Form 37A/37B का ड्राफ्ट G.S.R. 643(E) भी आया है। आइए तथ्यों पर बात करते हैं।

1. क्या भारत के पास EV चार्जिंग के लिए पर्याप्त बिजली है? राष्ट्रीय स्तर पर - हाँ, सरप्लस है। स्थानीय स्तर पर - चुनौती है।

- **स्थापित क्षमता:** अगस्त २०२६ तक भारत की कुल स्थापित क्षमता 555 GW पहुँच चुकी है, जिसमें कोल २२4 GW, सोलर 168 GW, विंड 59 GW। FY२6 की शुरुआत में यह 520.51 GW थी। इसने २४२.49 GW से २70 GW तक का रिकॉर्ड पीक डिमांड सफलतापूर्वक मैनेज किया है।
- **मांग का अनुमान:** ICRA के अनुसार बिजली की मांग अगले 5 साल 6-6.5% सालाना बढ़ेगी, जिसमें EV, डेटा सेंटर और ग्रीन हाइड्रोजन का योगदान २0-२5% होगा। अकेले 309 मिलियन दोपहिया EV भी कुल EV मांग का 7% से कम खपत करेंगे।
- **सरप्लस कहाँ है:** CREA की Q२ २०२6-२7 रिपोर्ट कहती है कि पीक डिमांड २70 GW के बावजूद थर्मल प्लांट सिर्फ 68% PLF पर चले। यानी हमारे पास अभी भी इस्तेमाल न हुई क्षमता है।

निष्कर्ष: देश में कुल बिजली की कमी EV चार्जिंग में बाधा नहीं बनेगी। असली चुनौती डिस्ट्रीब्यूशन की है। शाम 7 बजे लाखों गाड़ियों के एक साथ चार्ज होने से लोकल ट्रांसफार्मर पर लोड आएगा। इसके लिए सरकार National Electricity Plan के तहत ट्रांसमिशन नेटवर्क को २०३२ तक 6.48 लाख सर्किट किमी तक बढ़ा रही है और स्मार्ट चार्जिंग, सोलर+स्टोरेज हब की योजना है।

१. क्या भारत के पास बिना प्रदूषण के बैटरी स्क्रैप का तरीका है? कानून है, तकनीक आ रही है, पर जमीन पर अभी 99% गैप है।

भारत का मुख्य कानून Battery Waste Management Rules, २०२२ है।

- **EPR मॉडल:** प्रोड्यूसर को 100% कलेक्शन और रीसाइक्लिंग/रिफर्बिशमेंट करना अनिवार्य है, लैंडफिल या जलाना प्रतिबंधित है।
- **रिकवरी टारगेट:**

वित्त वर्ष	न्यूनतम रिकवरी
२०२4-२5	70%
२०२5-२6	80%
२०२6-२7 onward	90%



- **रिसाइकल कंटेंट:** नई बैटरी में २०२7-२8 से 5% और २०३0-३1 से २0% रिसाइकल मटेरियल डालना अनिवार्य।

तकनीक: Attero, Lohum, Metastable जैसी कंपनियाँ झाड़ी-मेटलर्जी से 95% तक लिथियम, कोबाल्ट, निकल रिकवर करने का दावा करती हैं। वर्तमान क्षमता 1.5 लाख टन/साल, २०३0 तक 5 लाख टन+ अनुमान।

सच्चाई: आज भारत में लिथियम-आयन बैटरी का केवल 1% ही औपचारिक रूप से रिसाइकल होता है, जबकि लेड-एसिड में 90% से ज्यादा है। 40%+ काम अनौपचारिक कबाड़ियों के हाथ में है जो तेजाब से जलाकर प्रदूषण फैलाते हैं। कानून मजबूत है, पर इन्फोर्समेंट और कलेक्शन सेंटर की कमी बड़ी चुनौती है। बिना प्रदूषण का तरीका कागज पर मौजूद है, जमीन पर अभी बन रहा है।

3. इथेनॉल 100% (E100) का अर्थ क्या है? E100 का मतलब 100% शुद्ध इथेनॉल ईंधन।

आज ही जारी गजट G.S.R. 911(E) कहता है:

> "E85 or E100 shall be used in the vehicles designed by the original equipment manufacturers as Flex-fuel vehicles."

- E100 = 100% Ethanol, E85 = 85% Ethanol + 15% Petrol
- **किसके लिए:** केवल OEM द्वारा डिज़ाइन की गई Flex-Fuel गाड़ियों के लिए। आपकी सामान्य BS6 पेट्रोल कार में E100 डालना इंजन सीज कर देगा, यह अनुमत नहीं।
- **अन्य बदलाव:** Emission नियम Rule 115 में हर जगह E85 की जगह "E85 or E100" लिखा गया है, और हल्के वाहनों की वजन सीमा 3000 kg से बढ़ाकर 3500 kg की गई है।
- **हकीकत:** भारत ने E२0 लक्ष्य २०२5 में ही पूरा कर लिया। अब Maruti Wagon R Flex-Fuel (E२0 से E100) जैसी गाड़ियाँ लॉन्च हुई हैं। पर E100 पंप पूरे देश में नहीं हैं, अभी सिर्फ नोटिफिकेशन आया है, सप्लाई चेन बननी बाकी है।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत
https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

आज का साइबर सुरक्षा विचार

एआई (AI) साइबर अपराधियों के लिए नया शक्ति-वर्धक (Force Multiplier) बन गया है



पिंकी कुंडू

साइबर अपराध के दृष्टिकोण से AI आधारित साइबर खतरों पर NSE की चेतावनी क्यों अत्यंत महत्वपूर्ण है? हाल ही में नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (NSE) के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी Ashish Kumar Chauhan ने बताया कि उभरते AI-सक्षम साइबर खतरों से उत्पन्न कमजोरियों की पहचान हेतु एनएसई अपने संपूर्ण नेटवर्क अवसंरचना की समीक्षा कर रहा है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि साइबर सुरक्षा सभी स्टॉक ब्रोकर्स का एक मुख्य कार्य होना चाहिए तथा विकसित होते साइबर जोखिमों की पहचान एवं रोकथाम के लिए एक समर्पित उद्योग कार्यबल (Task Force) के गठन का आह्वान किया। यह चेतावनी केवल एक तकनीकी मुद्दा नहीं है। साइबर अपराध, वित्तीय सुरक्षा, राष्ट्रीय सुरक्षा और जनता के विश्वास के दृष्टिकोण से यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है, जिस पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है। हाल में NSE प्रमुख Ashish Kumar Chauhan की चेतावनी एक महत्वपूर्ण वास्तविकता को रेखांकित करती है कि साइबर खतरे अब केवल व्यक्तिगत हैकरों तक सीमित नहीं हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) हमलावरों को अधिक तेजी से कमजोरियों की पहचान करने, फ़िशिंग अभियानों को स्वचालित बनाने, विश्वसनीय डीपफेक तैयार करने और महत्वपूर्ण वित्तीय अवसंरचना को अभूतपूर्व स्तर पर निशाना बनाने में सक्षम बना रही है। NSE ने अपने सम्पूर्ण नेटवर्क ढांचे की समीक्षा शुरू कर दी है तथा ब्रोकर्स से साइबर सुरक्षा को मुख्य व्यावसायिक कार्य के रूप में अपनाने का आग्रह किया है।

साइबर अपराध के दृष्टिकोण से यह इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि वित्तीय बाजार एक-दूसरे से जुड़े हुए पारिस्थितिकी तंत्र (Interconnected Ecosystem) है। किसी एक ब्रोकर, विक्रेता या बाजार सहभागी की सुरक्षा चूक भी बाजार की अखंडता, निवेशकों के विश्वास और वित्तीय स्थिरता को प्रभावित कर सकती है। NSE ने क्वांटम कंप्यूटिंग और भविष्य में क्रिप्टोग्राफिक सुरक्षा संबंधी जोखिमों की भी ओर संकेत किया है, जो बताता है कि संगठनों को न केवल आज के बल्कि भविष्य के खतरों के लिए भी तैयार रहना होगा।

भारतीय प्रतिभूति बाजार की बढ़ती डिजिटल निर्भरता

भारतीय प्रतिभूति बाजार अब डिजिटल अवसंरचना, परस्पर जुड़े ट्रेडिंग सिस्टम, APIs, क्लाउड सेवाओं, मोबाइल एप्लिकेशन, ब्रोकर्स, डिपॉजिटरीज, भुगतान प्रणालियों और तृतीय-पक्ष सेवा प्रदाताओं पर अत्यधिक निर्भर हो चुका है। AI साइबर खतरों को किस प्रकार बदल रहा है?

AI हमलों को बना रहा है:

- अधिक तेज़ (Faster)
- कम लागत वाला (Cheaper)
- बड़े पैमाने पर संचालित करने योग्य (More Scalable)
- अधिक विश्वसनीय और प्रभावशाली (More Convincing)
- पहचानने में अधिक कठिन (Harder to Detect)

किसी बड़े स्टॉक मार्केट सहभागी पर सफल साइबर हमला प्रभावित कर सकता है:

- निवेशकों को
- स्टॉक ब्रोकर्स को
- बैंकों को
- स्टॉक एक्सचेंजों को
- पेमेंट गेटवे को
- वित्तीय संस्थानों को
- राष्ट्रीय आर्थिक स्थिरता को

NSE की चेतावनी दर्शाती है कि साइबर अपराधी अब केवल पारंपरिक वित्तीय धोखाधड़ी तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे महत्वपूर्ण वित्तीय अवसंरचना को निशाना बना रहे हैं।

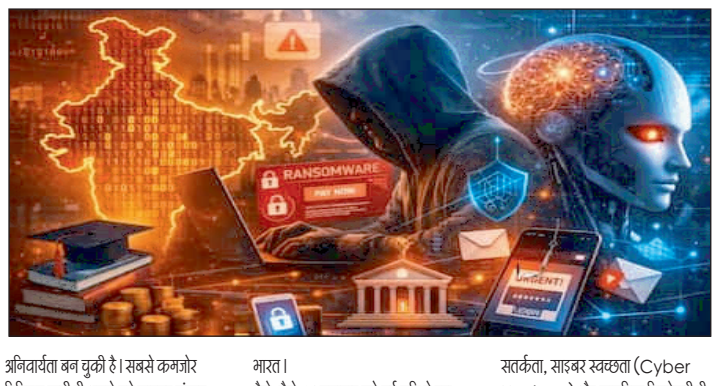
सोशल इंजीनियरिंग का नया खतरा

AI अब निम्नलिखित तैयार कर सकता है:

- विश्वसनीय ई-मेल
- आशंक संदेश
- फर्जी पहचान
- डीपफेक आवाज़ें
- डीपफेक वीडियो

और वह भी अभूतपूर्व पैमाने पर।

"AI के युग में साइबर सुरक्षा केवल आईटी विभाग की जिम्मेदारी नहीं रह गई है। यह एक व्यावसायिक आवश्यकता, वित्तीय सुरक्षा कवच और राष्ट्रीय सुरक्षा की अनिवार्यता बन चुकी है। सबसे कमजोर डिजिटल कड़ी ही अगले बड़े साइबर संकट का प्रवेश द्वार बन सकती है।"



सुरक्षित सिस्टम। सुरक्षित बाजार। सुरक्षित भारत।

जैसे-जैसे AI नवाचार को नई गति दे रहा है, उसी प्रकार यह साइबर अपराधियों को भी नई क्षमताएँ प्रदान कर रहा है। निरंतर सतर्कता, साइबर स्वच्छता (Cyber Hygiene) और सामूहिक जिम्मेदारी ही अगली पीढ़ी के वित्तीय साइबर खतरों के विरुद्ध सबसे प्रभावी रक्षा है।

सिर्फ फेफड़े ही नहीं, दिमाग भी हो रहा है वायु प्रदूषण का शिकार

डॉ. विजय गर्ग

वायु प्रदूषण हमारे समय की सबसे गंभीर पर्यावरणीय और सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्याओं में से एक है। जब हम प्रदूषित हवा के बारे में सोचते हैं, तो आमतौर पर हमारे मन में खाँसी, साँस लेने में परेशानी, अस्थमा और फेफड़ों की बीमारियाँ आती हैं। लेकिन वैज्ञानिक शोध लगातार संकेत दे रहे हैं कि वायु प्रदूषण का प्रभाव केवल श्वसन तंत्र तक सीमित नहीं है। लंबे समय तक प्रदूषित हवा के संपर्क में रहने से मस्तिष्क भी प्रभावित हो सकता है। यह बच्चों, वयस्कों और बुजुर्गों सभी के लिए चिंता का एक महत्त्वपूर्ण विषय है।

जिस हवा में हम साँस लेते हैं, वह हमेशा उतनी स्वच्छ नहीं होती, जितनी दिखाई देती है। वाहनों, उद्योगों, निर्माण कार्यों, कचरा जलाने और अन्य स्रोतों से निकलने वाले सूक्ष्म कण, जहरीली गैसें और दूसरे प्रदूषक हर साँस के साथ हमारे शरीर में प्रवेश कर सकते हैं। इनमें से कुछ कण इतने छोटे होते हैं कि वे फेफड़ों के गहरे हिस्सों तक पहुँच जाते हैं और शरीर में सूजन पैदा कर सकते हैं। वैज्ञानिक इस बात का अध्ययन कर रहे हैं कि ये प्रक्रियाएँ मस्तिष्क और उसकी कार्यप्रणाली को किस प्रकार प्रभावित कर सकती हैं।

वायु प्रदूषण मस्तिष्क को कैसे प्रभावित करता है?

इस संबंध में सबसे बड़ी चिंता सूक्ष्म कणों, विशेषकर PM2.5, को लेकर है। ये कण इतने छोटे होते हैं कि श्वसन तंत्र के गहरे हिस्सों तक पहुँच सकते हैं। शोध से संकेत मिलता है कि इन कणों के संपर्क में आने से शरीर में सूजन, ऑक्सीडेटिव तनाव और रक्त वाहिकाओं के कामकाज में बदलाव हो सकते हैं। ये प्रक्रियाएँ मस्तिष्क को भी प्रभावित कर सकती हैं, हालाँकि इनके सटीक कारणों और नुकसान की सीमा को समझने के लिए अभी और शोध की आवश्यकता है।

कुछ वायु प्रदूषक फेफड़ों, रक्त प्रवाह और मस्तिष्क की सुरक्षा करने वाली परतों से संबंधित प्रक्रियाओं के माध्यम से तंत्रिका तंत्र को प्रभावित कर सकते हैं। कई अध्ययनों में लंबे समय तक वायु प्रदूषण के संपर्क और मस्तिष्क की संरचना या कार्यक्षमता में बदलाव के बीच संबंध पाया गया है। हालाँकि, किसी संबंध का पाया जाना अपने आप में यह सिद्ध नहीं करता कि प्रदूषण ही हर प्रकार की मस्तिष्क संबंधी समस्या का प्रत्यक्ष कारण है।

स्मरण शक्ति, एकाग्रता और सीखने की क्षमता पर प्रभाव

मस्तिष्क स्मरण शक्ति, एकाग्रता, तर्क करने, निर्णय लेने और सीखने जैसे महत्त्वपूर्ण कार्य करता है। नए शोधों में कुछ आबादियों में वायु प्रदूषण के संपर्क और सोचने-समझने की क्षमता में कमी के बीच संबंध देखा गया है। वैज्ञानिक यह भी जाँच रहे हैं कि क्या प्रदूषण के लंबे समय तक संपर्क का संबंध उम्र बढ़ने के साथ होने वाली संज्ञानात्मक क्षमता की गिरावट से हो सकता है।

बच्चों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है, क्योंकि उनका मस्तिष्क अभी विकास की अवस्था में होता है। गर्भावस्था और बचपन के दौरान प्रदूषित हवा के संपर्क को कुछ अध्ययनों में संज्ञानात्मक विकास, ध्यान और सीखने की क्षमता में अंतर से जोड़ा गया है। इसका अर्थ यह नहीं है कि प्रदूषण के संपर्क में आने वाले प्रत्येक बच्चे को कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। बल्कि, ये निष्कर्ष बताते हैं कि बच्चों के विकास के महत्त्वपूर्ण चरणों में प्रदूषण से बचाव कितना आवश्यक है।

विद्यार्थियों के लिए स्वस्थ वातावरण प्रभावी शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। इसलिए स्वच्छ हवा को केवल पर्यावरण की आवश्यकता नहीं, बल्कि बच्चों के स्वास्थ्य और शैक्षिक विकास से जुड़ा एक महत्त्वपूर्ण विषय भी माना जाना चाहिए।



डिमेंशिया और अन्य मस्तिष्क संबंधी बीमारियों से संभावित संबंध

वैज्ञानिक इस बात का अध्ययन कर रहे हैं कि क्या वायु प्रदूषण के लंबे समय तक संपर्क में रहने से डिमेंशिया जैसी मस्तिष्क संबंधी बीमारियों का जोखिम बढ़ सकता है। कुछ बड़े अवलोकन-आधारित अध्ययनों में सूक्ष्म कणों के संपर्क और डिमेंशिया के अधिक जोखिम के बीच संबंध पाया गया है। शोधकर्ता वायु प्रदूषण और स्ट्रोक सहित तंत्रिका तंत्र को प्रभावित करने वाली अन्य बीमारियों के बीच संभावित संबंधों की भी जाँच कर रहे हैं।

इन निष्कर्षों को समझने के लिए कई जैविक प्रक्रियाओं पर विचार किया जा रहा है। शरीर में सूजन, ऑक्सीडेटिव तनाव, रक्त वाहिकाओं को नुकसान और प्रतिरक्षा प्रणाली के सामान्य कामकाज में गड़बड़ी लंबे समय में मस्तिष्क के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती है। फिर भी, मस्तिष्क संबंधी बीमारियों के कई कारण होते हैं, जिनमें बढ़ती उम्र, आनुवंशिक कारक, जीवनशैली और अन्य स्वास्थ्य समस्याएँ शामिल हैं। इसलिए वायु प्रदूषण को इन बीमारियों का एकमात्र कारण मानने के बजाय एक संभावित और कम किए जा सकने वाले पर्यावरणीय जोखिम कारक के रूप में समझना चाहिए।

बुजुर्गों के लिए अधिक चिंता

बढ़ती उम्र के साथ शरीर की सूजन और अन्य पर्यावरणीय तनावों से निपटने की क्षमता कम हो सकती है। इस कारण बुजुर्ग लोग प्रदूषित हवा के प्रभावों के प्रति अधिक संवेदनशील हो सकते हैं। हृदय, फेफड़ों या रक्त वाहिकाओं से संबंधित पहले से मौजूद बीमारियों वाले लोगों के लिए भी जोखिम बढ़ सकता है।

वायु प्रदूषण को हृदय और श्वसन संबंधी बीमारियों का एक महत्त्वपूर्ण कारक माना जाता है। चूँकि मस्तिष्क को स्वस्थ रक्त आपूर्ति की आवश्यकता होती है, इसलिए रक्त वाहिकाओं पर प्रदूषण के प्रभाव मस्तिष्क के स्वास्थ्य के लिए भी महत्त्वपूर्ण हो सकते हैं। इसीलिए प्रदूषण के गंभीर दौर में बुजुर्गों की सुरक्षा करना सार्वजनिक स्वास्थ्य का एक आवश्यक हिस्सा है।

हम अपनी सुरक्षा के लिए क्या कर सकते हैं?

हालाँकि कोई भी व्यक्ति अकेले अपने प्रयासों से वायु प्रदूषण को समाप्त नहीं कर सकता, फिर भी कुछ व्यावहारिक कदमों से प्रदूषण के संपर्क को कम किया जा सकता है।

1. वायु गुणवत्ता की जानकारी रखें: वायु गुणवत्ता सूचकांक (AQI) पर ध्यान दें। जब प्रदूषण का स्तर अधिक हो, विशेषकर धुंध और धुएँ वाले दिनों में, तो बाहर अधिक मेहनत वाले व्यायाम करने से बचें।

2. आवश्यकता पड़ने पर उपयुक्त मास्क पहनें: चेहरे पर अच्छी तरह फिट होने वाला N95 या इसके समकक्ष रेस्पिरेटर सही तरीके से इस्तेमाल करने पर सूक्ष्म कणों को साँस के साथ अंदर जाने से कम कर सकता है। सामान्य कपड़े के मास्क PM2.5 से विश्वसनीय सुरक्षा नहीं देते।

3. घर के अंदर हवा को स्वच्छ रखें: घर के अंदर धूम्रपान न करें। अगरबत्ती या अन्य सामग्री जलाने को यथासंभव कम करें। जब बाहर की हवा अपेक्षाकृत साफ हो, तब घर में उचित वेंटिलेशन रखें। सामर्थ्य होने पर उपयुक्त आकार का एयर प्यूरीफायर भी इस्तेमाल किया जा सकता है।

4. बच्चों और बुजुर्गों की सुरक्षा करें: जब प्रदूषण का स्तर बहुत अधिक हो, तो इन संवेदनशील समूहों के लोगों को लंबे समय तक बाहर रहने और अधिक शारीरिक परिश्रम करने से बचाना चाहिए।

5. प्रदूषण के स्रोतों को कम करें: जहाँ संभव हो, स्वच्छ परिवहन साधनों का उपयोग करें। वाहनों का समय पर रखरखाव करवाएँ, पत्तियाँ और कचरा न जलाएँ, निर्माण स्थलों पर धूल को नियंत्रित करें, औद्योगिक उत्सर्जन कम करें और स्वच्छ ऊर्जा को प्रोत्साहित करें।

6. जन-जागरूकता बढ़ाएँ: स्कूलों, कॉलेजों, स्वास्थ्य संस्थानों और सामाजिक संगठनों को लोगों को यह समझाना चाहिए कि प्रदूषित हवा केवल साँस लेने की समस्या नहीं है। यह लंबे समय में मस्तिष्क और हृदय के स्वास्थ्य को भी प्रभावित कर सकती है।

सामूहिक जिम्मेदारी

वायु प्रदूषण की समस्या केवल व्यक्तिगत सावधानियों से हल नहीं हो सकती। इसके लिए सरकारों, उद्योगों, स्थानीय प्रशासन, सामाजिक संगठनों और नागरिकों के संयुक्त प्रयासों की आवश्यकता है। बेहतर सार्वजनिक परिवहन, वाहनों और उद्योगों के उत्सर्जन पर सख्त नियंत्रण, स्वच्छ औद्योगिक तकनीकें, प्रभावी कचरा प्रबंधन, हरित शहरी नियोजन और वायु गुणवत्ता की नियमित निगरानी आवश्यक हैं।

इसके साथ ही अधिक वैज्ञानिक शोध की जरूरत है, ताकि यह स्पष्ट हो सके कि कौन-से प्रदूषक किस प्रकार के प्रभाव पैदा करते हैं, अलग-अलग उम्र में उनका संपर्क मस्तिष्क को कैसे प्रभावित करता है और कौन-से उपाय सबसे अधिक सुरक्षा प्रदान करते हैं। वैज्ञानिक जानकारी में कुछ अनिश्चितताओं का होना स्वच्छ हवा के लिए आवश्यक कदम उठाने में देरी का कारण नहीं बनना चाहिए।

निष्कर्ष

स्वच्छ हवा स्वस्थ जीवन की बुनियाद है। वायु प्रदूषण के दुष्प्रभाव केवल फेफड़ों तक सीमित नहीं हैं। बढ़ते वैज्ञानिक प्रमाण संकेत देते हैं कि मस्तिष्क और तंत्रिका तंत्र भी इससे प्रभावित हो सकते हैं। स्मरण शक्ति, एकाग्रता, सीखने की क्षमता और बढ़ती उम्र में मस्तिष्क के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले संभावित प्रभावों के कारण वायु गुणवत्ता परिवारों, शिक्षकों और नीति-निर्माताओं के लिए एक महत्त्वपूर्ण विषय है।

हमें वायु प्रदूषण को केवल खाँसी या साँस लेने में परेशानी पैदा करने वाली समस्या के रूप में नहीं देखना चाहिए। स्वच्छ हवा की रक्षा करना मस्तिष्क के स्वास्थ्य, बच्चों के विकास, बुजुर्गों की तंदुरुस्ती और आने वाली पीढ़ियों के भविष्य में निवेश करने के समान है। प्रदूषण कम करने के लिए किया गया प्रत्येक प्रयास हमें एक स्वस्थ समाज के करीब ले जाता है।

जानलेवा रसायन विज्ञान



डॉ. विजय गर्ग

रसायन विज्ञान विज्ञान की सबसे महत्वपूर्ण शाखाओं में से एक है।

दवाइयों, उर्वरकों, खाद्य संरक्षण, स्वच्छ ईंधन, उन्नत पदार्थों और आधुनिक तकनीकों के माध्यम से इसने मानव प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। लेकिन जो विज्ञान हमारे जीवन को बेहतर बनाता है, वही खतरे का कारण भी बन सकता है, जब रसायनों का दुरुपयोग किया जाता है, उन्हें लापरवाही से संभाला जाता है या पर्यावरण में छोड़ दिया जाता है। रसायन विज्ञान का यह अंधकारमय पक्ष हमें याद दिलाता है कि वैज्ञानिक प्रगति के साथ जिम्मेदारी भी आवश्यक है।

रसायनों की दोधारी तलवार

हमारे आसपास की हर चीज़—हवा, पानी, भोजन और हमारा अपना शरीर—रसायन विज्ञान से जुड़ी है। रसायन अपने आप में हानिकारक नहीं होते। उनका प्रभाव उनके गुणों, सांद्रता, संपर्क की मात्रा और उपयोग के तरीके पर निर्भर करता है। जीवन के लिए आवश्यक पदार्थ भी अधिक मात्रा में खतरनाक हो सकते हैं, जबकि कुछ विषैले पदार्थ कम मात्रा में भी गंभीर नुकसान पहुँचा सकते हैं।

वास्तविक समस्या तब उत्पन्न होती है, जब रासायनिक ज्ञान का लापरवाही से उपयोग किया जाता है, सुरक्षा नियमों की अनदेखी होती है या मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण की सुरक्षा से अधिक व्यावसायिक लाभ को महत्व दिया जाता है।

कीटनाशक: फसलों की रक्षा या जीवन के लिए खतरा?

आधुनिक कृषि में कीटों, खरपतवारों और पौधों की बीमारियों को नियंत्रित करने के लिए रासायनिक कीटनाशकों का व्यापक उपयोग किया जाता है। ये फसलों की रक्षा करने और खाद्य पदार्थों की बर्बादी कम करने में मदद करते हैं। लेकिन कीटनाशकों का अत्यधिक या अनुचित उपयोग मिट्टी, पानी और भोजन को दूषित कर सकता है।

खेतों में काम करने वाले श्रमिकों को त्वचा के संपर्क, साँस के माध्यम से या गलती से कीटनाशक निगलने के कारण विषाक्तता का सामना करना पड़ सकता है। कुछ कीटनाशक लाभकारी कीटों, पक्षियों और जलीय जीवों को भी नुकसान पहुँचाते हैं। कुछ रसायनों के लंबे समय तक संपर्क में रहने से गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं का खतरा बढ़ सकता है।

इन खतरों को कम करने के लिए एकीकृत कीट प्रबंधन, सुरक्षा उपकरणों का उपयोग, रसायनों का उचित भंडारण और निर्धारित निर्देशों का पालन आवश्यक है। किसानों को वैज्ञानिक जानकारी दी जानी चाहिए तथा प्रतिबंधित या गैर-स्वीकृत रसायनों के उपयोग से बचना चाहिए।

औद्योगिक रसायन और पर्यावरण प्रदूषण

कारखाने आधुनिक जीवन के लिए आवश्यक वस्तुओं का उत्पादन करते हैं, लेकिन यदि औद्योगिक कचरे का उचित उपचार नहीं किया जाए, तो खतरनाक पदार्थ पर्यावरण में फैल सकते हैं। सीसा, पारा और कैडमियम जैसी भारी धातुएँ मिट्टी और पानी को दूषित कर सकती हैं। ये प्रदूषक जीवों के शरीर में जमा होकर खाद्य श्रृंखला में प्रवेश कर सकते हैं।

औद्योगिक दुर्घटनाएँ और रासायनिक गैसों का रिसाव पूरे समुदाय के स्वास्थ्य को खतरे में डाल सकता है। दिसंबर 1984 में हुई भोपाल गैस त्रासदी औद्योगिक सुरक्षा और आपातकालीन प्रबंधन में कमियों के विनाशकारी परिणामों की गंभीर याद दिलाती है।

ऐसी घटनाओं को रोकने के लिए कड़ी निगरानी, रसायनों का सुरक्षित भंडारण, औद्योगिक कचरे का उचित उपचार और पारदर्शी रिपोर्टिंग आवश्यक हैं।

दैनिक जीवन में छिपे रासायनिक खतरे

रासायनिक खतरे केवल कारखानों और खेतों तक सीमित नहीं हैं। घरेलू सफाई उत्पाद, विलायक, सौंदर्य प्रसाधन और अन्य उपभोक्ता वस्तुएँ भी गलत उपयोग किए जाने पर नुकसान पहुँचा सकती हैं। उदाहरण के लिए, कुछ सफाई उत्पादों को आपस में मिलाने से जहरीली गैसें निकल सकती हैं। इसलिए उत्पादों का उपयोग उनके लेबल पर दिए गए निर्देशों के अनुसार करना चाहिए तथा उन्हें बच्चों की पहुँच से दूर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए।

खाद्य पदार्थों में मिलावट भी एक गंभीर चिंता है। कुछ प्रतिबंधित रंगों, औद्योगिक रसायनों और दूषित सामग्रियों का उपयोग मानव स्वास्थ्य के लिए खतरा बन सकता है। उपभोक्ताओं की सुरक्षा के लिए खाद्य पदार्थों की कड़ी जाँच, प्रयोगशाला परीक्षण और जन-जागरूकता आवश्यक हैं।

वायु प्रदूषण भी खतरनाक रासायनिक प्रक्रियाओं से जुड़ा है। नाइट्रोजन ऑक्साइड, वाष्पशील कार्बनिक यौगिक और सूर्य का प्रकाश मिलकर धरातल के निकट ओजोन बनने में योगदान दे सकते हैं। सूक्ष्म कण और अन्य प्रदूषक श्वसन तंत्र तथा हृदय संबंधी स्वास्थ्य को नुकसान पहुँचा सकते हैं।

मानव कल्याण के लिए रसायन विज्ञान

रसायन विज्ञान को ही दोष देना उचित नहीं होगा। इस विज्ञान ने जीवनरक्षक दवाइयों, सुरक्षित पेयजल उपचार, स्वच्छ औद्योगिक प्रक्रियाओं और पर्यावरण-अनुकूल सामग्रियों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वास्तविक चुनौती इसके लाभकारी उपयोगों और हानिकारक गतिविधियों के बीच अंतर करने की है।

वैज्ञानिकों को किसी रसायन के व्यापक उपयोग से पहले उसकी विषाक्तता का मूल्यांकन करना चाहिए। उद्योगों को सुरक्षा मानकों का पालन करना चाहिए, सरकारों को पर्यावरण संबंधी कानूनों को प्रभावी ढंग से लागू करना चाहिए और शिक्षण संस्थानों को कम उम्र से ही रासायनिक सुरक्षा के प्रति जागरूकता विकसित करनी चाहिए।

हरित रसायन विज्ञान (ग्रीन केमिस्ट्री) एक आशाजनक दृष्टिकोण है। इसमें ऐसे उत्पादों और प्रक्रियाओं को विकसित करने पर जोर दिया जाता है, जिनसे खतरनाक पदार्थों का उपयोग कम हो, कचरा न्यूनतम बने और ऊर्जा की बचत हो। प्रदूषण को उत्पन्न होने से पहले रोकना अक्सर उसके बाद उससे निपटने की तुलना में अधिक सुरक्षित और कम खर्चीला होता है।

निष्कर्ष

रसायन विज्ञान न तो अपने आप में नायक है और न ही खलनायक; यह एक शक्तिशाली वैज्ञानिक साधन है। इसका प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि मनुष्य इसे कैसे समझते हैं, उपयोग करते हैं और नियंत्रित करते हैं। जब वैज्ञानिक ज्ञान के साथ लालच, लापरवाही और गैर-जिम्मेदारी जुड़ जाती है, तो रसायन विज्ञान जानलेवा बन सकता है। लेकिन जब इसका उपयोग नैतिकता, वैज्ञानिक प्रमाणों और जनकल्याण को ध्यान में रखकर किया जाता है, तो यह प्रगति का माध्यम बनता है।

भविष्य के लिए ऐसे समाज की आवश्यकता है, जहाँ नवाचार और सुरक्षा साथ-साथ आगे बढ़ें। रसायन विज्ञान की वास्तविक उपलब्धि केवल शक्तिशाली पदार्थों का निर्माण करना नहीं, बल्कि यह सुनिश्चित करना है कि वे मानव जीवन को बेहतर बनाएँ और मनुष्यों, वन्यजीवों तथा पृथ्वी के लिए खतरा न बनें।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल। शैक्षिक स्तंभकार। प्रख्यात वैज्ञानिक

क्या 100 कदम चलने पर भी थकान होती है? साँस फूलती है या पैरों में दर्द होता है?

प्रस्तुतकर्ता: पिंकी कुंडू, सामाजिक परामर्शदाता

सावधान: शरीर की थकान को नज़रअंदाज़ न करें!

कई बार थोड़ी दूर चलने या सीढ़ियाँ चढ़ने पर भी थकान महसूस होती है। इसे केवल स्टैमिना की कमी न समझें। इसके पीछे शारीरिक क्षमता की कमी, खून की कमी (एनीमिया), हृदय या फेफड़ों से जुड़ी समस्याएँ, थायरॉइड की गड़बड़ी अथवा अन्य कारण हो सकते हैं। यदि यह समस्या नई है या बढ़ रही है, तो यह शरीर का संकेत है।

शरीर की ऊर्जा और सहनशक्ति बनाए रखने के लिए आहार में शामिल करें ये 5 पौष्टिक खाद्य पदार्थ!

1. सूखे मेवे (ड्राई फ्रूट्स) - बादाम, अखरोट: इनमें प्रोटीन, स्वस्थ वसा, फाइबर, विटामिन और खनिज पाए जाते हैं। ये शरीर को ऊर्जा देने और संतुलित पोषण प्रदान करने में सहायक होते हैं।

2. ब्राउन राइस (भूरा चावल): ब्राउन राइस में सफेद चावल की तुलना में अधिक फाइबर होता है। इसमें मौजूद कार्बोहाइड्रेट शरीर को धीरे-धीरे और लंबे समय तक ऊर्जा प्रदान करते हैं। इसे संतुलित आहार का हिस्सा बनाया जा सकता है।

3. केला: केले में कार्बोहाइड्रेट और पोटैशियम पाया जाता है। यह शरीर को तुरंत ऊर्जा देने और मांसपेशियों के सामान्य कार्य में सहायता करता है, जिससे पैरों में ऐंठन और थकान कम होती है।

4. हरी पत्तेदार सब्जियाँ - पालक, मेथी: इनमें फोलेट, विटामिन K, फाइबर तथा आयरन जैसे पोषक तत्त्व पाए जाते हैं। आयरन खून की कमी को दूर करने में मदद करता है, जो थकान का एक बड़ा कारण है। संतुलित आहार में इनका नियमित सेवन स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है।

5. सेब: सेब में फाइबर, प्राकृतिक कार्बोहाइड्रेट और विभिन्न लाभकारी वनस्पति यौगिक (एंटीऑक्सीडेंट) पाए जाते हैं। यह संतुलित आहार का अच्छा हिस्सा है और पाचन स्वास्थ्य बनाए रखने में मदद करता है।

शरीर की ऊर्जा बनाए रखने के लिए 5 ज़रूरी आदतें

1. संतुलित एवं पौष्टिक भोजन करें: समय पर खाना, जंक फूड से बचें।

2. प्रतिदिन पर्याप्त पानी पिएँ: डिहाइड्रेशन भी थकान का कारण बनता है।

3. नियमित और पर्याप्त नींद लें: 7-8 घंटे की गहरी नींद शरीर को रिपेयर करती है।

4. अपनी क्षमता के अनुसार नियमित शारीरिक गतिविधि करें: रोज 30 मिनट तेज चलना, हल्का व्यायाम स्टैमिना बढ़ाता है।

5. समय-समय पर जाँच कराएँ: मधुमेह, रक्तचाप, हीमोग्लोबिन, थायरॉइड और अन्य स्वास्थ्य समस्याओं की जाँच जरूरी है।

महत्वपूर्ण स्वास्थ्य सूचना - इसे जरूर पढ़ें: यदि 100 कदम चलने पर भी साँस फूलती है, तो इसे केवल स्टैमिना की कमी न समझें। विशेषकर यदि यह समस्या नई है या बढ़ रही है, तो जल्द चिकित्सकीय जाँच कराएँ।

आपातकालीन स्थिति: अचानक साँस फूलने, सीने में दर्द, बेहोशी या होंठ नीले पड़ने पर तुरंत आपातकालीन चिकित्सा सहायता लें - 112 पर कॉल करें या नजदीकी अस्पताल जाएँ।

स्वस्थ जीवन अपनाएँ, पौष्टिक आहार चुनें और अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहें!

यह जानकारी केवल जन-जागरूकता हेतु है। किसी भी आहार परिवर्तन या लक्षण के लिए अपने चिकित्सक से परामर्श अवश्य लें।





आदिकवि से महर्षि बनने की यात्रा और रामायण का अमर संदेश

परिवहन विशेष न्यूज

खूंटी। भगत सिंह चौक में पद्म सरिता आध्यात्मिक दर्शन संघ के बैनर तले सोमवार को महर्षि बाल्मीकि की जयंती मनाई गई। कार्यक्रम में पद्म सरिता आध्यात्मिक दर्शन संघ के अध्यक्ष डॉ दीपक कुमार घोष ने कहा कि आश्विन मास की पूर्णिमा को प्रतिवर्ष महर्षि बाल्मीकि जयंती मनाई जाती है। यह केवल एक जयंती नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति में आत्म-परिवर्तन और अध्यात्म की सबसे बड़ी प्रेरणा का पर्व है। मुरहू के सत्संगी डॉ डीएन तिवारी ने कहा कि

शास्त्रों के अनुसार महर्षि बाल्मीकि पूर्व में रत्नाकर नाम के डाकू थे। एक बार सप्तऋषियों से भेंट होने पर ऋषियों ने पूछा कि तुम जो पाप कर रहे हो, क्या तुम्हारे परिवार वाले उस पाप में भागीदार बनेंगे? परिवार ने मना कर दिया। इसी क्षण रत्नाकर के जीवन में परिवर्तन आ गया। ऋषियों के कहने पर उन्होंने 'मरा-मरा' जपना शुरू किया, जो तपस्या के प्रभाव से 'राम-राम' बन गया। वर्षों तक एक ही स्थान पर तपस्या करने से उनके शरीर पर दीमकों ने बामी (बाल्मीकि) बना दी, तभी से वे बाल्मीकि कहलाए। अखिल भारतीय सांस्कृतिक विकास महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष तपन घोष ने कहा कि महर्षि बाल्मीकि को संस्कृत साहित्य का पहला कवि - आदिकवि कहा जाता है।



उन्होंने ही भगवान राम के जीवन पर आधारित आदिग्रंथ रामायण की रचना की, जिसमें 24,000 श्लोक और 7 कांड हैं। रामायण केवल राजा राम की कथा नहीं, बल्कि मानव जीवन के चार पुरुषार्थ - धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का जीवंत दस्तावेज है। युवा भक्त ध्रुवेन्द्र भास्कर ने कहा कि रामायण बताती है कि कितनी भी कठिन परिस्थिति हो, धर्म का मार्ग नहीं छोड़ना चाहिए। राम ने राजपाट छोड़कर धर्म का पालन किया।

गुरु अनुप ने कहा कि सीता और लव-कुश को महर्षि बाल्मीकि ने ही अपने आश्रम में शरण दी और शिक्षा दी, यह दर्शाता है कि संत का आश्रम सभी के लिए समान होता है।

माता सोनमेर धाम : खूंटी का अनोखा दुर्गा मंदिर जहाँ उमड़ा मेले मे जनसैलाब

डॉ दीपक कुमार घोष

खूंटी। झारखंड के खूंटी जिले में माँ दुर्गा का एक ऐसा धाम है, जो पूरे देश में अपनी अनोखी परम्परा के लिए प्रसिद्ध है - सोनमेर मंदिर। यह जिला मुख्यालय से 10 किमी दूर कर्रा प्रखंड के सोनमेर टोंगरी पर 51 फीट की ऊंचाई पर स्थित है।इस मंदिर की अनोखी बातें जो इसे सबसे अलग बनाती हैं: यहाँ कोई ब्राह्मण पंडित पूजा नहीं कराता, बल्कि गाँव के *पाहन (आदिवासी पुजारी) ही माँ की पूजा कराते हैं। पाहनों का मानना है कि माँ को अपनी मातृभाषा में पुकारने से वह अधिक निकटता से सुनती हैं। यहाँ दुर्गा पूजा के पाँच दिन बाद आने वाली आश्विन पूर्णिमा को भव्य मेले का आयोजन किया जाता है और भैंसा, बकरा और मुर्गे की बलि दी जाती है। इस बार भी मेले में खचाखच भीड़ रही, दिन भर श्रद्धालुओं का तांता लगा रहा। पंडित धर्मेंद्र नाथ तिवारी ने कहा कि मान्यता है कि जो भी भक्त यहाँ सच्चे मन से मुराद मांगता है, सोनमेर माता उसकी मनोकामना पूरी करती हैं। यही कारण है कि दशहरा के बाद लगने वाले सोनमेर मेले में खूंटी ही नहीं, रांची, सिमडेगा, गुमला सहित कई जिलों और राज्यों से हजारों श्रद्धालु पहुँचते हैं।





धन और रिश्तों का दैनिक अंक ज्योतिष भविष्यफल

जानिए दिन की ऊर्जा • संभालिए धन • मजबूत बनाइए रिश्ते

27 अक्टूबर 2026 | दिन का अंक: 2 — सहयोग, संवेदनशीलता, साझेदारी, धैर्य और संतुलन

मूलांक 1

धन व करियर: दिन का अंक 2 आपकी स्वतंत्र नेतृत्व ऊर्जा को नरम करता है और सहयोग बढ़ाता है। अंतिम निर्णय लेने से पहले दूसरे दृष्टिकोण को सुनने पर पेशेवर या आर्थिक निर्णय बेहतर हो सकता है।
रिश्ते: आज अधिकार से अधिक धैर्य प्रभावी रहेगा। पहल करें, लेकिन सामने वाले को अपनी भावनाएं और चिंताएं व्यक्त करने की पर्याप्त जगह दें।
सावधानी: अधीरता, अहंकार में प्रतिक्रिया और केवल इसलिए सलाह नकारने से बचें क्योंकि विचार आपका नहीं था।
दिन बेहतर बनाएं: सुनते हुए नेतृत्व करें और एक उपयोगी साझेदारी को व्यावहारिक प्रगति में बदलें।

मूलांक 2

धन व करियर: आपके मूलांक 2 और दिन के अंक 2 की ऊर्जा एक-दूसरे को बहुत मजबूत करती है। अंतर्ज्ञान, संवेदनशीलता और साझेदारी बढ़ेगी। बातचीत और संयुक्त योजना अच्छी रह सकती है, लेकिन धन लगाने से पहले तथ्य जांचें।
रिश्ते: भावनात्मक जुड़ाव प्रमुख रहेगा। अपनी जरूरत स्पष्ट कहने पर नरम संवाद विश्वास बढ़ा सकता है; सामने वाले से सब कुछ बिना बताए समझ लेने की अपेक्षा न करें।
सावधानी: अधिक सोचने, मूड में खर्च और आश्वासन पर अत्यधिक निर्भरता से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: अंतर्ज्ञान पर भरोसा करें, स्पष्ट संवाद रखें और एक स्वस्थ सीमा बनाए रखें।

मूलांक 3

धन व करियर: दिन 2 आपकी अभिव्यक्ति में सहयोग और भावनात्मक समझ जोड़ता है। प्रस्तुति, क्लाइंट बातचीत या रचनात्मक काम में तुरंत प्रभावित करने के बजाय प्रतिक्रिया लेकर सुधार करना लाभ देगा।
रिश्ते: आज शब्दों का भावनात्मक प्रभाव अधिक होगा। प्रशंसा लाभ देगी, लेकिन गंभीर भावना से बचने के लिए मजाक का सहारा न लें।
सावधानी: लापरवाह वादे, सामाजिक खर्च और सामने वाले का मूड समझे बिना बोलने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: अपने संवाद से किसी का उत्साह बढ़ाएं और मिलकर एक उपयोगी विचार बेहतर करें।

मूलांक 4

धन व करियर: दिन 2 आपकी व्यावहारिक योजनाओं में धैर्यपूर्ण टीमवर्क जोड़ता है। महत्वपूर्ण कदम अंतिम करने से पहले बजट, समझौते और जिम्मेदारियां किसी भरोसेमंद व्यक्ति के साथ जांचें।
रिश्ते: आपकी विश्वसनीयता महत्वपूर्ण है, लेकिन आज गर्मजोशी भी उतनी ही जरूरी है। केवल कर्तव्य से नहीं, शब्दों से भी अपनी भावना व्यक्त करें।
सावधानी: कठोरता, मन में नाराजगी और सब कुछ अकेले करने के कारण मदद लेने से इनकार करने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: उपयोगी सहयोग स्वीकार करें और अपने मानकों को कमजोर किए बिना एक व्यावहारिक समझौता करें।

मूलांक 5

धन व करियर: दिन 2 आपकी तेज ऊर्जा को थोड़ा धीमा करके बातचीत और विवरण पर ध्यान देने को कहता है। नेटवर्किंग मदद कर सकती है, लेकिन योजना बदलने या खर्च से पहले शर्तें जांचें।
रिश्ते: स्वतंत्रता महत्वपूर्ण रहेगी, लेकिन संवेदनशीलता भी जरूरी है। लोगों को अपनी योजना बताते रहें ताकि सहजता असुरक्षा या अस्पष्ट संकेत न बनाए।
सावधानी: अचानक खरीदारी, असंगत संवाद और केवल उत्साह में प्रतिबद्धता से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: 'हाँ' कहने से पहले रुकें और अपनी योजना स्पष्ट बताएं।

मूलांक 6

धन व करियर: दिन 2 आपकी देखभाल और जिम्मेदारी की प्रकृति के साथ अच्छा मेल खाता है। साझेदारी, पारिवारिक धन और क्लाइंट संबंध धैर्य से बेहतर हो सकते हैं, लेकिन उदारता की सीमा रखें।
रिश्ते: अपनापन और निकटता को समर्थन मिलेगा। शांत बातचीत भावनात्मक दूरी कम कर सकती है; तुरंत उत्तर के लिए दबाव न डालें।
सावधानी: जरूरत से ज्यादा देने, भावनात्मक खर्च और हर काम के बदले प्रशंसा की अपेक्षा से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: देखभाल करें, लेकिन हर व्यक्ति की खुशी की जिम्मेदारी स्वयं न लें।

मूलांक 7

धन व करियर: दिन 2 आपकी विश्लेषणात्मक प्रकृति में संवेदनशीलता और सहयोग जोड़ता है। महत्वपूर्ण आर्थिक या पेशेवर निर्णय से पहले भरोसेमंद व्यक्ति की राय नया दृष्टिकोण दे सकती है।
रिश्ते: आप चुप रहना पसंद कर सकते हैं, लेकिन दूरी को गलत समझा जा सकता है। सामने वाले से अनुमान लगाने की अपेक्षा करने के बजाय एक जरूरी भावना साझा करें।
सावधानी: संदेह, अत्यधिक विश्लेषण और पूर्ण निश्चितता की तलाश में संवाद टालने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: अंतर्ज्ञान की पुष्टि करें और एक शांत, ईमानदार बातचीत करें।

मूलांक 8

धन व करियर: दिन 2 आपकी मजबूत व्यवसायिक ऊर्जा में कूटनीति जोड़ता है। बातचीत और साझेदारी में दबाव के बजाय न्यायपूर्ण रवैया और सुनना बेहतर परिणाम दे सकता है।
रिश्ते: आज नियंत्रण विरोध पैदा कर सकता है। समाधान, नियम या आर्थिक राय देने से पहले सामने वाले की चिंता सुनें।
सावधानी: शक्ति संघर्ष, कठोर शब्द और धन या अधिकार से स्थिति नियंत्रित करने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: शक्ति के साथ संवेदनशीलता रखें और उचित मध्य मार्ग खोजें।

मूलांक 9

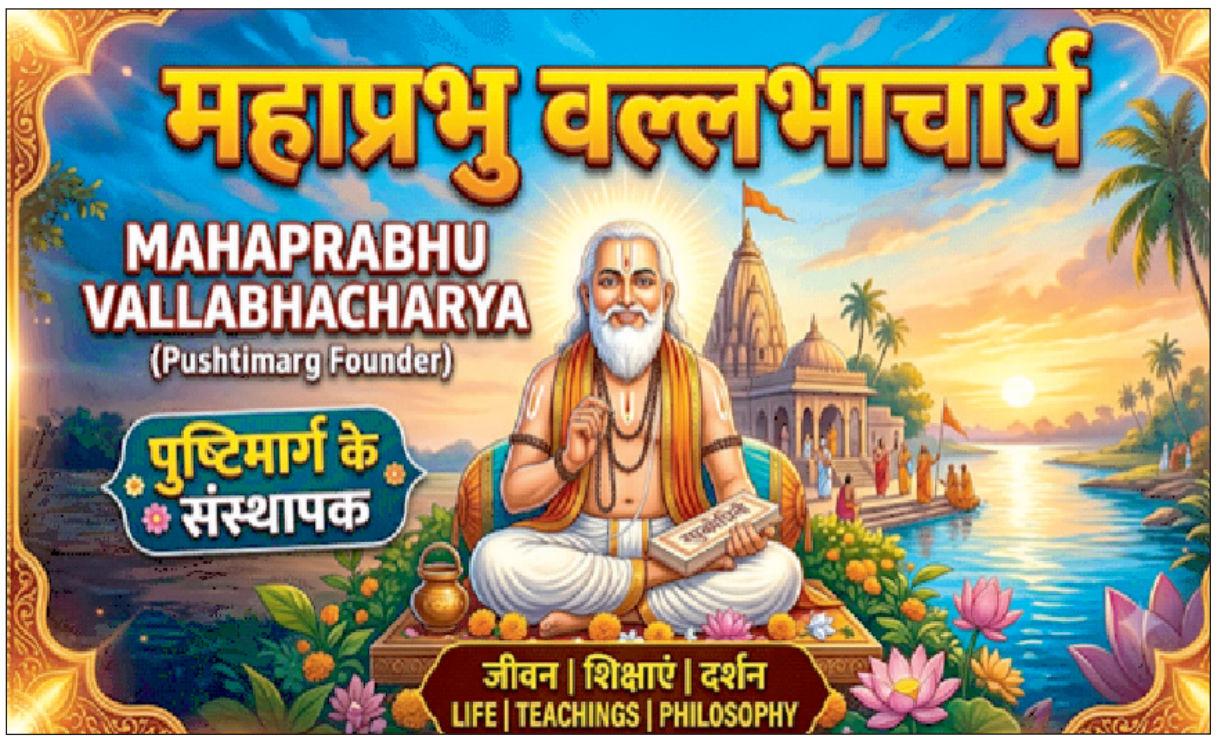
धन व करियर: दिन 2 आपकी तीव्र ऊर्जा को नरम करता है और सहयोग के साथ अधूरे विषय पूरे करने में मदद करता है। बड़ा नया कदम लेने से पहले गलतफहमी सुलझाएं, संसाधन व्यवस्थित करें या लंबित विषय पूरा करें।
रिश्ते: करुणा बढ़ेगी और क्षमा आसान हो सकती है। किसी अपने का साथ दें, लेकिन उसका पूरा भावनात्मक बोझ स्वयं न उठाएं।
सावधानी: अपराधबोध में खर्च, भावनात्मक प्रतिक्रिया और पुराने घाव अनावश्यक रूप से खोलने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: एक लंबित विषय शांति से पूरा करें और अपनी भावनात्मक सीमाएं सुरक्षित रखें।

कॉल / व्हाट्सऐप: 8750075550 | वेबसाइट: www.vediccodes.in | @vediccodes

Vediccodes - Your vibrations... our solutions

महाप्रभु वल्लभाचार्य - पुष्टिमार्ग के संस्थापक





भारत के उन महान संतों पर आधारित लेखों की श्रृंखला में आपका स्वागत है, जिन्होंने अपने विचारों से वैदिक दर्शन को समृद्ध किया। 'स्वर कथा' द्वारा प्रस्तुत पिछले लेख में हमने श्रनिम्बार्काचार्यः द्वैत-अद्वैत ज्ञान के ऋषिश्र के बारे में चर्चा की थी। इस लेख में हम भारत के महानतम ऋषियों में से एक, श्रमहाप्रभु वल्लभाचार्यः शाश्वत भक्ति के स्वरश्र के जीवन और उनके समय के बारे में चर्चा करेंगे।

महाप्रभु वल्लभाचार्य भक्तिकालीन सगुण धारा की कृष्णभक्ति शाखा के आधार स्तंभ एवं पुष्टिमार्ग के प्रणेता माने जाते हैं। वल्लभाचार्य जी ने ही 'शंकराचार्य' के 'अद्वैतवाद' की जगह 'शुद्धाद्वैतवाद' का प्रतिपादन किया था। इस दर्शन पर आधारित जिस धार्मिक संप्रदाय या भक्ति मार्ग का प्रचलन हुआ वह वल्लभसम्प्रदाय या पुष्टिमार्ग कहलाया। इन्हें वल्लभ, महाप्रभु, महाप्रभुजी और विष्णुस्वामी या वल्लभ आचार्य के नाम से भी जाना जाता है, वल्लभ नाम का शाब्दिक अर्थ है प्रिय या प्रेमी, और यह विष्णु और कृष्ण का एक नाम है। वह एक हिंदू भारतीय संत और दार्शनिक भी हैं जिन्होंने ब्रज में वैष्णववाद के कृष्ण-केंद्रित पुष्टिमार्ग थी, और शुद्ध अद्वैत (शुद्ध गैर-द्वैतवाद) का वेदांत दर्शन संप्रदाय की स्थापना की। आप वैश्वानर अग्नि स्वरूप है। आप वेदशास्त्र में पारंगत थे। वर्तमान में इसे वल्लभसम्प्रदाय या पुष्टिमार्ग सम्प्रदाय के नाम से जाना जाता है।

वल्लभाचार्य का जन्म विक्रम संवत 1535, वैशाख कृष्ण एकादशी को दक्षिण भारत के कांकरवाड ग्रामवासी तैलंग ब्राह्मण श्रीलक्ष्मणभट्टजी की पत्नी इलम्मागारू के गर्भ से हुआ। यह स्थान वर्तमान छत्तीसगढ़ राज्य के रायपुर के निकट चम्पारण्य है।इनका विवाह श्री देवभट्टजी की कन्या श्री महालक्ष्मी से हुआ और यथासमय दो पुत्र हुए- श्री गोपीनाथ व श्रीविट्ठलनाथ हुए।

वल्लभाचार्य जी ने एक बच्चे के रूप में ही वेदों, स्मृतियो, वेदांगो, उपवेदों, उपनिषदों, पुराणों और षट दर्शनो, वेदान्त, आगमों, वैष्णव तंत्रो, बाह्य जैन बौद्ध चरवाकआदि विचारो, काव्य साहित्य एवं तदुक्त कलाए का अध्ययन किया आपको लोग बालसरस्वती वाक्यपति बुलाने लगे फिर 20 वर्षों में पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में यात्रा की।

आपने तपस्या, सन्यास आर वैराग्य के जीवन को खारिज कर दिया और सुझाव दिया कि भगवान कृष्ण के प्रति प्रेमपूर्ण भक्ति के माध्यम से, कोई भी गृहस्थ मोक्ष, भगवद कृपा, गोलोक में भगवद सेवा और भगवद धाम प्राप्त कर सकता है।

महाप्रभु वल्लभाचार्य के अनुसार तीन ही तत्व हैं ब्रह्म, ब्रह्मांड और आत्मा अर्थात ईश्वर, जगत और जीव। उनके अनुसार ब्रह्म ही एकमात्र सत्य हैं जो सर्वव्यापक और अंतर्यामी है। उनके मतानुसार भगवान के अनुग्रह को जीव का असली पोषण कहा गया है क्योंकि उनकी कृपा से जीवात्मा की हृदय में भक्ति का संचार होता है। पुष्टिमार्ग की मुख्य विशेषता यह है कि उसमें सभी मनुष्य एक समान है। बिना किसी प्रकार के भेदभाव के मनुष्य मात्र को इसका अधिकारी बताया गया है। इस मार्ग की दूसरी सबसे बड़ी विशेषता इसमें प्रेमलक्षणा भक्ति की प्रधानता है।

उन्होंने कई ग्रंथों की रचना की जेसे ब्रह्मसूत्र अनुभाष्य, षोडश ग्रंथ या सोलह 'स्तोत्र' और भागवत महापुराण पर श्री सुबोधिनी जी टीका, पूर्व कांड जैमिनी धर्मसूत्रो पर भाष्य, तत्वार्थदीप निबंध, गायत्री भाष्य, मधुराष्टक आदि लेकिन ये सूची इन्हीं तक सीमित नहीं,।

वल्लभाचार्य के लेखन और कीर्तन रचनाएँ शिशु कृष्ण और यशोदा (बिना शर्त मातृ प्रेम) के साथ उनके बचपन की शरारतों पर ध्यान केंद्रित करती हैं, साथ ही एक युवा कृष्ण की अच्छाई (ईश्वरीय कृपा) की सुरक्षा और राक्षसों और बुराइयों पर उनकी जीत, सभी रूपक और प्रतीकात्मकता के साथ है।

श्रीरूद्रसंप्रदाय के जगद्गुरु श्रीविल्वमंगलाचार्यजी द्वारा आप अष्टादशाक्षर गोपालमन्त्र की दीक्षा दी थी तथा श्रीविल्वमंगलाचार्यजी द्वारा आप वल्लभाचार्य महाप्रभु को श्रीरूद्र वेदव्यास विष्णुस्वामी संप्रदाय का जगद्गुरु आचार्य तिलक साम्राज्याभिषेक किया गया। त्रिदण्ड वैष्णव सन्यास की दीक्षा स्वामी नारायणेन्द्रतीर्थ से प्राप्त हुई। भगवत्प्रेरणावश वे ब्रज में गोकुल पहुंचे और तदनन्तर ब्रजक्षेत्र स्थित गोवर्धन पर्वत पर अपनी गद्दी स्थापित कर शिष्य पूरनमल खत्री के सहयोग से उन्होंने संवत 1576 में श्रीनाथ जी के भव्य मंदिर का निर्माण कराया।

श्री वल्लभाचार्यजी के चैरासी शिष्यों के अलावा अनगिनत भक्त, सेवक और अनुयायी थे। उनके पुत्र श्रीविट्ठलनाथजी (गुसाईंजी) ने बाद में उनके चार प्रमुख शिष्यों - भक्त सूरदास, कृष्णदास, परमानन्ददास और कुम्भनदास, तथा अपने स्वयं के चार शिष्यों - नन्ददास, छीतस्वामी, गोविन्दस्वामी तथा चतुर्भुजदास, जो सभी श्रेष्ठ कवि तथा कीर्तनकार भी थे, का एक समूह स्थापित किया जो "अष्टछाप" कवि के नाम से प्रसिद्ध है।

विक्रम संवत 1587, आषाढ शुक्ल तृतीया (सन 1531) को उन्होंने अलौकिक रीति से इहलीला संवरण कर सदेह प्रयाण किया, जिसे 'आसुरव्यामोह लीला' कहा जाता है।

उनकी विरासत को उनके पुष्टिमार्ग वल्लभ सम्प्रदाय के वंशज आचार्यों और उनके शिष्यो ने अच्छी तरह से संरक्षित किया गया है और विशेष रूप से भारत के मेवाड़ क्षेत्र में नाथद्वारा और द्वारकाधीश मंदिर में उनके प्रत्यक्ष वंशजों के साथ सबसे - महत्वपूर्ण कृष्ण तीर्थस्थल हैं।

महाप्रभु वल्लभाचार्य के सम्मान में भारत सरकार ने सन 1977 में एक रुपये मूल्य का एक डाक टिकट जारी किया था।

आज के लिए बस इतना ही, अगले आर्टिकल में हम भारत के एक और महान ऋषि के जीवन और समय पर बात करेंगे। अगर पढ़ने वालों को सनातन धर्म की फिलॉसफी में दिलचस्पी है, तो वे "स्वर कथा" यूट्यूब चैनल को सब्सक्राइब कर सकते हैं।

सौजन्य: 'स्वर कथा'
अगर आपको भारतीय फिलॉसफी में दिलचस्पी है, तो कृपया नीचे दिए गए लिंक से जुड़ें:
https://www.youtube.com/channel/UCh35lEcxMzvQtab5nY6uwOA
@SwarStories या @SWARKATHAINDIA

महर्षि वाल्मीकि ने रामायण के माध्यम से विश्व को दिखाई सत्य और मर्यादा की राह : डीसी

जिला स्तरीय समारोह में स्वच्छता सेवकों का किया सम्मान, डीसी वर्षा खांगवाल ने कहा—महर्षि वाल्मीकि की शिक्षाएं समाज के लिए प्रेरणापुंज







अंत्योदय की भावना के साथ कार्य कर रही सरकार : कप्तान सिंह

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 26 अक्टूबर

महान ग्रंथ रामायण के रचयिता आदि कवि महर्षि वाल्मीकि जी की जयंती के उपलक्ष्य में सोमवार को सूचना, जनसंपर्क, भाषा तथा संस्कृति विभाग व जिला प्रशासन के संयुक्त तत्वावधान में लघु सचिवालय स्थित सभागार में जिला स्तरीय समारोह का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम में महर्षि वाल्मीकि जी के जीवन, उनके विचारों और सामाजिक समरसता के संदेश को याद किया गया। इस अवसर पर जिला में स्वच्छता के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले स्वच्छता सेवकों को सम्मानित किया गया। एडीसी एवं डीएमसी जगनिवास ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कार्यक्रम की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला।

रामायण ने विश्व को दी नई दिशा, महापुरुषों की शिक्षाएं अपनाएं : डीसी

डीसी वर्षा खांगवाल ने अपने संदेश में कहा कि महर्षि वाल्मीकि जी द्वारा रचित रामायण ने विश्व को नई दिशा प्रदान की है। उनके विचार और शिक्षाएं आज भी मानवता को सत्य, कर्तव्य, नैतिकता और मर्यादा का मार्ग दिखाती हैं। उन्होंने कहा कि महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेकर समाज में सकारात्मक बदलाव लाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि हरियाणा सरकार द्वारा संत-महापुरुषों के विचारों और शिक्षाओं से युवा पीढ़ी को परिचित कराने के उद्देश्य से संत महापुरुष सम्मान एवं विचार प्रसार योजना शुरू की गई है। सरकार की ओर से इस प्रकार के आयोजन सन्त महात्माओं को सच्ची श्रद्धांजलि है। उन्होंने कहा कि शिक्षा और संविधान व्यक्ति को जीवन में आगे बढ़ने तथा अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक होने की प्रेरणा देते हैं। शिक्षा का जीवन में विशेष महत्व है और प्रत्येक व्यक्ति को इसके माध्यम से अपने व्यक्तित्व का विकास करना चाहिए।

डीसी ने कहा कि महर्षि वाल्मीकि जी के आदर्श प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में प्रकाश पुंज की तरह हैं। उनके बताए मार्ग पर चलकर सामाजिक भेदभाव को दूर किया जा सकता है और आपसी भाईचारे को मजबूत बनाया जा सकता है। उन्होंने जिले में स्वच्छता कार्यों में जुटे सफाई कर्मियों के योगदान की सराहना करते हुए कहा कि स्वच्छ वातावरण के निर्माण में उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनके द्वारा किया जा रहा उत्कृष्ट कार्य समाज के लिए प्रेरणास्रोत है।

महर्षि वाल्मीकि ने भगवान राम के आदर्शों से दुनिया को कराया परिचित : कप्तान सिंह

जिला परिषद के चेयरमैन कप्तान सिंह बिरधाना ने अपने संबोधन में कहा कि महर्षि वाल्मीकि जी केवल आदिकवि ही नहीं, बल्कि मानवता, सत्य, समानता और नैतिक मूल्यों के महान प्रतीक हैं। उनके द्वारा रचित रामायण ने संपूर्ण विश्व को भगवान श्रीराम के जीवन, आदर्शों और मर्यादाओं से परिचित कराया। यह महान ग्रंथ युगों-युगों से मानव समाज को सही मार्ग दिखा रहा है। उन्होंने कहा कि महर्षि वाल्मीकि जी का जीवन इस बात का प्रमाण है कि दृढ़ इच्छाशक्ति, आत्मबल और सच्चे संकल्प से जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है। उनकी शिक्षाएं हमें कठिन परिस्थितियों में भी अपने कर्तव्यों के प्रति समर्पित रहने और सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती हैं।

जिला परिषद के चेयरमैन कप्तान सिंह बिरधाना ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी अंत्योदय की भावना के साथ कार्य कर रहे हैं। वहीं, हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में प्रदेश सरकार विकास योजनाओं का लाभ समाज की अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक पहुंचाने के लिए प्रयासरत है। उन्होंने कहा कि महर्षि वाल्मीकि जी के विचार आज भी समाज में सद्भाव, समानता और स्वच्छता की भावना को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

पूर्व चेयरपर्सन सुनीता चौहान और नगर परिषद झज्जर के चेयरमैन जिले सिंह सैनी ने भी महर्षि वाल्मीकि जी के जीवन मूल्यों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि महर्षि वाल्मीकि जी की शिक्षाएं समाज को एकता, समानता और सद्भाव के सूत्र में बांधने का संदेश देती हैं।

सातों खंडों और शहरी निकायों के स्वच्छता सेवकों को मिला सम्मान



समारोह के दौरान जिला में स्वच्छता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने वाले स्वच्छता सेवकों को सम्मानित किया गया। जिले के सातों खंडों और शहरी निकायों से उत्कृष्ट कार्य करने वाले स्वच्छता सेवकों (सफाई कर्मियों) को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के अंत में डीडीपीओ निशा तंवर ने सभी अतिथियों, अधिकारियों, कर्मचारियों और उपस्थित नागरिकों का आभार व्यक्त किया।

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर व्यापार मंडल के जिलाध्यक्ष केशव सिंघल, डॉ.मनीष बंसल के साथ ही जिला प्रशासन की ओर से सीटीएम ऋचु, डीडीपीओ निशा तंवर, डीआईपीआरओ दिनेश कुमार, एएफएसओ अमरजीत सिंह, एआईपीआरओ डॉ. अश्वनी शर्मा, बीडीपीओ बादली सुमित बेनीवाल, बीडीपीओ साल्हावास राहुल मेहरा, झज्जर नगर परिषद के ईओ देवेंद्र कुमार, बहादुरगढ़ नगर परिषद के ईओ संजय रोहिल्ला, बेरी नगरपालिका के सचिव पवित्र गुलिया सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी, कर्मचारी और गणमान्य नागरिक मौजूद रहे।

पुराने वाहनों की बजाय आधुनिक परिवहन अपनाएं वाहन मालिक : डीसी

डीसी वर्षा खांगवाल ने वाहन मालिकों से नया सफर योजना का लाभ उठाने के लिए किया प्रेरित

झज्जर, 26 अक्टूबर

डीसी वर्षा खांगवाल ने कहा कि स्वच्छ एवं हरित परिवहन व्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए सभी वाहन स्वामियों की भागीदारी जरूरी है,ऐसे में सभी वाहन मालिक पुराने वाहनों की बजाय आधुनिक परिवहन अपनाने के लिए आगे आएं।

डीसी ने 'नया सफर योजना/परिवर्तन स्कीमश्र के विभिन्न प्रावधानों की जानकारी देते हुए बताया कि इस योजना का उद्देश्य पुराने एवं प्रदूषण फैलाने वाले वाहनों के स्थान पर आधुनिक, सुरक्षित एवं पर्यावरण अनुकूल बीएस-6 तथा इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देना है। यदि कोई वाहन स्वामी अपना बीएस-1, बीएस-2 अथवा बीएस-3 श्रेणी का पुराना वाहन स्क्रैप कराकर नया बीएस-6 अथवा इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) खरीदता है तो उसे 10 वर्षों तक मोटर वाहन कर में 100 प्रतिशत छूट प्रदान की जाएगी। उन्होंने बताया कि यदि कोई वाहन स्वामी अपना बीएस-4 वाहन स्क्रैप कराता है अथवा उसे एनसीआर क्षेत्र से बाहर विक्रय (सेल आउट) करता है तथा नया बीएस-6 वाहन खरीदता है, तो उसे भी 10 वर्षों तक मोटर वाहन कर में 100 प्रतिशत छूट का लाभ मिलेगा। उन्होंने योजना के अन्य महत्वपूर्ण प्रावधानों, आवेदन प्रक्रिया एवं पात्रता संबंधी जानकारी वाहन मालिकों को प्रदान करने के निर्देश दिए।

दूसरी ओर जिला परिवहन अधिकारी रवीश हुड्डा ने बताया कि योजना के अंतर्गत पात्र लाभार्थियों को ईंधन कूपन के माध्यम से प्रतिमाह 1,200 रुपये से 4,800 रुपये तक की वित्तीय सहायता प्रदान की जाएगी। इसके अलावा यदि कोई वाहन स्वामी अपनी पुरानी बस अथवा ट्रक को स्क्रैप कर या विक्रय कर नया इलेक्ट्रिक वाहन खरीदता है, तो उसे 64 हजार रुपये से 2 लाख 56 हजार रुपये तक की एकमुश्त प्रोत्साहन राशि भी प्रदान की जाएगी। साथ ही ऐसे लाभार्थियों को 10 वर्षों तक मोटर वाहन कर में 100 प्रतिशत छूट का लाभ भी मिलेगा।

जिला लोक संपर्क एवं परिवेदना समिति की बैठक 5 नवम्बर को

हरियाणा के उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री राव नरबीर सिंह करेंगे बैठक की अध्यक्षता

अधिकारियों को दिए गए उपस्थिति सुनिश्चित करने के निर्देश

झज्जर, 26 अक्टूबर।

आमजन की शिकायतों के त्वरित एवं प्रभावी समाधान के उद्देश्य से गठित जिला लोक संपर्क एवं परिवेदना समिति की बैठक गुरुवार 5 नवम्बर को सुबह 10 बजे लघु सचिवालय स्थित संवाद भवन में आयोजित की जाएगी। बैठक की अध्यक्षता हरियाणा के उद्योग एवं वाणिज्य, वन एवं पर्यावरण मंत्री राव नरबीर सिंह करेंगे।

सीटीएम ऋचु ने बताया कि जिला लोक संपर्क एवं परिवेदना समिति की बैठक आमजन की समस्याओं के समाधान का एक महत्वपूर्ण मंच है, जहां जनहित से जुड़े मामलों पर प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित की जाती है। उन्होंने संबंधित विभागों के अधिकारियों को बैठक में निर्धारित समय पर उपस्थित रहने और परिवादों से संबंधित पूर्ण जानकारी के साथ भाग लेने के निर्देश दिए हैं, ताकि नागरिकों की समस्याओं का त्वरित एवं स्थायी समाधान किया जा सके।

बरवाला में आयोजित हुआ प्रबुद्ध जन सम्मेलन, कैबिनेट मंत्री रणबीर गंगवा ने शहर के मौजिज लोगों के साथ किया राष्ट्र चिंतन व बौद्धिक संवाद

परिवहन विशेष न्यूज

हरियाणा/हिसार (राजेश सलूजा)

हरियाणा के लोक निर्माण एवं जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री रणबीर गंगवा की अध्यक्षता में सोमवार को बरवाला विधानसभा क्षेत्र में प्रबुद्ध जन सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में क्षेत्र के प्रबुद्ध नागरिकों, बुद्धिजीवियों, डॉक्टरों, वकीलों, व्यापारियों और विभिन्न सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

कैबिनेट मंत्री ने सभी के साथ राष्ट्र चिंतन व बौद्धिक संवाद



करते हुए कहा कि प्रबुद्ध समाज किसी भी राष्ट्र और राज्य की रीढ़ होता है। उन्होंने सरकार की विभिन्न जनकल्याणकारी नीतियों और विकास कार्यों का ब्यौरा देते हुए कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के कुशल नेतृत्व में हरियाणा सरकार बिना किसी भेदभाव के 'हरियाणा एक-हरियाणवी एक' के मूल मंत्र पर काम कर रही है। बुनियादी ढांचे को मजबूत करने के साथ-साथ समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति तक सरकारी योजनाओं का लाभ सीधा पहुंचाया जा रहा है।

उन्होंने आगे कहा कि लोक निर्माण और जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के माध्यम से बरवाला सहित पूरे प्रदेश में सड़कों के सुदृढ़ीकरण, स्वच्छ पेयजल आपूर्ति और बेहतर सीवरेज प्रबंधन पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। उन्होंने प्रबुद्ध जन से आह्वान किया कि वे सरकार की नीतियों को आम जनता तक पहुंचाने और समाज में सकारात्मक माहौल बनाने में अपनी सक्रिय भूमिका निभाएं।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथियों और पार्टी पदाधिकारियों ने भी इस बौद्धिक संवाद को संबोधित किया और राष्ट्र निर्माण में बुद्धिजीवियों के योगदान को रेखांकित किया। मंच पर कैबिनेट मंत्री को स्मृति चिन्ह और फूलों के हार भेंट कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर पूर्व चेयरमैन धूमन सिंह किरमिच, जिला अध्यक्ष भाजपा हांसी अशोक सैनी, प्रदेश सचिव एवं जिला प्रभारी प्रतिभा सुमन, जिला कोषाध्यक्ष महेश शर्मा, मार्केट कमेटी बरवाला चेयरमैन प्रवीण सैनी, वरिष्ठ भाजपा नेता राजेंद्र सांगवान, वाइस चेयरमैन रोशन घनघस, जिला सचिव पूजा गुंदली, हल्का बरवाला मीडिया प्रभारी कमल हंदूजा, बरवाला मंडल अध्यक्ष मोनू संदूजा, मंडल अध्यक्ष मनोज मय्यड़, जिला सचिव युवा मोर्चा भाजपा प्रवेश, मंडल मीडिया प्रभारी राजेश सलूजा लम्बोरिया, सीएम विंडो एमिनेंट पर्सन सुरेश गोयल, मिलगेट महामंत्री आशीष जांगड़ा, कुलदीप पूनिया लाडवा, डॉ रामरूप, वरिष्ठ समाजसेवी महेंद्र सेतिया, मास्टर केवल कृष्ण आर्य, तिलक राज, परमानंद जांगड़ा, आशा खटक, मान सिंह चौहान, संदीप सारसर, पुरुषोत्तम गुप्ता, डॉ प्रेम मेहता, मान सिंह चौहान, तरसेम पूनिया, शुभम मदान, रोहताश ग्रोवर, राजेश मनुजा, जगरूप महामंत्री, पल्लवेश, कुलदीप जांगड़ा पीआरओ सहित अनेकों गणमान्य जन उपस्थित रहे।

बादली के गांव निमाणा में डीसी का रात्रि ठहराव कार्यक्रम आज : सीटीएम

नागरिकों से सीधा संवाद करेंगी डीसी वर्षा खांगवाल

झज्जर, 26 अक्टूबर। जिला के गांव निमाणा में मंगलवार 27 अक्टूबर को रात्रि ठहराव कार्यक्रम के तहत डीसी वर्षा खांगवाल ग्रामीणों के साथ सीधा संवाद करेंगी। यह जानकारी सीटीएम ऋचु ने सोमवार को यहां दी।

नगराधीश ने बताया कि गांव के मंदिर के साथ लगते हाल में रात्रि ठहराव कार्यक्रम का आयोजन होगा। उपायुक्त वर्षा खांगवाल ग्रामीणों की समस्याएं सुनते हुए उनका समाधान करेंगी और आमजन से जुड़े विभागीय अधिकारियों द्वारा सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी जाएगी।

सीटीएम ऋचु ने बताया कि सरकार की यह अनूठी पहल है जिसके तहत प्रशासन अमला गांव में जाकर ग्रामीणों की समस्या सुनेगा और सरकारी योजनाओं की जानकारी देगा। ऐसे कार्यक्रम जनता और प्रशासन की दूरी को कम करते हैं। यह पहल समस्याओं को प्राथमिकता के आधार पर हल करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

उन्होंने बताया कि रात्रि ठहराव कार्यक्रम के दौरान स्वास्थ्य विभाग द्वारा निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर लगाया जाएगा। आमजन के कार्यों से सीधा जुड़ाव रखने वाले और ग्रामीण विकास से जुड़े विभाग अपने अपने विभाग की कल्याणकारी नीतियों के बारे में ग्रामीणों को जानकारी देंगे। इस संबंध में सभी विभागों को निर्देश दिए गए हैं। रात्रि ठहराव में सभी विभागों के अधिकारी मौजूद रहेंगे।



पर्यावरण दूषित करने वाली गतिविधियों को समीर एप पर करें शिकायत : डीसी

डीसी वर्षा खांगवाल ने एनजीटी की ग्रेप प्रावधानों को पूर्ण ढंग से लागू करने के अधिकारियों को दिए निर्देश

झज्जर,26 अक्टूबर

डीसी वर्षा खांगवाल ने कहा कि जिला में वायु प्रदूषण नियंत्रण को लेकर प्रशासन सजग है। सभी संबंधित विभाग पर्यावरण संरक्षण के लिए जागरूकता के साथ इससे जुड़े कार्यों का क्रियान्वयन सही समय पर सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि एनजीटी द्वारा वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए ग्रेप व्यवस्था लागू की है। इसकी पालना हर हाल में करनी होगी। पर्यावरण संरक्षण की मुहिम को सक्रिय रूप से आगे बढ़ाने के लिए समीर एप शुरू किया गया है। कोई भी नागरिक ग्रेप प्रणाली की अवहेलना या अन्य गतिविधि जो पर्यावरण को दूषित कर रही हैं , उनकी शिकायत समीर एप पर की जा सकती है।

डीसी ने कहा कि ग्रेप के प्रथम चरण के नियमों की कड़ाई से पालना करने के लिए प्रभावी कदम उठाए जाएं,ताकि वायु प्रदूषण को नियंत्रित किया जा सके। उन्होंने फसल अवशेष प्रबंधन को लेकर भी सरकार की योजनाओं का किसानों से लाभ उठाने का आह्वान किया ,साथ ही अधिकारियों से फसल अवशेष जलाने वालों पर कड़ी निगरानी के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सडक़ों पर उडने वाली धूल पर नियंत्रण के लिए संबंधित विभागों द्वारा एंटी स्मॉक गन को उपयोग में लाया जाए,साथ ही वायु प्रदूषण को लेकर प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा जारी नियमों की कड़ाई से पालना सुनिश्चित की जाए।

डीसी ने अधिकारियों को दिशा-निर्देश देते हुए कहा कि अधिकारी एक्शन प्लान बनाकर प्रदूषण मुक्त शहर बनाने का हर सम्भव प्रयास करें और मनमानी करने वालों के खिलाफ चालान और जरूरत पडने पर कूड़ा जलाने वालों पर एफआईआर भी दर्ज करवाएं।

निर्माण कार्यों से धूल मिट्टी वायु में न फैले , इसके लिए पानी छिडक़ाव जरूरी

डीसी वर्षा खांगवाल ने कहा कि वायु प्रदूषण नियंत्रण को लेकर लोग काफी जागरूक हो चुके हैं। उन्होंने कहा कि सरकारी साईटों पर चल रहे निर्माण कार्यों पर धूल मिट्टी वायु में न फैले , इसके लिए पानी छिड़काव जरूरी है। उन्होंने कहा कि शहरी क्षेत्र में सड़क मार्गों पर अतिक्रमण करने वालों पर सख्ती बरतने की जरूरत है कि यातायात जाम की समस्या न पैदा हो।

वायु प्रदूषण नियंत्रण के लिए सिटीजन चार्टर का पालन करें नागरिक

डीसी वर्षा खांगवाल ने बताया कि वायु प्रदूषण नियंत्रण में प्रत्येक नागरिक की सहभागिता आवश्यक है ताकि स्वच्छ एवं स्वस्थ वातावरण सुनिश्चित किया जा सके। उन्होंने बताया कि नागरिक अपने वाहनों के इंजन को उचित ढंग से ट्यून रखें। अपने वाहनों में टायर का दबाव उचित बनाए रखें ताकि ईंधन की खपत कम हो। वाहनों के पीयूसी प्रमाणपत्र अपडेट रखें। ट्रैफिक सिग्नल यानि लाल बत्ती पर इंजन बंद कर दें। प्रदूषण कम करने के लिए हाइब्रिड या इलेक्ट्रिक वाहनों को प्राथमिकता दें। खुले स्थानों पर कूड़ा-कचरा न फैलाएं और न ही जलाएं। अधिक से अधिक पेड़ लगाएं और उनकी देखभाल करे। त्योहारों को पर्यावरण-अनुकूल तरीके से मनाएं, पटाखों से बचें। उन्होंने नागरिकों से अनुरोध किया है कि वे इन नियमों का पालन कर वायु गुणवत्ता में सुधार लाने में सहयोग दें।



आंदोलन लोकतंत्र में अवाम के तंत्र की गवाही हैं (आलेख : पूजा राठी)



'सारी सड़कें जाम कर दी '
'दुकानें भी बंद हैं '
'सार्वजनिक संपति का नुकसान हो रहा है '
किसी भी आंदोलन की चर्चा में अक्सर ऐसी बातें सुनने को मिलती हैं। अपनी मांगें मनवाने के लिए दूसरों को मुश्किल में डालना कितना सही है, बहस इसी सवाल के इर्द-गिर्द बनी रहती है। लेकिन इस बीच एक ज़रूरी सवाल अक्सर छूट जाता है : आख़िर लोगों को अपनी बात करने के लिए आंदोलन का रास्ता क्यों चुनना पड़ता है? जब शिकायतों पर सुनवाई नहीं होती और व्यवस्था के भीतर समाधान नहीं मिलता, तब लोग सामूहिक विरोध से अपनी बात रखते हैं। ऐसे में आंदोलन नीति निर्माताओं पर दबाव बनाने का ज़रिया बन जाते हैं।

लेकिन एक आंदोलन को केवल सतही रूप से नहीं समझा जा सकता। यह देखना भी ज़रूरी है कि एक जनसमूह किन परिस्थितियों में विरोध करता है, कौन-से मुद्दे उठाता है और उनके ज़रिए क्या बदल पाता है। एक बड़ा सवाल यह भी है कि जिस देश की आज़ादी में आंदोलनों की अहम भूमिका रही हो, वहां आज लोकतंत्र को बनाए रखने में आंदोलन क्या भूमिका निभाते हैं?

जब समस्याएं सार्वजनिक सवाल बनती हैं

हर आंदोलन का संबंध ज़मीन, बुनियादी ढांचे या तात्कालिक सरकारी फैसलों से नहीं होता। कुछ आंदोलन उन समस्याओं को सार्वजनिक बहस का हिस्सा बनाते हैं, जिन्हें लंबे समय तक निजी मामला, या किसी उपेक्षित समुदाय का अनुभव मानकर नज़रअंदाज़ किया जाता है। सामूहिक संघर्ष इन अनुभवों को सामाजिक सवालों में बदलते हैं और यह मांग उठाते हैं कि इनके समाधान का ज़िम्मा केवल प्रभावित व्यक्तियों का नहीं, बल्कि समाज और संस्थानों का भी है।

श्रमिक और महिला अधिकारों पर काम करने वाली सामाजिक कार्यकर्ता राजिम केतवास कहती हैं, 'पति-पत्नी के बीच मारपीट कोई निजी बात नहीं, बल्कि सामाजिक मसला है।' यह नज़रिया महिला आंदोलनों के लंबे संघर्ष में भी दिखाई देता है। इन आंदोलनों ने घरेलू हिंसा को निजी मामला मानने की सोच को चुनौती दी और महिलाओं की सुरक्षा के लिए कानूनी संरक्षण की मांग उठाई।

इन प्रयासों के बीच 2005 में घरेलू हिंसा से महिलाओं का संरक्षण अधिनियम बना। इसी तरह, 2012 में निर्भया मामले के बाद देश भर में हुए प्रदर्शनों ने यौन हिंसा पर व्यापक सार्वजनिक बहस और कानूनी सुधारों की मांग को गति दी। इसके बाद 2013 में आपराधिक कानून (संशोधन) अधिनियम पारित हुआ। राजस्थान की भंवरी देवी का मामला इस बात का एक अहम उदाहरण है कि किसी व्यक्ति के साथ हुआ अन्याय किस तरह व्यापक संस्थागत जवाबदेही का सवाल बन सकता है। भंवरी देवी के साथ हुई हिंसा के बाद महिला संगठनों ने कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न से महिलाओं की सुरक्षा के लिए कानूनी संरक्षण की मांग उठाई। इस संघर्ष से जुड़ी कानूनी पहल के चलते ही 1997 में विशाखा दिशा-निर्देश जारी किए गए।

हालांकि, अभूतन समाज में मौजूद असमानताएं तय करती हैं कि किसकी आवाज़ सुनी जाएगी और किसके अनुभव हाशिये पर रह जाएंगे। दलित अधिकार आंदोलनों ने जातिगत भेदभाव को व्यक्तिगत अनुभव के बजाय सामाजिक अन्याय और समानता के अधिकार के सवाल के रूप में सामने रखा है। वहीं, दलित महिला आंदोलनों ने यह रेखांकित किया है कि जाति और जेंडर के आपसी संबंधों को नज़रअंदाज़ करने से दलित महिलाओं के अनुभव व्यापक महिला अधिकारों की बहस में पीछे छूट सकते हैं।

सवाल केवल विरोध का नहीं, फैसले लेने का भी है

अधिकारों की लड़ाई केवल भेदभाव को पहचानने या इससे सुरक्षा पाने तक सीमित नहीं है। यह सवाल भी उठाती है कि समुदाय के जीवन, संसाधनों और भविष्य से जुड़े फैसले लेने का अधिकार किसके पास है। ओडिशा की नियमगिरि पहाड़ियों में डोंगरिया कोंध समुदाय का संघर्ष इसी सवाल को सामने लाता है। यहां मुद्दा केवल खनन या विकास में से किसी एक को चुनने का नहीं था, बल्कि यह सुनिश्चित करने का भी था कि पहाड़ियों को पवित्र मानने वाले और अपनी आजीविका के लिए उन पर निर्भर समुदाय की मान्यताओं, अधिकारों और हितों को फैसले लेने की प्रक्रिया में कितनी जगह मिलती है। 2013 में सुप्रीम कोर्ट ने ग्राम सभाओं को यह तय करने की ज़िम्मेदारी दी कि प्रस्तावित खनन से समुदायों के धार्मिक और सामुदायिक वन अधिकार प्रभावित होंगे या नहीं। इसके बाद हुई ग्राम सभाओं ने खनन प्रस्ताव को खारिज कर दिया। नियमगिरि का संघर्ष दिखाता है कि विकास से जुड़े फैसलों में प्रभावित समुदायों को केवल उनके नतीजे भुगतने वाले लोगों के रूप में नहीं देखा जा सकता। उन्हें फैसले लेने की प्रक्रिया में भी निर्णायक भूमिका मिलनी चाहिए।

फैसले में हिस्सेदारी से अवसरों तक

फैसले लेने की प्रक्रिया में समुदायों की भागीदारी का सवाल केवल नियमगिरि तक सीमित नहीं है। मध्य प्रदेश में तवा बांध के कारण विस्थापित आदिवासी समुदायों को अपनी ज़मीन और घर खोने के बाद बांध से बने जलाशय में मछली पकड़ने और बेचकर आजीविका चलाने के अधिकार के लिए लंबा संघर्ष करना पड़ा। 1996 में आंदोलन के बाद बने तवा मत्स्य संघ ने स्थानीय मछुआरों को मछली पकड़ने और बेचने के अधिकार दिलाने में अहम भूमिका निभाई। यह संघर्ष दिखाता है कि विस्थापन के बाद केवल पुनर्वास पर्याप्त नहीं है, बल्कि आजीविका और संसाधनों पर अधिकार भी ज़रूरी है।

वहीं, मध्य प्रदेश में केन-बेतवा लिंक परियोजना के खिलाफ आंदोलन विकास के संभावित लाभों और उसकी सामाजिक-पर्यावरणीय कीमत के बंटवारे पर सवाल उठाता है। आंदोलनकारी सिंचाई और जल उपलब्धता के लाभों के साथ विस्थापन, जंगलों, जैव विविधता और स्थानीय आजीविका पर पड़ने वाले असर को सामने ला रहे हैं। यह संघर्ष बताता है कि किसी परियोजना का आकलन केवल उसके संभावित लाभों से नहीं किया जा सकता। यह भी देखना ज़रूरी है कि उसकी कीमत कौन चुकाता है और प्रभावित समुदायों को फैसले लेने में कितनी जगह मिलती है।

आंदोलन सरकार से जवाबदेही की मांग करते हुए कानूनों और लोकतांत्रिक व्यवस्था में बदलाव का रास्ता भी खोल सकते हैं।

अधिकारों की लड़ाई शिक्षा और रोज़गार के अवसरों में हिस्सेदारी से भी जुड़ी हुई है। तमिलनाडु में अरुंधतियार समुदाय ने अनुसूचित जातियों के आरक्षण में अपनी हिस्सेदारी सुनिश्चित करने की मांग उठाई। इसके बाद 2009 में राज्य सरकार ने अनुसूचित जातियों के निर्धारित आरक्षण के भीतर अरुंधतियार समुदाय के लिए विशेष आरक्षण का प्रावधान किया। अगस्त 2024 में सुप्रीम कोर्ट ने इसे संवैधानिक रूप से वैध माना।

यह मामला सवाल उठाता है कि किसी अधिकार का औपचारिक रूप से उपलब्ध होना क्या उसके लाभों तक समान पहुंच भी सुनिश्चित करता है? यदि किसी समूह को मौजूदा व्यवस्था में बराबर अवसर नहीं मिलते, तो क्या अधिकारों के भीतर अधिक न्यायसंगत बंटवारे की ज़रूरत है?

बदलाव के लिए हमेशा बड़े कानूनों या नीतिगत फैसलों की ज़रूरत नहीं होती। उदाहरण के लिए, मेघालय के रब्बेंग गांव में महिलाओं ने मुखिया के चुनाव में मतदान का अधिकार पाने के लिए संघर्ष किया। यह दिखाता है कि स्थानीय शासन में प्रतिनिधित्व केवल पदों पर मौजूदगी का सवाल नहीं, बल्कि यह भी तय करता है कि गांव के भविष्य से जुड़े फैसलों में किनकी आवाज़ सुनी जाएगी।

जब आंदोलन व्यवस्था को जवाबदेह बनाते हैं

आंदोलनों का असर केवल लोगों को उनके अधिकार दिलाने तक सीमित नहीं रहता। वे सरकार से जवाबदेही की मांग करते हुए कानूनों और लोकतांत्रिक व्यवस्था में बदलाव का रास्ता भी खोल सकते हैं। राजस्थान में मज़दूर किसान शक्ति संगठन (एमकेएसएस) ने मज़दूरों को पूरी मज़दूरी न मिलने के सवाल से शुरुआत की और सरकारी रिकॉर्ड तक लोगों की पहुंच की मांग उठाई। इस संघर्ष ने सूचना के अधिकार के राष्ट्रीय अभियान को मज़बूती दी और 2005 में सूचना का अधिकार अधिनियम बना। इस कानून ने नागरिकों को सरकारी कामकाज में पारदर्शिता मांगने और सार्वजनिक खर्च की जांच करने का कानूनी माध्यम दिया।

हाशिये पर रहने वाले समुदायों के लिए आंदोलन गरिमा और बराबरी की लड़ाई भी बन सकते हैं। सफ़ाई कर्मचारी आंदोलन ने हाथ से मैला उठाने की अमानवीय प्रथा खत्म करने और इससे जुड़े लोगों के पुनर्वास की मांग को कानूनी लड़ाई के ज़रिए आगे बढ़ाया। इसके बाद 2013 में हाथ से मैला उठाने के रोज़गार का निषेध और पुनर्वास अधिनियम बना। इस मामले में अदालत ने कानून के क्रियान्वयन और प्रभावित लोगों के पुनर्वास को लेकर भी निर्देश दिए।

इन दोनों संघर्षों ने अलग-अलग स्तरों पर लोकतांत्रिक जवाबदेही का दायरा बढ़ाया। एक ने सरकारी जानकारी तक नागरिकों की पहुंच को अधिकार बनाने में योगदान दिया, तो दूसरे ने जातिगत अमानवीय कुरीति को खत्म करने और प्रभावित लोगों के पुनर्वास की कानूनी ज़िम्मेदारी को सामने रखा।

हालांकि, कानून बनना अपने आप में बदलाव की गारंटी नहीं है। इसका पालन और पीड़ितों तक न्याय पहुंचना भी उतना ही ज़रूरी है। इसलिए यह समझने के लिए कि कोई आंदोलन कानूनी बदलाव लाने में कितना सफल रहा, यह देखना ज़रूरी है कि लोग अपने अधिकारों से परिचित हैं या नहीं? क्या वे इसका उल्लंघन होने पर शिकायत कर सकते हैं या नहीं? और संबंधित संस्थाएं उन शिकायतों पर कार्रवाई करती हैं या नहीं?

हर आंदोलन का असर कानून में नहीं दिखता

आंदोलनों के असर को केवल कानून बनने या नीतियां बदलने से नहीं मापा जा सकता। चेन्नई के एन्नोर में स्थानीय समुदायों और चेन्नई क्लाइमेट एक्शन ग्रुप से जुड़े कार्यकर्ताओं का संघर्ष औद्योगिक प्रदूषण से आर्द्रभूमि, मछुआरों की आजीविका और लोगों के स्वास्थ्य को हो रहे नुकसान को सामने लाता है। यहां मांग केवल प्रदूषण रोकने की नहीं, बल्कि औद्योगिक विकास की कीमत और स्थानीय समुदायों के हितों को सार्वजनिक बहस में जगह देने की भी है।

इसी तरह, 2016 में रोहित वेमुला की मौत के बाद देशभर के विश्वविद्यालयों में हुए छात्र प्रदर्शनों ने उच्च शिक्षा संस्थानों में जातिगत भेदभाव और संस्थागत जवाबदेही पर बहस को तेज़ किया। इस संघर्ष ने सवाल उठाया कि शिक्षा तक पहुंच सुनिश्चित करने के साथ-साथ संस्थानों में गरिमा, समानता और भेदभाव से सुरक्षा की ज़िम्मेदारी किसकी है?

आंदोलन, लोकतंत्र में हमें याद दिलाते हैं कि एक नागरिक का काम केवल फैसलों को स्वीकार करना नहीं, बल्कि उनमें हिस्सेदारी की मांग करना भी है।

यह उदाहरण दिखाते हैं कि किसी समस्या को सार्वजनिक बहस का हिस्सा बनाना भी आंदोलन का एक महत्वपूर्ण परिणाम हो सकता है। हालांकि, किसी मुद्दे पर बहस शुरू होना और उसका समाधान होना दो अलग बातें हैं। लेकिन मांगें पूरी न होने का यह अर्थ भी नहीं कि आंदोलन का कोई असर नहीं पड़ा। उसके प्रभाव को समझने के लिए यह देखना ज़रूरी है कि उसने लोगों की समझ, सार्वजनिक विमर्श और संस्थागत जवाबदेही को किस हद तक प्रभावित किया है।

आंदोलन रुक गए, क्या उनकी विरासत भी खत्म हो गई?

किसी आंदोलन की विरासत समझने के लिए यह देखना ज़रूरी है कि उसके दौरान बने संबंध, अनुभव और सामूहिकता आगे किस रूप में काम आए। क्या उनसे नए संगठन या पहलें शुरू हुईं? क्या लोगों ने अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने के नए तरीके सीखे? क्या आंदोलन ने आगे के प्रयासों के लिए कोई आधार तैयार किया? ऐसे सवाल आंदोलन के असर को उसके तत्काल नतीजों से आगे जाकर समझने में मदद करते हैं।

2019–20 के सीएए विरोधी आंदोलन के बाद उभरी नागरिक पहलों को इसी नज़रिए से देखा जा सकता है। इस आंदोलन में मुस्लिम महिलाओं ने नेतृत्व संभालकर सार्वजनिक बहस में अपनी राजनीतिक मौजूदगी दर्ज की। शाहीन बाग के आंदोलन से जुड़े कुछ समूहों और पहलों ने आगे शिक्षा, पुनर्वास और अल्पसंख्यक समुदायों के अधिकारों से जुड़े ज़मीनी काम को भी आगे बढ़ाया। इस तरह, आंदोलन के दौरान बना जुड़ाव विरोध के तत्काल संदर्भ से आगे जाकर सामुदायिक पहलों का आधार बन सकता है।

इसी तरह, 2020–21 के किसान आंदोलन के दौरान बने सामाजिक संबंधों और संगठनों की भूमिका 2025 में पंजाब में आई भीषण बाढ़ के दौरान राहत कार्यों में भी देखने को मिली। राहत के काम में जुटे कुछ नेटवर्क किसान आंदोलन के दौरान बनी सामूहिकता से जुड़े थे। यह उदाहरण दिखाता है कि किसी आंदोलन की विरासत केवल उसकी मांगों के पूरा होने से तय नहीं होती। विरोध के दौरान बने संबंध, संगठन और मिलकर काम करने के अनुभव आगे चलकर सामुदायिक सहयोग और नए संघर्षों का आधार भी बन सकते हैं।

वहीं, आंदोलनों के नतीजे हमेशा एक दिशा में आगे नहीं बढ़ते। भारत में एलजीबीटीक्यू+ अधिकार आंदोलन इसका उदाहरण है। 2009 में दिल्ली हाई कोर्ट ने आईपीसी की धारा 377 के उस हिस्से को असंवैधानिक ठहराया, जो सहमति से बने वयस्कों के समलैंगिक संबंधों को अपराध मानता था। लेकिन 2013 में सुप्रीम कोर्ट ने इस फैसले को पलट दिया। लंबे संघर्ष और कानूनी चुनौती के बाद 2018 में सुप्रीम कोर्ट ने सहमति से बने वयस्कों के समलैंगिक संबंधों को अपराध की श्रेणी से बाहर कर दिया। यह सफर दिखाता है कि कानूनी जीत हमेशा स्थायी नहीं होती। अधिकार हासिल करने के साथ-साथ उनकी रक्षा के लिए भी संघर्ष करना पड़ सकता है।

इसलिए सवाल केवल यह नहीं है कि कोई आंदोलन अपनी मांगें मनवा पाया या नहीं। यह भी देखना ज़रूरी है कि उसने किन मुद्दों को सार्वजनिक बहस का हिस्सा बनाया, किन लोगों को अपनी पहचान और अनुभवों के साथ आवाज़ उठाने का मंच दिया और उसके बाद कौन-से संघर्ष जारी रहे। आंदोलन रुक सकते हैं और उनकी मांगें अधूरी रह सकती हैं, लेकिन इससे उनकी विरासत या असर खत्म नहीं हो जाता।

लोकतंत्र में आंदोलन यह सुनिश्चित करते हैं कि किसी जनसमूह की मांग को केवल इस वजह से ख़ारिज नहीं किया जा सकता, क्योंकि उनके पास सत्ता, संसाधन या सार्वजनिक मंच नहीं है। आंदोलन लोगों को अपने अनुभवों को साझा सवालों में बदलने और अपने जीवन को प्रभावित करने वाले फैसलों को चुनौती देने का रास्ता देते हैं। इसलिए आंदोलनों के असर को समझने के लिए यह देखना ज़रूरी है कि उन्होंने किन सवालों को सार्वजनिक बनाया, किन आवाज़ों को जगह दी और शासन व्यवस्था को कितना जवाबदेह बनाया।

आंदोलन लोकतंत्र में अवाम के तंत्र की गवाही है। वह हमें याद दिलाते हैं कि एक नागरिक का काम केवल फैसलों को स्वीकार करना नहीं, बल्कि उनमें हिस्सेदारी की मांग करना भी है।

(पूजा राठी आईडीआर हिंदी में संपादकीय विश्लेषक हैं।)

डब्ल्यूजेआई की एआई मीडिया कार्यशाला में 16 से अधिक राज्यों के पत्रकारों की भागीदारी

निःशुल्क एआई टूल्स के इस्तेमाल की दी जानकारी, प्रतिभागियों को मिलेंगे प्रमाणपत्र

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली
परिवार विशेष समाचार पत्र दैनिक



नई दिल्ली: वर्किंग जर्नलिस्ट्स ऑफ इंडिया (डब्ल्यूजेआई) की ओर से पत्रकारों के लिए निःशुल्क एआई मीडिया तकनीकी द्वितीय कार्यशाला आयोजित की गई। गूगल मीट के माध्यम से हुई इस कार्यशाला में 16 से अधिक राज्यों के मीडिया कर्मियों ने भाग लिया। एआई एवं मीडिया तकनीकी विशेषज्ञ तीर्थंकर सरकार और अविनाश सिंह ने पत्रकारों को कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के व्यावहारिक इस्तेमाल की जानकारी दी।

विशेषज्ञों ने लाइव डेमो के जरिए समाचार अनुसंधान, लेखन, संपादन, हेडलाइन निर्माण, अनुवाद, वीडियो ट्रांसक्रिप्शन, सबटाइटल, सोशल मीडिया सामग्री और पोस्टर-बैनर तैयार करने में एआई टूल्स की उपयोगिता बताई। उन्होंने कहा कि एआई के प्रभावी इस्तेमाल से पत्रकारिता के कामकाज में तेजी और सामग्री की गुणवत्ता में सुधार लाया जा सकता है। हालांकि, समाचारों की तथ्यात्मक पुष्टि करना पत्रकारों की जिम्मेदारी है। पंजीकृत प्रतिभागियों को निःशुल्क एआई टूल्स की विस्तृत जानकारी उपलब्ध कराई जाएगी।

पत्रकारों के लिए जारी रहेगी एआई कार्यशालाओं की श्रृंखला

डब्ल्यूजेआई के राष्ट्रीय अध्यक्ष संजय उपाध्याय ने कहा कि पत्रकारों को आधुनिक तकनीक से जोड़ने के लिए ऐसी कार्यशालाएं आगे भी आयोजित की जाएंगी। राष्ट्रीय महासचिव नरेंद्र भंडारी ने बताया कि प्रतिभागियों को सहभागिता प्रमाणपत्र दिए जाएंगे। कार्यशाला का संचालन राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष संजय सक्सेना ने किया। इसका प्रसारण यूनियन के फेसबुक, आधिकारिक वेबसाइट और यूट्यूब चैनल पर भी हुआ।

कार्यशाला में ऑनलाइन शामिल पत्रकार, विकास सुखिया, नरसिम्हा राव सृगादा, निखिल वर्मा, पी. कुमार, रानाप्रताप, मेगराज लूथरा, विशाल चौरसिया, वीरिंदर सिंह, धर्मेंद्र, भदौरिया, स्वतंत्र सिंह भुल्लर, गणेश, इश मलिक, सुषमा रानी, विजय वर्मा, आनंद कुमार मिश्रा, भोलानाथ, परवीन बागी, विवेक वैष्णव और एन.एस. राव सहित विभिन्न राज्यों के प्रतिनिधि शामिल हुए। पंजाब दी लहर और डीआर्च न्यूज़ का प्रतिनिधित्व भी रहा।

₹1,052 करोड़ खर्च, फिर भी गांवों की सड़कें बदहाल! खनिज संपदा से समृद्ध सुंदरगढ़ में विकास के दावों की खुली पोल, डीएमएफ फंड के उपयोग और निर्माण गुणवत्ता पर उठे गंभीर सवाल





रिपोर्ट डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र सुंदरगढ़



खनिज संपदा से देश की अर्थव्यवस्था को मजबूती देने वाले सुंदरगढ़ जिले के ग्रामीण आज भी बदहाल सड़कों पर चलने को मजबूर हैं। जिला खनिज प्रतिष्ठान (डीएमएफ) निधि से सड़क निर्माण एवं मरम्मत पर 1,052 करोड़ रुपये से अधिक खर्च होने के बावजूद गांवों की तस्वीर नहीं बदली। कहीं सड़क की परत उखड़ चुकी है, तो कहीं गहरे गड्ढे राहगीरों की जान के लिए खतरा बने हुए हैं। सवाल है—इतनी बड़ी राशि खर्च होने के बाद भी ग्रामीणों को सुरक्षित और सुगम आवागमन क्यों नहीं मिल रहा?

जिले के 17 ब्लॉकों में ग्रामीण सड़कों की दुर्दशा विकास के दावों पर गंभीर सवाल खड़े करती है। नुआगांव ब्लॉक के सोरड़ा-गिरजाटोली और कुटिदा-गंजू मार्ग, बिसरा ब्लॉक के मर्सीकुदर, बंबुआ एवं उडुसु मार्ग तथा कोइड़ा ब्लॉक के कदामडीही, गणुआ, देवझर और कलमंग जैसे गांवों की सड़कें बदहाली की कहानी कह रही हैं। तेहरेई से गणुआ तक लगभग 10 किलोमीटर और गुरुण्डिया से तरमारेन तक करीब तीन किलोमीटर सड़क की खराब स्थिति ग्रामीणों की परेशानी बढ़ा रही है।

इन रास्तों से गुजरने वाले ग्रामीणों के लिए अस्पताल पहुंचना, बच्चों का स्कूल जाना, किसानों का उपज बाजार तक ले जाना और रोजी-रोटी के लिए आवागमन करना किसी परीक्षा से कम नहीं। आधे घंटे का सफर दो से तीन घंटे में पूरा होना केवल असुविधा नहीं, बल्कि ग्रामीण जीवन और स्थानीय अर्थव्यवस्था पर सीधा प्रहार है।

करोड़ों का आवंटन, जवाबदेही कहां? उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार, ग्रामीण विकास विभाग (आरडब्ल्यूडी), रोड एंड बिल्डिंग विभाग, इंजीनियरिंग प्रोजेक्ट्स इंडिया (ईपीआई) और एनपीसीसी सहित विभिन्न एजेंसियों को सड़क निर्माण एवं मरम्मत के लिए भारी राशि दी गई। इसके बावजूद जमीनी स्थिति और खर्च के आंकड़ों के बीच दिखाई देने वाला अंतर जांच की मांग करता है।

सरकारी कर्मचारी और तकनीकी कर्मी यदि निर्धारित मानकों के अनुरूप कार्य करें, तो सार्वजनिक धन का लाभ सीधे जनता तक पहुंच सकता है। लेकिन जहां सड़कें समय से पहले टूटती हैं या मरम्मत के बाद भी चलने योग्य नहीं रहतीं, वहां निर्माण गुणवत्ता, निरीक्षण, ठेकेदारों की जवाबदेही और भुगतान प्रक्रिया की निष्पक्ष जांच जरूरी है।

जनता पूछ रही—हिसाब कौन देगा? पूर्व सरकार के कार्यकाल में खर्च हुई राशि के उपयोग और निर्माण कार्यों की गुणवत्ता की समीक्षा नहीं होने के आरोप भी सामने आए हैं। हालांकि, भ्रष्टाचार या धन के गबन की पुष्टि जांच और दस्तावेजों के बिना नहीं की जा सकती।

अब जरूरत है कि डीएमएफ से स्वीकृत प्रत्येक सड़क का नाम, लागत, ठेकेदार, कार्यादेश, भुगतान, गुणवत्ता परीक्षण और वर्तमान स्थिति सार्वजनिक की जाए। दोष मिलने पर जिम्मेदार अधिकारियों और ठेकेदारों पर नियमानुसार कार्रवाई हो।

खनिज संपदा से राजस्व बढ़ना तभी सार्थक है, जब उसका लाभ गांवों तक पहुंचे। आखिर ग्रामीणों को गड्ढों से भरी सड़कें और व्यवस्था को करोड़ों के खर्च का हिसाब—इन दोनों के बीच जवाबदेही तय करना अब प्रशासन की प्राथमिकता होनी चाहिए।

600 करोड़ की स्वास्थ्य परियोजना पर सवाल, सरकारी अस्पताल में मरीजों की उम्मीदें बेहाल!

घोषणाओं और हकीकत के बीच फंसी स्वास्थ्य व्यवस्था, जवाबदेही के अभाव में आम जनता भुगत रही खामियाजा

रिपोर्ट डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र राउरकेला





सरकारी अस्पतालों को गरीबों और जरूरतमंदों के लिए स्वास्थ्य सेवा का सबसे बड़ा सहारा माना जाता है, लेकिन जब विकास योजनाएं कागजों से निकलकर जमीन तक नहीं पहुंचतीं, तो इसका सबसे भारी बोझ उन लोगों पर पड़ता है, जिनके पास निजी अस्पतालों में इलाज कराने की आर्थिक क्षमता नहीं होती। राउरकेला सरकारी अस्पताल से जुड़ी 600 करोड़ रुपये की विकास परियोजना को लेकर उठ रहे सवाल इसी व्यवस्था की कार्यशैली पर गंभीर चिंता पैदा करते हैं।

स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार और अस्पताल की सुविधाओं में सुधार की घोषणाएं निश्चित रूप से स्वागतयोग्य हैं। लेकिन सवाल यह है कि यदि इतनी बड़ी राशि की परियोजना घोषित होने के बावजूद मरीजों को अपेक्षित सुविधाएं नहीं मिलतीं, तो इसके लिए जिम्मेदार कौन है? क्या योजना बनाने और घोषणा करने के बाद प्रशासन अपनी जिम्मेदारी पूरी मान लेता है, या फिर जनता को वास्तविक बदलाव दिखाना भी उसकी जवाबदेही है?

कागजी विकास बनाम जमीनी हकीकत

स्वास्थ्य क्षेत्र में किसी भी परियोजना की सफलता का आकलन विज्ञप्तियों, बैठकों और बजट के आंकड़ों से नहीं, बल्कि मरीजों को मिलने वाली सुविधाओं से होना चाहिए। अस्पताल में उपचार, आवश्यक जांच, पर्याप्त संसाधन, बेहतर प्रबंधन और संवेदनशील व्यवहार—ये किसी भी सार्वजनिक स्वास्थ्य संस्थान की बुनियादी अपेक्षाएं हैं। यदि मरीजों को इन सुविधाओं के लिए भटकना पड़े, तो विकास के दावों की समीक्षा आवश्यक हो जाती है।

सरकारी व्यवस्था की सबसे बड़ी विडंबना यह है कि फाइलों में प्रक्रियाएं आगे बढ़ती दिखाई दे सकती हैं, लेकिन जमीन पर उनका लाभ पहुंचने में असामान्य देरी हो सकती है। प्रशासनिक ढिलाई, विभागीय समन्वय की कमी और जवाबदेही का अभाव किसी भी जनकल्याणकारी परियोजना के उद्देश्य को कमजोर कर सकते हैं। हालांकि, देरी के वास्तविक कारणों और जिम्मेदार अधिकारियों की भूमिका की पुष्टि आधिकारिक अभिलेखों से होना जरूरी है।

गरीब मरीजों के लिए स्वास्थ्य संकट निजी अस्पतालों का खर्च वहन नहीं कर पाने वाले मरीजों के लिए सरकारी अस्पताल केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि उनकी सबसे बड़ी उम्मीद है। जब सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यवस्था अपेक्षित परिणाम नहीं देती, तो गरीब परिवारों को आर्थिक संकट, मानसिक तनाव और उपचार में देरी जैसी कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है।

अब जरूरत केवल नई घोषणा की नहीं, बल्कि परियोजना की वर्तमान स्थिति, स्वीकृत राशि, खर्च, निर्माण की समयसीमा और जिम्मेदार एजेंसियों की जानकारी सार्वजनिक करने की है। प्रशासन को स्पष्ट करना चाहिए कि काम कहां तक पहुंचा है और मरीजों को इसका लाभ कब मिलेगा।

स्वास्थ्य सेवा कोई एहसान नहीं, जनता का अधिकार है। यदि 600 करोड़ रुपये की इस परियोजना को निर्धारित उद्देश्य के अनुरूप जमीन पर नहीं उतारा गया, तो इसका असर हजारों जरूरतमंद मरीजों और उनके परिवारों पर पड़ सकता है। सरकार और स्वास्थ्य प्रशासन को घोषणाओं से आगे बढ़कर जवाबदेही, पारदर्शिता और समयबद्ध क्रियान्वयन सुनिश्चित करना होगा। क्योंकि अस्पताल की देरी का अर्थ केवल विकास का रुकना नहीं, बल्कि किसी जरूरतमंद की उम्मीद का टूटना भी है।

हेमगिरि ब्लॉक में संयुक्त जन शिकायत सुनवाई, 53 शिकायतें दर्ज

एक शिकायत का मौके पर हुआ समाधान, मुख्यमंत्री राहत कोष से सहायता के लिए भी पहुंचा आवेदन

रिपोर्ट डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र सुंदरगढ़





सुंदरगढ़ जिला प्रशासन की ओर से सोमवार को हेमगिरि ब्लॉक परिसर में संयुक्त जन शिकायत सुनवाई कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें पुलिस अधीक्षक अमृतपाल कौर और अतिरिक्त जिलाधिकारी सूरज पटनायक ने उपस्थित रहकर आम लोगों की समस्याएं एवं शिकायतें सुनीं। कार्यक्रम का उद्देश्य नागरिकों की समस्याओं को प्रशासन के समक्ष प्रस्तुत कर उनके त्वरित निराकरण की दिशा में पहल करना रहा।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, जन शिकायत सुनवाई के दौरान कुल 53 शिकायतें दर्ज की गईं। इनमें 25 व्यक्तिगत शिकायतें तथा 27 सामूहिक शिकायतें शामिल थीं। प्रशासन ने इनमें से एक शिकायत का तत्काल समाधान किया। इसके अतिरिक्त, मुख्यमंत्री राहत कोष से आर्थिक सहायता प्राप्त करने के लिए भी एक आवेदन प्रस्तुत किया गया।

कार्यक्रम में जिला परिषद के मुख्य विकास अधिकारी सह कार्यकारी अधिकारी सुरंजन साहू, सदर उपजिलाधिकारी तेजस्विनी बेहरा सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे। अधिकारियों ने लोगों की शिकायतें सुनते हुए संबंधित मामलों पर आवश्यक कार्रवाई की प्रक्रिया आगे बढ़ाई।

जनसमस्याओं के समाधान पर टिकी निगाहें जन शिकायत सुनवाई प्रशासन और आम जनता के बीच संवाद स्थापित करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हालांकि, ऐसे कार्यक्रमों की वास्तविक सफलता केवल शिकायतें दर्ज करने तक सीमित नहीं होती, बल्कि इस बात से तय होती है कि संबंधित समस्याओं का समाधान कितनी शीघ्रता और प्रभावी ढंग से किया जाता है। हेमगिरि में दर्ज शिकायतों पर आगे क्या कार्रवाई होती है और कितने आवेदकों को राहत मिलती है, इस पर क्षेत्रवासियों की निगाहें रहेंगी।

फिर हवा खराब: प्रदूषण की लौटती समस्या और हमारी जिम्मेदारी





● डॉ. विजय गर्ग



हवा जीवन का आधार है। मनुष्य भोजन के बिना कई दिन और पानी के बिना कुछ समय तक जीवित रह सकता है, लेकिन हवा के बिना कुछ मिनट भी जीवन की कल्पना करना कठिन है। इसके बावजूद विडंबना यह है कि जिस हवा पर हमारा अस्तित्व निर्भर है, उसी को हम अपनी गतिविधियों से लगातार प्रदूषित कर रहे हैं। हर वर्ष मौसम बदलने के साथ एक बार फिर समाचार सुनाई देने लगते हैं—हवा खराब हो गई है, वायु गुणवत्ता गिर रही है और लोगों को सांस लेने में परेशानी हो रही है। सवाल उठता है कि आखिर हर साल हवा खराब क्यों हो जाती है और हम इससे स्थायी मुक्ति क्यों नहीं पा रहे हैं?

हर साल लौटता प्रदूषण का संकट

भारत के अनेक शहरों, विशेषकर उत्तर भारत में, सर्दियों के दौरान वायु प्रदूषण गंभीर समस्या बन जाता है। पंजाब, हरियाणा, दिल्ली और उत्तर प्रदेश के कई क्षेत्रों में धुंध, धुएँ और प्रदूषक कणों का मिश्रण वातावरण को प्रभावित करता है। पराली जलाना इस समस्या का एक कारण है, लेकिन इसे ही संपूर्ण समस्या मान लेना वास्तविकता को अधूरा समझना होगा।

वाहनों से निकलने वाला धुआँ, उद्योगों का उत्सर्जन, निर्माण कार्यों से उड़ने वाली धूल, सड़कों की धूल, कचरा जलाना, घरेलू ईंधन और बिजली उत्पादन से होने वाला प्रदूषण भी हवा की गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं। सर्दियों में हवा की गति कम होने और वायुमंडलीय परिस्थितियों के कारण प्रदूषक जमीन के निकट जमा हो सकते हैं। परिणामस्वरूप प्रदूषण का स्तर तेजी से बढ़ जाता है।

इसलिए हवा की खराब गुणवत्ता किसी एक दिन, एक शहर या एक किसान की समस्या नहीं है। यह हमारी विकास व्यवस्था, ऊर्जा के उपयोग, परिवहन प्रणाली और पर्यावरण के प्रति हमारी सामूहिक लापरवाही से जुड़ी हुई चुनौती है।

पराली: समस्या और समाधान दोनों पर विचार जरूरी

फसल कटाई के बाद खेतों में बची पराली को जल्दी हटाने के लिए कुछ किसान उसे जला देते हैं। सीमित समय, अगली फसल की तैयारी, श्रम की लागत और मशीनों तक पहुंच जैसी समस्याएँ इस व्यवहार को बढ़ावा दे सकती हैं। पराली जलने से निकलने वाला धुआँ वायु प्रदूषण में योगदान देता है।

लेकिन किसानों को केवल दोषी ठहराने से समस्या हल नहीं होगी। उन्हें सस्ती मशीनें, समय पर सहायता, फसल अवशेष प्रबंधन के व्यावहारिक विकल्प और आर्थिक प्रोत्साहन उपलब्ध कराना आवश्यक है। पराली से जैव-ईंधन, कम्पोस्ट, पशु-आहार के उपयुक्त विकल्प तथा औद्योगिक उपयोग की संभावनाओं को बढ़ावा दिया जाना चाहिए, जहाँ वे तकनीकी और आर्थिक रूप से व्यवहार्य हों।

किसानों को पर्यावरण संरक्षण का भागीदार बनाना होगा, न कि समस्या का अकेला जिम्मेदार।

बच्चों और बुजुर्गों पर अधिक प्रभाव

प्रदूषित हवा का प्रभाव केवल दिखाई देने वाली धुंध तक सीमित नहीं रहता। हवा में मौजूद सूक्ष्म कण, विशेषकर पीएम2.5, फेफड़ों में गहराई तक पहुँच सकते हैं। लंबे समय तक इनके संपर्क में रहने से हृदय और श्वसन संबंधी बीमारियों का जोखिम बढ़ सकता है।

बच्चे, बुजुर्ग, गर्भवती महिलाएँ तथा पहले से हृदय या फेफड़ों की बीमारी से पीड़ित लोग विशेष रूप से संवेदनशील होते हैं। प्रदूषण के दिनों में खाँसी, आँखों में जलन, सांस लेने में परेशानी और अस्थमा के लक्षण बढ़ सकते हैं।

इसका प्रभाव शिक्षा, कामकाज और जीवन की गुणवत्ता पर भी पड़ता है। जब बच्चे खुले मैदान में खेलने से बचने लगें, बुजुर्ग सुबह की सैर न कर सकें और लोगों को सामान्य गतिविधियाँ सीमित करनी पड़ें, तो यह केवल पर्यावरण का नहीं, बल्कि सार्वजनिक स्वास्थ्य का संकट बन जाता है।

केवल सलाह नहीं, ठोस कार्रवाई चाहिए

वायु प्रदूषण के दौरान लोगों को मास्क पहनने, बाहर की गतिविधियाँ कम करने और सावधानी बरतने की सलाह दी जाती है। ये उपाय कुछ परिस्थितियों में उपयोगी हो सकते हैं, लेकिन इनसे प्रदूषण के मूल कारण समाप्त नहीं होते।

सरकारों को प्रदूषण के स्रोतों की पहचान करके नियमित निगरानी करनी चाहिए। सार्वजनिक परिवहन को बेहतर बनाना, स्वच्छ ऊर्जा को बढ़ावा देना, निर्माण स्थलों पर धूल नियंत्रित करना, कचरा खुले में जलाने पर प्रभावी रोक लगाना और औद्योगिक उत्सर्जन के नियमों का पालन सुनिश्चित करना आवश्यक है।

शहरों में केवल पौधे लगाने के अभियानों के बजाय मौजूदा पेड़ों और हरित क्षेत्रों की रक्षा भी जरूरी है। पेड़ पर्यावरण के लिए महत्वपूर्ण हैं, लेकिन वे वाहन उत्सर्जन, औद्योगिक धुएँ और खुले में कचरा जलाने का विकल्प नहीं बन सकते। प्रदूषण कम करने के लिए स्रोत पर नियंत्रण सबसे प्रभावी रणनीतियों में से एक है।

राज्यों के बीच समन्वय भी आवश्यक है, क्योंकि हवा प्रशासनिक सीमाओं को नहीं मानती। पंजाब, हरियाणा, दिल्ली और अन्य प्रभावित क्षेत्रों को साझा वैज्ञानिक जानकारी, बेहतर योजना और निरंतर कार्रवाई के आधार पर काम करना चाहिए।

नागरिक क्या कर सकते हैं?

प्रत्येक नागरिक का योगदान महत्वपूर्ण है। छोटी-छोटी आदतें मिलकर सकारात्मक बदलाव ला सकती हैं।

- निजी वाहन के स्थान पर जहाँ संभव हो, सार्वजनिक परिवहन, साइकिल या साझा वाहन का उपयोग करें।
- कचरा, पत्तियाँ और कृषि अवशेष खुले में न जलाएँ।
- बिजली और ईंधन की अनावश्यक खपत कम करें।
- स्थानीय वायु गुणवत्ता सूचकांक की जानकारी रखें और प्रदूषण अधिक होने पर बाहरी गतिविधियों में सावधानी बरतें।
- बच्चों, बुजुर्गों और श्वसन रोगियों की विशेष देखभाल करें।
- प्रदूषण फैलाने वाली गतिविधियों की सूचना संबंधित अधिकारियों को दें और पर्यावरण संबंधी जन-जागरूकता में भाग लें।

प्रदूषण अधिक होने पर अच्छी गुणवत्ता वाला, सही फिटिंग का एन95 या समकक्ष रेस्पिरेटर सूक्ष्म कणों के संपर्क को कम करने में मदद कर सकता है। हालांकि, कोई भी मास्क सभी प्रदूषकों से पूर्ण सुरक्षा नहीं देता।

निष्कर्ष: अगली सर्दी से पहले जागना होगा

हर साल हवा खराब होने पर चिंता व्यक्त करना और कुछ दिनों बाद सब कुछ भूल जाना पर्याप्त नहीं है। यदि प्रदूषण के कारण हर वर्ष वही संकट लौटता है, तो इसका अर्थ है कि हमारे समाधान अभी पर्याप्त प्रभावी नहीं हैं।

स्वच्छ हवा किसी विशेष वर्ग का विशेषाधिकार नहीं, बल्कि स्वस्थ जीवन की बुनियादी आवश्यकता है। इसे सुनिश्चित करना सरकार, उद्योग, किसानों और आम नागरिकों की साझा जिम्मेदारी है।

हमें ऐसा भविष्य बनाना होगा जिसमें सर्दियों का आगमन प्रदूषण के भय का संकेत न बने और बच्चों को साफ हवा में सांस लेने के लिए संघर्ष न करना पड़े।

हवा अपने आप खराब नहीं होती; हमारी गतिविधियाँ उसे खराब करती हैं। इसलिए हवा को स्वच्छ बनाने की शुरुआत भी हमारी सोच, हमारी आदतों और हमारे सामूहिक प्रयासों से ही होगी।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल। प्रख्यात शिक्षाविद्। शैक्षिक स्तंभकार
स्ट्रीट कौर चंद, एम.एच.आर., मलोट, पंजाब – 152107

पुरानी संदूक में बंद यादें, संस्कृति और बीते समय की झलक

डॉ. विजय गर्ग

हर घर की दीवारों में कुछ कहानियाँ बसी होती हैं। कुछ कहानियाँ पुरानी तस्वीरों में, कुछ दादी-नानी की यादों में और कुछ घर के किसी कोने में रखी पुरानी संदूक में छिपी होती हैं। यह संदूक केवल लकड़ी, लोहे या पीतल से बनी एक वस्तु नहीं होती, बल्कि बीते समय की यादों, पारिवारिक रिश्तों, रीति-रिवाजों और सांस्कृतिक विरासत का अनमोल खजाना होती है।

पुराने पंजाबी घरों में संदूक का विशेष स्थान हुआ करता था। घर के किसी कमरे, अटारी या पलंग के नीचे रखी संदूक में परिवार की कीमती वस्तुएँ संभालकर रखी जाती थीं। इनमें कपड़े, फुलकारियाँ, चादरें, शादी के जोड़े, पुराने पत्र, तस्वीरें, गहने और अन्य स्मृति-चिह्न शामिल होते थे। इन वस्तुओं का वास्तविक मूल्य उनकी भौतिक कीमत में नहीं, बल्कि उनसे जुड़ी भावनाओं और यादों में छिपा होता था।

संदूक और पंजाबी संस्कृति का संबंध

पुराने समय में संदूक घरेलू जीवन का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा थी। बेटियों की शादी के समय उनके लिए कपड़े, बिस्तर, फुलकारियाँ और गृहस्थी से जुड़ी आवश्यक वस्तुएँ संदूक में सँभालकर रखी जाती थीं। यह सामान केवल विवाह की तैयारी नहीं होता था, बल्कि माता-पिता के प्यार, मेहनत और बेटी के सुखी भविष्य की कामना का प्रतीक भी होता था।

माएँ और दादियाँ अपने हाथों से की गई कढ़ाई, बुनी हुई दरियाँ और तैयार की गई फुलकारियाँ बड़े चाव से संदूक में रखती थीं। इन वस्तुओं में उनकी कला, धैर्य और रचनात्मकता की झलक दिखाई देती थी। कई बार एक फुलकारी के प्रत्येक धागे में किसी माँ की मेहनत, किसी बेटी के सपने या किसी विशेष अवसर की स्मृति छिपी होती थी।

इस प्रकार संदूक एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक सांस्कृतिक विरासत पहुँचाने का माध्यम बनती थी। इसमें केवल वस्तुएँ ही नहीं, बल्कि जीवन जीने के तरीके, पारिवारिक मूल्य और परंपराएँ भी सुरक्षित रहती थीं।

पुरानी वस्तुएँ, अनमोल यादें

कल्पना कीजिए कि कई वर्षों से बंद पड़ी एक पुरानी संदूक खोली जाती है। उसमें से एक पुरानी तस्वीर मिलती है, जिसमें दादा-दादी अपनी जवानी के दिनों में मुस्कराते दिखाई देते हैं। एक पीला पड़ चुका पत्र मिलता है, जिसमें दूर रहने वाले किसी प्रियजन ने अपने दिल की बातें लिखी होती हैं। किसी कोने में बच्चे के पहले कपड़े रखे मिलते हैं और कहीं विवाह से जुड़ी कोई पुरानी निशानी पड़ी होती है।

इन वस्तुओं को देखते ही मन बीते समय में पहुँच जाता है। वे लोग याद आते हैं जो अब हमारे बीच नहीं हैं। वे घर याद आते हैं जहाँ कभी खुशियों की रौनक रहती थी। वे दिन याद आते हैं जब परिवार के सभी सदस्य एक ही आँगन में बैठकर अपने सुख-दुःख साझा करते थे।

पुराने पत्रों का अपना विशेष महत्त्व था। जब संचार के आधुनिक साधन उपलब्ध नहीं थे, तब लोग अपने दिल की बातें कागज पर लिखकर दूर बैठे प्रियजनों तक पहुँचाते थे। उन पत्रों के शब्दों में प्रतीक्षा, प्रेम, विरह और मिलने की आशा होती थी। आज मोबाइल फोन पर संदेश कुछ ही क्षणों में पहुँच जाते हैं, लेकिन हाथ से लिखे पत्र की भावनात्मक गर्माहट आज भी अनूठी है।

संदूक में झलकता सामाजिक जीवन

पुरानी संदूक हमें उस समय के सामाजिक जीवन के बारे में भी बहुत कुछ बताती है। कपड़ों की बनावट, कढ़ाई के नमूने, घरेलू उपयोग की वस्तुएँ, पुरानी किताबें और तस्वीरें यह समझने में मदद करती हैं कि लोग किस प्रकार रहते थे, कौन-से त्योहार मनाते थे और उनकी रुचियाँ कैसी थीं।

पुराने समय में वस्तुओं को सँभालकर रखने की आदत सामान्य थी। कपड़े फट जाने पर उनकी मरम्मत की जाती थी। पुरानी वस्तुओं को नया रूप देकर दोबारा इस्तेमाल किया जाता था। घरों में हाथ से काम करने की परंपरा थी और अनेक वस्तुएँ स्थानीय कारीगरों की मेहनत से तैयार होती थीं।

इस जीवनशैली में सादगी, मेहनत और संसाधनों के सम्मान का संदेश छिपा था। आज जब इस्तेमाल के बाद वस्तुओं को जल्दी फेंक देने की प्रवृत्ति बढ़ रही है, तब पुरानी संदूक हमें पुनः उपयोग, संरक्षण और जिम्मेदार उपभोग का महत्त्व याद दिलाती है।

बदलते समय में संदूक की बदलती भूमिका

समय के साथ घरों की बनावट और जीवनशैली में काफी बदलाव आया है। बड़े संयुक्त परिवारों की जगह छोटे परिवारों ने ले ली है। पुराने घरों की अटारियाँ और खुले आँगन कम होते जा रहे हैं। अलमारियों, आधुनिक भंडारण प्रणालियों और डिजिटल तस्वीरों ने काफी हद तक संदूक का स्थान ले लिया है।

आज की पीढ़ी को कई पुरानी वस्तुएँ बेकार या अर्थहीन लग सकती हैं। लेकिन यदि हम उन्हें ध्यान से देखें, तो उनमें अपने परिवार और समाज का इतिहास छिपा मिल सकता है। किसी पुरानी वस्तु को सँभालकर रखना केवल अतीत से जुड़े रहना नहीं, बल्कि अपनी जड़ों को पहचानना भी है।

इसका अर्थ यह नहीं है कि हम पुराने समय की हर बात को वर्तमान से बेहतर मानें। हर युग की अपनी अच्छाइयाँ और कमियाँ होती हैं। हमें अतीत की अच्छी परंपराओं से सीखना चाहिए और उन प्रथाओं को बदलना चाहिए जो समानता, स्वतंत्रता या मानवीय गरिमा के विरुद्ध थीं। विरासत का संरक्षण हमें बेहतर भविष्य बनाने में सहायता करना चाहिए, न कि प्रगति के मार्ग में बाधा बनना चाहिए।



विरासत को सँभालना हमारी जिम्मेदारी

आज भी अनेक परिवारों में ऐसी पुरानी संदूकें हो सकती हैं, जिनमें मूल्यवान सांस्कृतिक वस्तुएँ सुरक्षित रखी गई हों। आवश्यकता है कि हम उन्हें लापरवाही के कारण नष्ट न होने दें। पुरानी तस्वीरों में दिखाई देने वाले लोगों और अवसरों के बारे में जानकारी लिखकर रखी जा सकती है। पुराने पत्रों को सुरक्षित रखा जा सकता है। फुलकारियों, हस्तशिल्प की वस्तुओं और पारिवारिक स्मृति-चिह्नों की तस्वीरें लेकर उनका डिजिटल रिकॉर्ड तैयार किया जा सकता है।

सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि बुजुर्गों से उन वस्तुओं से जुड़ी कहानियाँ सुनी जाएँ। जब दादी अपनी फुलकारी के बारे में बताती हैं या दादा अपने बचपन की कोई याद साझा करते हैं, तो बच्चों को केवल एक कहानी नहीं मिलती, बल्कि वे अपने परिवार के इतिहास से जुड़ते हैं।

इससे पीढ़ियों के बीच संवाद बढ़ता है और बच्चों में अपनी सांस्कृतिक विरासत के प्रति सम्मान पैदा होता है। विद्यालय, पुस्तकालय और सामाजिक संस्थाएँ भी विरासत प्रदर्शनियों, कहानी सुनाने के कार्यक्रमों तथा पारंपरिक घरेलू वस्तुओं की प्रदर्शनियों के माध्यम से इस दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

निष्कर्ष

संदूक में बंद यादें वास्तव में कभी बंद नहीं होतीं। वे इस प्रतीक्षा में रहती हैं कि कोई उन्हें खोले, उनके महत्त्व को समझे और अगली पीढ़ी तक पहुँचाए। संदूक में रखी प्रत्येक वस्तु अपने भीतर किसी व्यक्ति की मेहनत, किसी रिश्ते की गर्माहट या किसी युग की कहानी सँजोए हो सकती है।

आधुनिकता को अपनाते हुए अपनी जड़ों से जुड़े रहना भी उतना ही आवश्यक है। यदि हम अपनी पुरानी यादों, पारिवारिक धरोहरों और सांस्कृतिक निशानियों को सँभालकर रखेंगे, तो आने वाली पीढ़ियाँ अपने अतीत को बेहतर ढंग से समझ सकेंगी।

क्योंकि पुरानी संदूक केवल वस्तुएँ रखने का स्थान नहीं, बल्कि समय, रिश्तों, यादों और संस्कृति को सँजोकर रखने वाला एक अनमोल

बहिष्कार से सम्मान तक: नोबेल पुरस्कार तक महिलाओं का सफर

डॉ. विजय गर्ग

नोबेल पुरस्कार दुनिया के सबसे प्रतिष्ठित सम्मानों में से एक है। यह विज्ञान, साहित्य, शांति और मानव कल्याण के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने वाले व्यक्तियों को सम्मानित करता है। वर्ष 1901 में शुरू हुए इस पुरस्कार ने उन लोगों के विचारों, खोजों और प्रयासों को मान्यता दी है, जिन्होंने मानव ज्ञान और समाज को नई दिशा प्रदान की है। हालांकि, नोबेल पुरस्कार का इतिहास एक सामाजिक सच्चाई को भी उजागर करता है—इसके विजेताओं में लंबे समय तक महिलाओं की संख्या बहुत कम रही है। बहिष्कार से सम्मान तक महिलाओं का यह सफर न केवल लैंगिक समानता की प्रगति को दर्शाता है, बल्कि उन बाधाओं को भी सामने लाता है, जो प्रतिभा को उसका उचित सम्मान मिलने से रोकती रही हैं।

सदियों तक महिलाओं को शिक्षा, वैज्ञानिक अनुसंधान, संपत्ति के अधिकार और व्यावसायिक उन्नति के अवसरों में अनेक प्रतिबंधों का सामना करना पड़ा। कई समाजों में उच्च शिक्षा को मुख्य रूप से पुरुषों का अधिकार माना जाता था। असाधारण बौद्धिक क्षमता रखने वाली महिलाओं के लिए विश्वविद्यालयों में प्रवेश लेना, अनुसंधान के अवसर प्राप्त करना और अपने निष्कर्ष प्रकाशित करवाना कठिन होता था। कई बार उनकी महत्वपूर्ण खोजों को अनदेखा कर दिया जाता था, उनका श्रेय पुरुष सहकर्मियों को दे दिया जाता था या उनके योगदान को बहुत देर बाद मान्यता मिलती थी।

नोबेल पुरस्कार की शुरुआत भी ऐसे असमान सामाजिक वातावरण में हुई। इसलिए शुरुआती दशकों में महिलाओं की कम भागीदारी को केवल व्यक्तिगत उपलब्धियों के अंतर के रूप में नहीं देखा जा सकता। इसके पीछे शिक्षा, अनुसंधान सुविधाओं, व्यावसायिक संपर्कों और निर्णय लेने वाले पदों तक असमान पहुंच जैसे कारण भी थे।

मैरी क्यूरी महिलाओं की वैज्ञानिक प्रतिभा का एक असाधारण उदाहरण हैं। वर्ष 1903 में उन्होंने पियरे क्यूरी और हेनरी बेकरेल के साथ विकिरण पर शोध के लिए भौतिकी का नोबेल पुरस्कार प्राप्त किया। वर्ष 1911 में उन्हें रेडियम और पोलोनियम की खोज तथा रेडियम पर अनुसंधान के लिए रसायन विज्ञान का नोबेल पुरस्कार मिला। वह नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाली पहली महिला थीं और आज भी दो अलग-अलग वैज्ञानिक विषयों में नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाली एकमात्र व्यक्ति हैं। उनकी उपलब्धियों ने महिलाओं की बौद्धिक क्षमता के बारे में प्रचलित धारणाओं को चुनौती दी और आने वाली पीढ़ियों के लिए नए रास्ते खोले।

अन्य महिलाओं ने भी इस मार्ग पर कदम बढ़ाए, हालांकि प्रगति धीमी रही। बर्था वॉन सटनर को शांति के लिए किए गए प्रयासों के लिए 1905 में नोबेल शांति पुरस्कार मिला। सेल्मा लागरलोफ 1909 में साहित्य का नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाली पहली महिला बनीं। इन उपलब्धियों ने सिद्ध किया कि महिलाओं का योगदान विज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि साहित्य और विश्व शांति के क्षेत्रों में भी उनका महत्वपूर्ण स्थान है।

इसके बावजूद, महिलाओं को समान रूप से मान्यता नहीं मिली। कई दशकों तक भौतिकी, रसायन विज्ञान और शरीर विज्ञान या चिकित्सा के क्षेत्रों में महिला नोबेल विजेताओं की संख्या बहुत कम रही। नियुक्तियों, अनुसंधान के लिए वित्तीय सहायता, नेतृत्व के अवसरों और व्यावसायिक सम्मान में भेदभाव ने इस असमानता को और बढ़ाया।

रोज़ालिंड फ्रैंकलिन का उदाहरण वैज्ञानिक योगदान और ऐतिहासिक मान्यता के बीच जटिल संबंध को दर्शाता है। एक्स-रे विवर्तन पर उनका अनुसंधान डीएनए की संरचना को समझने में अत्यंत महत्वपूर्ण था। हालांकि, वर्ष 1962 में न्यूक्लिक अम्लों की आणविक संरचना से संबंधित खोजों के लिए नोबेल पुरस्कार जेम्स वॉटसन, फ्रांसिस क्रिक और मॉरिस विल्किंस को दिया गया। फ्रैंकलिन का निधन 1958 में हो चुका था और सामान्यतः नोबेल पुरस्कार मरणोपरांत नहीं दिया जाता। उनकी कहानी आज भी यह प्रश्न उठाती है कि महिलाओं के वैज्ञानिक योगदानों को कितनी निष्पक्षता से पहचाना और याद रखा जाता है।

समय के साथ शिक्षा सुधारों, महिला अधिकार आंदोलनों और बदलती सामाजिक सोच ने महिलाओं के लिए नए अवसर पैदा किए। अधिक महिलाओं ने विश्वविद्यालयों में प्रवेश लिया, उच्चस्तरीय अनुसंधान किया और नेतृत्व के पदों तक पहुंचीं। उनकी उपलब्धियों ने यह सिद्ध किया कि बौद्धिक क्षमता का निर्धारण लिंग से नहीं होता।

वर्ष 2020 में एंड्रिया गेज़ ने हमारी आकाशगंगा के केंद्र में एक अतिविशाल सघन वस्तु की खोज के लिए भौतिकी का नोबेल पुरस्कार साझा किया। इसी वर्ष इमैनुएल शार्पेंतिए और जेनिफर डाउडना को जीन संपादन की विधि विकसित करने के लिए रसायन विज्ञान का नोबेल पुरस्कार मिला। वर्ष 2023 में कैटलिन कारिको ने एमआरएनए टीकों के विकास को संभव बनाने वाली खोजों के लिए शरीर विज्ञान या चिकित्सा का नोबेल पुरस्कार साझा किया। ये उपलब्धियां आधुनिक विज्ञान में महिलाओं के परिवर्तनकारी योगदान को दर्शाती हैं।

शांति, साहित्य और मानवाधिकारों के क्षेत्रों में भी महिलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मलाला यूसुफजई को प्रत्येक बच्चे के शिक्षा के अधिकार के लिए संघर्ष करने के कारण 2014 में नोबेल शांति पुरस्कार मिला। वर्ष 2021 में फिलिपीनी-अमेरिकी पत्रकार मारिया रेसा ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की रक्षा के प्रयासों के लिए यह पुरस्कार साझा किया। इन सम्मानों ने सामाजिक अन्याय का विरोध करने, लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा करने और मानवीय गरिमा को बढ़ावा देने में महिलाओं की भूमिका को उजागर किया है।

इस प्रगति के बावजूद, पूर्ण समानता का लक्ष्य अभी दूर है। नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाली महिलाओं की संख्या बढ़ना महत्वपूर्ण है, लेकिन उद्देश्य केवल संख्या बढ़ाना नहीं होना चाहिए। वास्तविक लक्ष्य ऐसी संस्थाओं का निर्माण करना है, जहां प्रत्येक शोधकर्ता, लेखक और शांति कार्यकर्ता को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने तथा उचित मान्यता प्राप्त करने का निष्पक्ष अवसर मिले।

विश्वविद्यालयों और अनुसंधान संस्थानों को संसाधनों तक समान पहुंच, पारदर्शी मूल्यांकन प्रक्रिया, पदोन्नति के निष्पक्ष अवसर और भेदभाव से सुरक्षा सुनिश्चित करनी चाहिए। विद्यालयों को लड़कियों को गणित, विज्ञान, प्रौद्योगिकी और अनुसंधान के क्षेत्रों में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। छात्रवृत्तियां, मार्गदर्शन और सहयोगपूर्ण वातावरण प्रतिभाशाली महिलाओं को संरचनात्मक बाधाओं से उबरने में मदद कर सकते हैं।

पुरस्कार समितियों और वैज्ञानिक संस्थानों को उन योगदानों पर भी ध्यान देना चाहिए, जिन्हें अतीत में अनदेखा किया गया। वैज्ञानिक प्रगति सामान्यतः किसी एक व्यक्ति का कार्य नहीं होती; इसमें टीमों, संस्थानों और कई पीढ़ियों के शोधकर्ताओं का योगदान शामिल होता है। सभी योगदानों को निष्पक्ष मान्यता देने से पुरस्कारों की विश्वसनीयता और विज्ञान के प्रति जनता का विश्वास मजबूत होता है।

नोबेल पुरस्कार तक महिलाओं का सफर साहस, दृढ़ता और बदलते सामाजिक मूल्यों की कहानी है। मैरी क्यूरी की अग्रणी उपलब्धियों से लेकर आनुवंशिकी, चिकित्सा और खगोल विज्ञान की आधुनिक खोजों तक, महिलाओं ने बार-बार साबित किया है कि वे मानव ज्ञान की सीमाओं का विस्तार कर सकती हैं।

44वीं वाहिनी SSB में सतर्कता जागरूकता सप्ताह पर कमांडेंट ने दिलाई सत्यनिष्ठा की शपथ

'सत्यनिष्ठा से समृद्धि' के संदेश के साथ भ्रष्टाचार मुक्त भारत के निर्माण का लिया संकल्प, ईमानदारी और पारदर्शिता पर दिया गया जोर

परिवहन विशेष न्यूज



नरकटियागंज: सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2026 के अवसर पर सोमवार को 44वीं वाहिनी सशस्त्र सीमा बल (SSB), नरकटियागंज में कमांडेंट श्री बलवंत सिंह नेगी के नेतृत्व में शपथ ग्रहण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। वाहिनी मुख्यालय सहित सभी सीमा चौकियों पर आयोजित इस कार्यक्रम में अधिकारियों एवं जवानों ने 'सत्यनिष्ठा से समृद्धि' के संदेश के साथ ईमानदारी, पारदर्शिता और जवाबदेही के मूल्यों को अपनाने की शपथ ली।

कार्यक्रम का उद्देश्य भ्रष्टाचार के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूकता फैलाना तथा सभी कार्मिकों को अपने कर्तव्यों का निर्वहन पूर्ण निष्ठा, निष्पक्षता और ईमानदारी के साथ करने के लिए प्रेरित करना था। इस दौरान कार्मिकों को भ्रष्टाचार के विरुद्ध सजग रहने, सरकारी कार्यों में पारदर्शिता बनाए रखने और दैनिक कार्यों में उच्च नैतिक मूल्यों का पालन करने का संदेश दिया गया।

कार्यक्रम में इस बात पर विशेष जोर दिया गया कि भ्रष्टाचार मुक्त प्रशासन और सुदृढ़ राष्ट्र के निर्माण में प्रत्येक अधिकारी एवं कर्मचारी की महत्वपूर्ण भूमिका है। सभी कार्मिकों से अपने आचरण एवं कार्यशैली में सत्यनिष्ठा को सर्वोच्च प्राथमिकता देने तथा भ्रष्टाचार के प्रति शून्य सहनशीलता की नीति अपनाने की अपील की गई।

44वीं वाहिनी सशस्त्र सीमा बल ने ईमानदारी, अनुशासन, पारदर्शिता एवं जवाबदेही के मूल्यों को बनाए रखने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। सतर्कता जागरूकता सप्ताह के माध्यम से समाज में नैतिक मूल्यों को मजबूत करने और भ्रष्टाचार मुक्त भारत के संकल्प को साकार करने का संदेश दिया गया।

इस अवसर पर उप कमांडेंट श्री ज्ञानेंद्र कुमार, उप कमांडेंट श्री मो. हसनैन खान, प्रचार अधिकारी, सहायक कमांडेंट (संचार) श्री रियास पी., सहायक कमांडेंट एवं चिकित्सा अधिकारी डॉ. कुंदन जायसवाल, श्री सुधांशु कुमार (जीडीएमओ) सहित वाहिनी मुख्यालय के सभी अधीनस्थ अधिकारी एवं कार्मिक उपस्थित रहे।

एक बूथ पर 1200 से ज्यादा वोटर नहीं होंगे

परिवहन विशेष न्यूज

गोरखपुर। विधानसभा चुनाव 2027 की तैयारियों को लेकर जिलाधिकारी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी दीपक मीणा ने राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों और ईआरओ के साथ समीक्षा बैठक की।बैठक में तय हुआ कि निर्वाचन आयोग के नए निर्देश के अनुसार अब किसी भी मतदेय स्थल पर 1200 से अधिक मतदाता नहीं रखे जाएंगे। इसी मानक पर बूथों के पुनर्गठन पर मंथन हुआ। अंतिम निर्णय एक-दो दिन में लिया जाएगा। बैठक में भाजपा, सपा, कांग्रेस, आप, बसपा, सीपीआई सहित सभी दलों के प्रतिनिधि मौजूद रहे। बैठक में उप जिला निर्वाचन अधिकारी जय प्रकाश, ईआरओ कुनाल रस्तोगी, मुकुल खंडेलवाल, ज्ञान प्रताप सिंह, रवि सिंह, आलोक रंजन सिंह, मलखान सिंह, मनीष कुमार, नमन मेहता, पवन कुमार जायसवाल और सहायक जिला निर्वाचन अधिकारी शंकर मिश्रा मौजूद रहे।

आज सुबह 8 बजे से होगी मतगणना

परिवहन विशेष न्यूज



गोरखपुर। गोरखपुर-फैजाबाद खंड शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र के विधान परिषद सदस्य चुनाव की मतगणना आज मंगलवार, 27 अक्टूबर को सुबह 8 बजे से दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के वाणिज्य संकाय भवन में होगी।

43,433 मतों की गिनती के लिए 14 टेबल लगाए गए हैं, प्रत्येक टेबल पर 5 कर्मी तैनात रहेंगे। सबसे पहले मतपत्रों की छंटनी और वैधता की जांच होगी, फिर पहली वरीयता के मतों की गिनती होगी। पहली वरीयता से परिणाम तय न होने पर दूसरी वरीयता के मतों की गणना की जाएगी। मतगणना स्थल का निरीक्षण मंडलायुक्त एवं रिटर्निंग ऑफिसर इंद्र विक्रम सिंह और जिलाधिकारी दीपक मीणा ने सोमवार को किया। इस दौरान अपर आयुक्त अजय राय, एडीएम वित्त जय प्रकाश मौजूद रहे। सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए हैं।

ईएसटीआईसी 2026 विज्ञान को विकसित भारत की आकांक्षाओं से जोड़ना - डॉ.जितेंद्र सिंह

(संतोष कुमार सिंह)



वाराणसी :- लेखक डॉ.जितेंद्र सिंह विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के केंद्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और प्रधानमंत्री कार्यालय,परमाणु ऊर्जा विभाग,अंतरिक्ष विभाग तथा कार्मिक,लोक शिकायत एवं पेंशन मंत्रालय में राज्य मंत्री ने अपने लेखनी मे बताया की समाज में परिवर्तन लाने का सबसे महत्वपूर्ण आधार मुख्य रूप से विज्ञान से ही आएगा । 28 फरवरी 2006 को भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ.ए.पी.जे.अब्दुल कलाम ने राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के अवसर पर राष्ट्र के नाम अपने संबोधन में ये शब्द कहे थे । लगभग दो दशक बाद डॉ.कलाम के ये शब्द पूरी तरह सही साबित हो रहे हैं । प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत तकनीक आधारित विकास को गति देते हुए 'विकसित भारत' की दिशा में आगे बढ़ रहा है। भारत की इस प्रगति पर पूरी दुनिया का ध्यान गया है और उसने इसे स्वीकार भी किया है।

विज्ञान का महत्व केवल इस बात में नहीं है कि हम क्या खोजते हैं बल्कि इस बात में भी है कि हमारी खोजें देश के लोगों के लिए क्या-क्या संभव बनाती हैं । वैज्ञानिक प्रगति का वास्तविक मूल्य लोगों के जीवन को बेहतर बनाने,समस्याओं का समाधान करने और नए अवसर पैदा करने की उसकी क्षमता में निहित है।

भारत तेजी से आगे बढ़ रहा है। एक विकसित राष्ट्र बनने की आकांक्षाएं केवल आर्थिक विकास और आधुनिक बुनियादी ढांचे तक सीमित नहीं हैं इनमें बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं,अधिक उत्पादक कृषि,मजबूत उद्योग, युवाओं के लिए अधिक अवसर और प्रत्येक नागरिक के जीवन स्तर में सुधार भी शामिल हैं । इन सभी आकांक्षाओं को पूरा करने में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की महत्वपूर्ण भूमिका है हमारा दायित्व यह सुनिश्चित करना है कि हम जो ज्ञान विकसित करें, वह सार्थक बदलाव लाने का माध्यम बने।

यही उभरते विज्ञान,प्रौद्योगिकी एवं नवाचार सम्मेलन (ईएसटीआईसी) 2026 का व्यापक उद्देश्य है अपने दूसरे संस्करण में ईएसटीआईसी वर्ष 2025 में शुरू हुए राष्ट्रीय संवाद को आगे बढ़ा रहा है इसका उद्देश्य वैज्ञानिक अनुसंधान, तकनीकी नवाचार और उनके व्यावहारिक उपयोग के बीच संबंधों को और मजबूत करना है यह सम्मेलन वैज्ञानिकों,नीति निर्माताओं,उद्योग जगत के अग्रणी लोगों,स्टार्टअप से जुड़े उद्यमियों और युवा शोधकर्ताओं को एक साझा राष्ट्रीय लक्ष्य के लिए एक मंच पर लाता है । हमारे सामने कुछ सबसे महत्वपूर्ण सवाल ऐसे हैं जिनका समाधान तत्काल आवश्यक है वैज्ञानिक प्रगति किसानों की उत्पादकता बढ़ाने में किस तरह मदद कर सकती है? अनुसंधान के माध्यम से स्वास्थ्य सेवाओं को अधिक सुलभ और प्रभावी कैसे बनाया जा सकता है? भारतीय उद्योग उन्नत प्रौद्योगिकियां कैसे विकसित कर सकते हैं वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा कैसे कर सकते हैं और महत्वपूर्ण वस्तुओं के आयात पर निर्भरता कैसे कम कर सकते हैं? अनुसंधान,नवाचार और उद्यमिता के माध्यम से युवाओं के लिए नए अवसर कैसे पैदा किए जा सकते हैं?

इन सवालों का जवाब कोई एक संस्थान या विषय अपने दम पर नहीं दे सकता इसके लिए वैज्ञानिकों को उद्योग जगत के साथ मिलकर काम करना होगा, शोधकर्ताओं को व्यावहारिक जरूरतों को समझना होगा और नीति निर्माताओं को ऐसा वातावरण तैयार करना होगा जिसमें संभावनाओं से भरे विचारों को परखा और विकसित किया जा सके । ईएसटीआईसी 2026 इस आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए 12 विषयगत क्षेत्रों पर केंद्रित है इनमें उन्नत विनिर्माण,ऊर्जा प्रौद्योगिकी, जैव प्रौद्योगिकी,महासागर विज्ञान एवं समुद्री प्रौद्योगिकी,क्वांटम संचार, सेमीकंडक्टर,कृषि प्रौद्योगिकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता,रोबोटिक्स, उन्नत स्वास्थ्य सेवा,इमर्सिव प्रौद्योगिकी और अंतरिक्ष विज्ञान शामिल हैं इनमें से प्रत्येक क्षेत्र में ऐसी संभावनाएं हैं जिनका दायरा प्रयोगशालाओं से कहीं आगे तक फैला हुआ है । सेमीकंडक्टर के क्षेत्र में प्रगति भारत की तकनीकी क्षमताओं को मजबूत कर सकती है जैव प्रौद्योगिकी में अनुसंधान स्वास्थ्य सेवाओं और विनिर्माण के क्षेत्र में नए रास्ते खोल सकता है । कृत्रिम बुद्धिमत्ता और रोबोटिक्स में होने वाले विकास औद्योगिक प्रक्रियाओं को बदल सकते हैं जबकि कृषि और ऊर्जा के क्षेत्र में वैज्ञानिक कार्य अधिक कुशल एवं टिकाऊ कार्यप्रणालियों को बढ़ावा दे सकते हैं । सबसे बड़ी चुनौती इन संभावनाओं को व्यावहारिक उपयोग में बदलने की है किसी वैज्ञानिक खोज में वर्षों का अनुसंधान लग सकता है लेकिन उसे रोजमर्रा के उपयोग में लाने के लिए अक्सर आगे के परीक्षण, निवेश,इंजीनियरिंग और आपसी सहयोग की जरूरत होती है हमें इस पूरी प्रक्रिया को मजबूत करना होगा,ताकि अनुसंधान से जुड़े शुरुआती सवाल से लेकर ऐसी तकनीक विकसित करने तक का सफर पूरा हो सके जो वास्तविक लाभ पहुंचाए।

भारत की वैज्ञानिक महत्वाकांक्षाएं अंततः उसके युवाओं की प्रतिभा और कल्पनाशीलता पर निर्भर करेंगी । किसी युवा शोधकर्ता के पास कोई संभावनाशील विचार है, तो उसे उसे प्रस्तुत करने,अनुभवी वैज्ञानिकों से सीखने और ऐसे लोगों से जुड़ने का अवसर मिलना चाहिए जो उस विचार को उपयोगी रूप देने में मदद कर सकें । ईएसटीआईसी 2026 'फ्रंटियर्स इन फोकस' सत्रों और 'यंग रिसर्चर्स एंड इनोवेटर्स पिच कॉर्नर' के माध्यम से इस प्रक्रिया को प्रोत्साहित करने का प्रयास करता है। 'नेक्स्ट-जेन डिस्कवरी एक्सपो' में भारत की अनुसंधान क्षमताओं और उभरते डीप-टेक तंत्र को प्रदर्शित किया जाएगा जबकि 'इनोवेशन एक्सचेंज हब' तकनीकों और संभावित सहयोग के अवसरों पर संवाद को बढ़ावा देगा।

वैज्ञानिक अनुसंधान और उद्यमिता को तेजी से एक-दूसरे का पूरक बनना होगा । विशेष रूप से डीप-टेक उद्यमों को किसी तकनीक को बाजार तक पहुंचाने से पहले अक्सर विशेष बुनियादी ढांचे, धैर्य के साथ किए जाने वाले निवेश और निरंतर सहयोग की आवश्यकता होती है। अनुसंधान संस्थानों के पास वैज्ञानिक विशेषज्ञता है स्टार्टअप उद्यमशीलता की ऊर्जा लेकर आते हैं,उद्योग जगत उत्पादन संबंधी आवश्यकताओं और बाजार की जरूरतों को समझता है जबकि निवेशक इस पूरी प्रक्रिया के लिए वित्तीय सहायता उपलब्ध करा सकते हैं जब ये सभी क्षमताएं एक साथ आती हैं तो अनुसंधान को उपयोगी उत्पादों और सेवाओं में बदलने की संभावनाएं बढ़ जाती हैं।

ईएसटीआईसी 2026 ऐसी साझेदारियों को प्रोत्साहित करने का अवसर प्रदान करता है। इसके तकनीकी सत्रों और प्रदर्शनियों का उद्देश्य केवल उपलब्धियों को प्रदर्शित करना नहीं है बल्कि ऐसे संवाद और विचारों के आदान-प्रदान को बढ़ावा देना भी है जिनसे आपसी सहयोग के नए रास्ते खुल सकें । विकसित भारत @2047 की यात्रा का निर्माण केवल सरकार के प्रयासों से नहीं हो सकता। न ही इसे वैज्ञानिक अनुसंधान के अलग-थलग प्रयासों के माध्यम से हासिल किया जा सकता है इसके लिए अनुसंधान संस्थानों, विश्वविद्यालयों,उद्योग जगत, उद्यमियों और युवा नवाचारकर्ताओं के संयुक्त प्रयासों की आवश्यकता है । डॉ.कलाम के शब्द आज भी हमें याद दिलाते हैं कि विज्ञान का अंतिम उद्देश्य समाज की सेवा करना होना चाहिए। विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ते हुए हमारी सफलता केवल इस बात पर निर्भर नहीं करेगी कि हम कौन-सी खोजें करते हैं बल्कि इस बात पर भी निर्भर करेगी कि उन खोजों से लोगों के जीवन में कितना बदलाव आता है ।

यही ईएसटीआईसी 2026 के पीछे की व्यापक आकांक्षा है। भारत की वैज्ञानिक क्षमताओं को उसके लोगों की जरूरतों के और करीब लाना तथा नवाचार की संभावनाओं को राष्ट्र की प्रगति में बदलना । (लेखक डॉ.जितेंद्र सिंह विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के केंद्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और प्रधानमंत्री कार्यालय,परमाणु ऊर्जा विभाग,अंतरिक्ष विभाग तथा कार्मिक,लोक शिकायत एवं पेंशन मंत्रालय में राज्य मंत्री हैं)।।

एसएसबी उप-महानिरीक्षक ने 84 एनसीसी कैडेट्स को दिया राष्ट्रसेवा का मंत्र, सीमा सुरक्षा और करियर निर्माण पर किया मार्गदर्शन

सोनपथरी सीमा चौकी के भ्रमण के दौरान सशस्त्र सीमा बल की भूमिका, अनुशासन, नेतृत्व क्षमता और सीएपीएफ में करियर के अवसरों से कराया अवगत



भिनगा। 26 अक्टूबर 2026। सशस्त्र सीमा बल (एसएसबी) के उप-महानिरीक्षक श्री वी. विक्रमण एवं 62वीं वाहिनी के कमांडेंट श्री अमरेन्द्र कुमार वरुण ने सोमवार को सीमा चौकी सोनपथरी का भ्रमण करने पहुंचे एनसीसी कैडेट्स को सीमा सुरक्षा, राष्ट्रसेवा, अनुशासन और करियर निर्माण के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी देकर प्रेरित किया। इस दौरान अधिकारियों ने कैडेट्स को राष्ट्र के प्रति समर्पण, कर्तव्यनिष्ठा और नेतृत्व क्षमता जैसे गुणों को अपने जीवन में अपनाने का संदेश दिया।

, 25 अक्टूबर 2026 को एसएसबी क्षेत्रक मुख्यालय लखीमपुर-खीरी के उप-महानिरीक्षक श्री वी. विक्रमण एवं 62वीं वाहिनी, भिनगा के कमांडेंट श्री अमरेन्द्र कुमार वरुण ने वाहिनी के अंतर्गत सीमा चौकी सोनपथरी का आधिकारिक भ्रमण किया और रात्रि विश्राम किया। इसी क्रम में 26 अक्टूबर को 51वीं उत्तर प्रदेश बटालियन एनसीसी, बलरामपुर के तत्वावधान में आयोजित 'ऑल इंडिया यूपी ट्रेक-II' कार्यक्रम के तहत 2nd जम्मू-कश्मीर बटालियन एनसीसी, जम्मू के 84 कैडेट्स ने सोनपथरी सीमा चौकी का शैक्षणिक भ्रमण किया। कैडेट्स का नेतृत्व एनसीसी अधिकारी श्री अनिल कुमार शर्मा, श्री संदीप केरी एवं श्री राजेश्वर सिंह तथा हवलदार ज्ञान बहादुर और हवलदार रजनीश सिंह ने किया।

इस अवसर पर उप-महानिरीक्षक श्री वी. विक्रमण और कमांडेंट श्री अमरेन्द्र कुमार वरुण ने एनसीसी अधिकारियों एवं कैडेट्स को संबोधित करते हुए सशस्त्र सीमा बल के गौरवशाली इतिहास, इसकी कर्तव्यनिष्ठ परंपराओं तथा भारत-नेपाल सीमा की सुरक्षा में बल की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में विस्तार से बताया। अधिकारियों ने सीमावर्ती क्षेत्रों में सुरक्षा बलों की जिम्मेदारियों और चुनौतियों से भी कैडेट्स को अवगत कराया। साथ ही, सुहेलवा वन्यजीव क्षेत्र एवं सोनपथरी के भौगोलिक, प्राकृतिक और पर्यावरणीय महत्व की जानकारी देकर प्रकृति एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक किया।

अधिकारियों ने कहा कि राष्ट्रसेवा केवल एक जिम्मेदारी नहीं, बल्कि समर्पण, अनुशासन और कर्तव्यपरायणता से जुड़ा संकल्प है। उन्होंने कैडेट्स को साहस, नेतृत्व क्षमता, राष्ट्रीय एकता और देशभक्ति की भावना को मजबूत करने के लिए प्रेरित किया। इसके साथ ही केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों (सीएपीएफ) में करियर बनाने के इच्छुक युवाओं को भर्ती प्रक्रिया, आवश्यक शैक्षणिक योग्यता, शारीरिक दक्षता और नियमित अभ्यास के महत्व के बारे में उपयोगी मार्गदर्शन दिया।

इस भ्रमण का मुख्य उद्देश्य एनसीसी कैडेट्स में राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रीय एकता, अनुशासन और सुरक्षा बलों के प्रति सम्मान की भावना को मजबूत करना तथा उन्हें भविष्य में राष्ट्रसेवा के लिए प्रेरित करना था। भ्रमण के दौरान कैडेट्स ने सीमा सुरक्षा बलों की कार्यप्रणाली, सीमावर्ती क्षेत्र की भौगोलिक परिस्थितियों और क्षेत्र की प्राकृतिक विशेषताओं के बारे में महत्वपूर्ण जानकारियां प्राप्त कीं।

यह शैक्षणिक एवं प्रेरणादायी भ्रमण कैडेट्स के लिए यादगार अनुभव साबित हुआ। अधिकारियों के मार्गदर्शन से कैडेट्स को न केवल देश की सीमाओं की सुरक्षा में तैनात जवानों के दायित्वों को समझने का अवसर मिला, बल्कि भविष्य में सुरक्षा बलों में शामिल होकर देशसेवा करने की दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा भी मिली।

विश्व सनातन संस्थानम्के प्रदेश अध्यक्ष बने ओम प्रकाश यादव,काशी मे प्रथम आगमन पर हुआ भव्य स्वागत एवं सम्मान

विश्व सनातन संस्थानम् की कार्यकारिणी का विस्तार,सनातन धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए नई जिम्मेदारियां सौंपी गईं आदि गुरु शंकराचार्य और स्वामी विवेकानंद के आदर्शों पर चलेगा संस्थान, सनातन धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए विश्वभर में अभियान चलाने का आह्वान-डॉ.संतोष आचार्य

(संतोष कुमार सिंह)



वाराणसी :- विश्व सनातन संस्थानम्की ओर से 26 अक्टूबर 2026 सोमवार को चिरईगांव ब्लॉक के संदहा रिंग रोड स्थित होटल सिल्वेनिया पैलेस में पत्रकार वार्ता का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विश्व हिंदू महासंघ के प्रदेश महामंत्री ओम प्रकाश यादव को विश्व सनातन संस्थानम्का प्रदेश अध्यक्ष बनाए जाने के बाद उनके प्रथम काशी आगमन पर जोरदार स्वागत एवं सम्मान किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने उनका अभिनंदन करते हुए सनातन धर्म के प्रचार-प्रसार और संगठन को मजबूत बनाने के संकल्प को दोहराया।

इस दौरान नवनियुक्त प्रदेश अध्यक्ष ओम प्रकाश यादव ने वाराणसी जनपद के नवनियुक्त पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए सनातन धर्म के उत्थान,संरक्षण एवं संवर्धन के लिए सजग प्रहरी के रूप में कार्य करने का आह्वान किया। उन्होंने संगठन के उद्देश्यों को जन- जन तक पहुंचाने,सनातन संस्कृति की परंपराओं को संरक्षित करने तथा संगठनात्मक गतिविधियों को गति देने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश भी दिए।

कार्यकारिणी का विस्तार,कई पदाधिकारियों को मिली नई जिम्मेदारी

संगठन को और अधिक सशक्त बनाने के उद्देश्य से प्रदेश अध्यक्ष ओम प्रकाश यादव ने अपनी कार्यकारिणी का विस्तार करते हुए विभिन्न पदों पर नई नियुक्तियों की घोषणा की। इसके अंतर्गत विश्व हिंदू महासंघ की पूर्व प्रदेश अध्यक्षा निशा ठाकुर चौहान को उत्तर प्रदेश का सोशल मीडिया प्रभारी नियुक्त किया गया वहीं आनंद जी टंडन को प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की जिम्मेदारी सौंपी गई।

इसके अतिरिक्त संघर्षों के साथी राम प्रसाद यादव को प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य एवं जिला संरक्षक,प्रयागराज की जिम्मेदारी दी गई। मथुरा निवासी डॉ.नवीन गुप्ता तथा महोबा निवासी भगवान सिंह यादव को प्रदेश उपाध्यक्ष मनोनीत किया गया। नवनियुक्त पदाधिकारियों से संगठन की नीतियों एवं उद्देश्यों के अनुरूप सक्रियता से कार्य करते हुए सनातन धर्म की विचारधारा को व्यापक स्तर पर प्रसारित करने की अपेक्षा जताई गई।

आदि गुरु शंकराचार्य एवं स्वामी विवेकानंद के आदर्शों पर चलने का आह्वान

पत्रकार वार्ता के दौरान विश्व सनातन संस्थानम्के संस्थापक अध्यक्ष डॉ.संतोष आचार्य ने सनातन धर्म की गौरवशाली परंपरा,भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिक मूल्यों को विश्वभर में प्रतिष्ठित करने पर जोर दिया। उन्होंने आदि गुरु शंकराचार्य एवं स्वामी विवेकानंद के पदचिह्नों पर चलते हुए संस्थान के अंतरराष्ट्रीय संरक्षक नेपाल राष्ट्र के राजा श्री निक्ष शमशेर जंग बहादुर राणा के नेतृत्व में पूरे विश्व में सनातन धर्म का प्रचार-प्रसार करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि सनातन संस्कृति के मूल सिद्धांतों और आध्यात्मिक संदेश को जन- जन तक पहुंचाने के लिए सभी कार्यकर्ताओं को समर्पण एवं एकजुटता के साथ कार्य करना चाहिए।

नव दिवसीय अष्टम अश्वमेध यज्ञ में शामिल होने का आमंत्रण

कार्यक्रम में अंतरराष्ट्रीय मातेश्वरी परिवार की ओर से राष्ट्रीय महासचिव धर्मानंद पांडेय ने आगामी आठ फरवरी से वाराणसी में मां गंगा के पावन तट पर बाबा विश्वनाथ की नगरी में प्रारंभ होने जा रहे नव दिवसीय अष्टम अश्वमेध यज्ञ की जानकारी दी। उन्होंने सभी सनातनी भाइयों से इस धार्मिक आयोजन में सहभागिता करने का आह्वान किया उन्होंने बताया कि इस आयोजन में विश्व सनातन संस्थानम्-सहयोगी के रूप में अपनी भूमिका निभाएगा।

कार्यक्रम के दौरान संगठन की भावी योजनाओं,सनातन धर्म के उत्थान तथा विभिन्न क्षेत्रों में संगठनात्मक गतिविधियों को विस्तार देने पर भी चर्चा हुई। कार्यक्रम में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष विमलेश सिंह,प्रदेश संगठन मंत्री कामता प्रसाद पांडेय,प्रदेश उपाध्यक्ष मनोज जायसवाल, प्रदेश उपाध्यक्ष विजय कुमार पाठक, प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य रोहित मिश्रा, जिलाध्यक्ष रितेश मौर्य एवं महानगर अध्यक्ष सुधाकर मिश्रा सहित बड़ी संख्या में पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का समापन सनातन धर्म के संरक्षण,संवर्धन एवं व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए सामूहिक रूप से सक्रिय भूमिका निभाने के संकल्प के साथ हुआ।।

पत्र सूचना कार्यालय (पीआइबी),वाराणसी में सतर्कता जागरूकता सप्ताह का शुभारंभ,मीडिया एवं संचार अधिकारी ने दिलाई सत्यनिष्ठा की शपथ

(संतोष कुमार सिंह)

वाराणसी:- भ्रष्टाचार मुक्त समाज के निर्माण और सार्वजनिक जीवन में ईमानदारी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से पत्र सूचना कार्यालय (पीआइबी),वाराणसी में 26 अक्टूबर 2026 सोमवार को सतर्कता जागरूकता अभियान का औपचारिक शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर कार्यालय के समस्त अधिकारियों और कर्मचारियों ने सत्यनिष्ठा और पारदर्शिता के साथ अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने का संकल्प लिया। अभियान के पहले दिन आयोजित विशेष कार्यक्रम के दौरान पीआईबी वाराणसी के मीडिया एवं संचार अधिकारी प्रशांत कक्कड़ ने उपस्थित सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को 'सत्यनिष्ठा की शपथ' दिलाई। शपथ ग्रहण के दौरान सभी ने देश के प्रति वफादार रहने, भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाने और अपने दैनिक कार्यों में पूरी ईमानदारी व पारदर्शिता बरतने की प्रतिज्ञा की।।

महर्षि वाल्मीकि : तप, ज्ञान और सामाजिक समरसता के अमर प्रतीक



जिनकी लेखनी ने भगवान श्रीराम के आदर्शों को जन-जन तक पहुँचाया

भारतीय संस्कृति का इतिहास उन ऋषियों, मुनियों और महापुरुषों की तपस्या, साधना तथा लोकमंगल की भावना से आलोकित है, जिन्होंने अपने जीवन को समाज के उत्थान और मानवता के कल्याण के लिए समर्पित कर दिया। महर्षि वाल्मीकि ऐसे ही युगद्रष्टा ऋषि हैं, जिन्होंने अपनी प्रतिभा, साधना और लेखनी से भारतीय जनमानस को ऐसी अमूल्य निधि प्रदान की, जिसका प्रभाव सहस्राब्दियों के बाद भी अक्षुण्ण है। उन्होंने भगवान श्रीराम के जीवन, उनके आदर्शों, मर्यादा, त्याग, करुणा और धर्मनिष्ठा को काव्यबद्ध करके मानव समाज के सम्मुख एक ऐसा आदर्श प्रस्तुत किया, जो देश, काल और परिस्थितियों की सीमाओं से परे है।

महर्षि वाल्मीकि को आदिकवि और उनके द्वारा रचित रामायण को आदिकाव्य कहा जाता है। यह सम्मान केवल साहित्यिक रचना के कारण नहीं है, बल्कि इसलिए भी है कि उन्होंने काव्य के माध्यम से जीवन के उन शाश्वत मूल्यों को अभिव्यक्ति दी, जिन पर एक श्रेष्ठ व्यक्ति, सुसंस्कृत परिवार और आदर्श समाज की रचना संभव है। उनकी रामायण केवल भगवान श्रीराम की कथा नहीं, बल्कि भारतीय जीवन-दर्शन, कर्तव्यबोध, पारिवारिक मर्यादा, न्याय, करुणा और सामाजिक उत्तरदायित्व का विराट ग्रंथ है।

महर्षि वाल्मीकि : तपस्या, ज्ञान और साधना के प्रतीक

महर्षि वाल्मीकि का व्यक्तित्व भारतीय ऋषि-परंपरा की उस महान साधना का प्रतीक है, जिसमें आत्मचिंतन, ज्ञानार्जन, तपस्या और लोककल्याण को जीवन का ध्येय माना गया है। उनका जीवन और कृतित्व यह प्रेरणा देता है कि मनुष्य की वास्तविक महानता उसके ज्ञान, साधना, विचारों और समाज को दिए गए योगदान में निहित होती है।

भारतीय परंपरा में महर्षि वाल्मीकि को ऐसे ऋषि के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त है, जिन्होंने अपनी काव्यप्रतिभा और आध्यात्मिक दृष्टि से भगवान श्रीराम के चरित्र को अमर अभिव्यक्ति प्रदान की। उन्होंने रामकथा के माध्यम से मानव जीवन के आदर्शों को इस प्रकार प्रस्तुत किया कि वे केवल विद्वानों तक सीमित न रहकर सामान्य जनजीवन का हिस्सा बन गए।

महर्षि वाल्मीकि का महत्त्व इस बात में भी है कि उन्होंने साहित्य को लोकमंगल का माध्यम बनाया। उनकी रचना में केवल घटनाओं का वर्णन नहीं है, बल्कि जीवन के गहरे प्रश्नों पर विचार करने की प्रेरणा भी है। धर्म क्या है, कर्तव्य का निर्वाह कैसे किया जाए, संबंधों में मर्यादा कैसे बनी रहे और कठिन परिस्थितियों में भी आदर्शों पर कैसे चला जाए—रामायण इन प्रश्नों के उत्तर खोजने का मार्ग प्रशस्त करती है।

करुणा से हुआ आदिकाव्य का जन्म

महर्षि वाल्मीकि के आदिकवि बनने से संबंधित एक अत्यंत प्रसिद्ध प्रसंग भारतीय साहित्य की संवेदनशील परंपरा को उजागर करता है। परंपरा के अनुसार, एक दिन वे तमसा नदी के तट पर भ्रमण कर रहे थे। वहाँ उन्होंने क्रौंच पक्षियों के एक जोड़े को देखा। उसी समय एक व्याध के बाण से उनमें से एक पक्षी की मृत्यु हो गई। अपने साथी से बिछुड़े पक्षी की व्यथा देखकर महर्षि का हृदय करुणा से भर उठा। उनके मुख से सहज ही एक श्लोक प्रस्फुटित हुआ, जिसे संस्कृत काव्य की प्रथम श्लोकात्मक अभिव्यक्तियों में गिना जाता है। यह प्रसंग भारतीय साहित्य की एक गहरी विशेषता को सामने लाता है—महान साहित्य का जन्म केवल शब्दों के कौशल से नहीं, बल्कि संवेदनशील हृदय से होता है। जहाँ दूसरे व्यक्ति को केवल एक घटना दिखाई देती है, वहीं करुणाशील दृष्टि उस घटना में निहित पीड़ा और जीवन के मूल्य को पहचान लेती है।

महर्षि वाल्मीकि की करुणा केवल एक पक्षी तक सीमित नहीं थी। उनकी रामायण में वनवासी, ऋषि, राजा, प्रजा, माता, पुत्र, मित्र और शत्रु—सभी के जीवन तथा भावनाओं का चित्रण मिलता है। वे मनुष्य के अंतर्मन को समझते हैं और उसके आचरण के परिणामों को सामने रखते हैं। आज जब समाज अनेक प्रकार के तनाव, असंवेदनशीलता और पारस्परिक अविश्वास से जूझ रहा है, तब महर्षि वाल्मीकि का यह प्रसंग हमें याद दिलाता है कि संवेदना और करुणा सभ्य समाज की आधारशिला हैं। दूसरों की पीड़ा को समझना, दुर्बल की रक्षा करना और जीवमात्र के प्रति दयाभाव रखना ही संस्कृति की वास्तविक पहचान है।

रामायण : भारतीय जीवन-दर्शन का अमर ग्रंथ

महर्षि वाल्मीकि की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण देन रामायण है। इस महाकाव्य में भगवान श्रीराम के जीवन के माध्यम से धर्म, मर्यादा, त्याग, कर्तव्य और आदर्श आचरण का व्यापक चित्र प्रस्तुत किया गया है। रामायण का प्रभाव भारत के सामाजिक, धार्मिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक जीवन में अत्यंत गहरा रहा है।

भगवान श्रीराम का चरित्र हमें सिखाता है कि अधिकार से बड़ा कर्तव्य है, शक्ति से बड़ा संयम है और व्यक्तिगत सुख से बड़ा लोककल्याण हो सकता है। पिता के वचन की मर्यादा के लिए राजसुख का त्याग, कठिन परिस्थितियों में धैर्य, मित्र के प्रति निष्ठा, प्रजा के प्रति उत्तरदायित्व और अधर्म के विरुद्ध संघर्ष—ये सभी प्रसंग जीवन को दिशा देने वाले आदर्श प्रस्तुत करते हैं।

रामायण में श्रीराम का व्यक्तित्व केवल एक पराक्रमी योद्धा का नहीं, बल्कि मर्यादा का पालन करने वाले ऐसे पुरुष का है, जो अपने जीवन के कठिनतम निर्णयों में भी धर्म और कर्तव्य के प्रश्नों से जूझता है। इसी कारण भारतीय परंपरा ने उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में प्रतिष्ठित किया।

रामायण की विशेषता यह भी है कि इसमें जीवन के विभिन्न संबंधों को आदर्श रूप में प्रस्तुत किया गया है। श्रीराम और माता सीता के संबंध में निष्ठा तथा त्याग, श्रीराम और लक्ष्मण के संबंध में भ्रातृप्रेम, भरत के चरित्र में सत्ता के प्रति अनासक्ति और हनुमान जी के चरित्र में सेवा, समर्पण तथा भक्ति का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है।

इस महाकाव्य में सत्ता का उद्देश्य केवल शासन करना नहीं, बल्कि प्रजा के सुख, सुरक्षा और कल्याण की व्यवस्था करना है। राजधर्म का यही विचार भारतीय राजनीतिक और नैतिक चिंतन की महत्त्वपूर्ण धारा रहा है।

रामायण को पीढ़ी-दर-पीढ़ी सुनाया और पढ़ा जाता रहा है, क्योंकि यह प्रत्येक युग के सामने उसके अपने प्रश्न रखती है। परिवार में संबंधों की मर्यादा कैसे बनी रहे? कठिन परिस्थितियों में मनुष्य अपने कर्तव्य का निर्वाह कैसे करे? सत्ता और शक्ति का उपयोग किस उद्देश्य से हो? समाज में न्याय और करुणा का संतुलन कैसे स्थापित हो? इन प्रश्नों पर विचार करने के लिए रामायण आज भी प्रेरणा देती है।

सामाजिक समरसता और मानव-मर्यादा का संदेश

महर्षि वाल्मीकि का जीवन और उनकी रामायण सामाजिक समरसता के संदर्भ में विशेष महत्त्व रखते हैं। भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठ परंपरा मनुष्य का मूल्यांकन उसके सदाचार, ज्ञान, गुण, सेवा और आचरण से करती है। रामायण के अनेक प्रसंग इस बात को उजागर करते हैं कि प्रेम, निष्ठा, भक्ति और सेवा का महत्त्व बाहरी वैभव से कहीं अधिक है।

भगवान श्रीराम का निषादराज गुह के प्रति स्नेह, वनवासी भक्त शबरी के प्रति आत्मीयता तथा हनुमान जी के प्रति विश्वास और सम्मान ऐसे प्रसंग हैं, जो सामाजिक संबंधों में आत्मीयता और मानवीय गरिमा का महत्त्व बताते हैं। इन प्रसंगों का संदेश स्पष्ट है कि समाज की वास्तविक शक्ति परस्पर सम्मान, सहयोग और विश्वास में निहित होती है। महर्षि वाल्मीकि भारतीय परंपरा में ज्ञान, तपस्या और साहित्यिक प्रतिभा के लिए प्रतिष्ठित हैं। उनका सम्मान इस बात का स्मरण कराता है कि समाज को किसी व्यक्ति के संबंध में संकीर्ण धारणाओं के स्थान पर उसके गुणों, कर्मों और योगदान को महत्त्व देना चाहिए।

सामाजिक समरसता केवल भाषणों या नारों से स्थापित नहीं होती। इसके लिए आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति को सम्मान मिले, समाज के प्रत्येक वर्ग को उन्नति के अवसर प्राप्त हों और किसी के साथ अन्याय अथवा अपमान न हो। जब समाज के लोग एक-दूसरे के सुख-दुःख में सहभागी बनते हैं, तब सामाजिक एकता सुदृढ़ होती है। महर्षि वाल्मीकि की जयंती इस दिशा में आत्ममंथन का अवसर है। यह दिन हमें प्रेरित करता है कि हम समाज में सम्मान, सहयोग और सद्भाव की भावना को मजबूत करें तथा अपने व्यवहार में उन आदर्शों को उतारें, जिनकी शिक्षा हमारी संस्कृति देती है।

लव-कुश को शिक्षा : ज्ञान और संस्कार की महत्ता

रामायण के उत्तरकांड की परंपरा में महर्षि वाल्मीकि का आश्रम एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। माता सीता के वन में निवास के प्रसंग के साथ यह वर्णन मिलता है कि महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में लव और कुश का पालन-पोषण तथा शिक्षण हुआ। उन्होंने दोनों बालकों को ज्ञान, शास्त्र, शौर्य, सदाचार और रामकथा का प्रशिक्षण दिया। यह प्रसंग भारतीय शिक्षा-परंपरा के एक महत्त्वपूर्ण आदर्श को प्रस्तुत करता है। शिक्षा का उद्देश्य केवल अक्षरज्ञान या जीविका अर्जित करना नहीं, बल्कि व्यक्ति के भीतर विवेक, अनुशासन, आत्मविश्वास और उत्तरदायित्व का विकास करना भी है। महर्षि वाल्मीकि ने लव-कुश को रामायण का ज्ञान दिया। परंपरा में यह भी वर्णित है कि दोनों बालकों ने रामकथा का गायन किया। इस प्रकार रामायण केवल ग्रंथ के रूप में नहीं, बल्कि गुरु-शिष्य परंपरा, श्रवण, गायन और मौखिक प्रसार के माध्यम से भी समाज तक पहुँची।

आज के समय में यह प्रसंग विशेष प्रासंगिक है। आधुनिक शिक्षा विज्ञान, तकनीक और व्यावसायिक दक्षता प्रदान करती है, किंतु उसके साथ चरित्र निर्माण, संवेदनशीलता, अनुशासन और सांस्कृतिक चेतना का विकास भी आवश्यक है। जिस शिक्षा में ज्ञान के साथ संस्कार हों, वही व्यक्ति को समाज के प्रति उत्तरदायी नागरिक बनाती है।

परिवार, विद्यालय और समाज—तीनों को मिलकर ऐसी पीढ़ी तैयार करनी चाहिए, जो आधुनिक ज्ञान से संपन्न होने के साथ अपनी सांस्कृतिक जड़ों से भी जुड़ी रहे। महर्षि वाल्मीकि का जीवन और उनका साहित्य इस दिशा में प्रेरणा प्रदान करते हैं।

प्रकृति, वन और मानव जीवन का संबंध

रामायण का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष प्रकृति के साथ मनुष्य के संबंधों का चित्रण है। वन, नदियाँ, पर्वत, वृक्ष, पशु-पक्षी और ऋषियों के आश्रम इसकी कथा के अभिन्न अंग हैं। प्रकृति यहाँ केवल पृष्ठभूमि नहीं, बल्कि जीवन और साधना का सक्रिय परिवेश है। महर्षि वाल्मीकि के आश्रम की कल्पना भी ऐसे वातावरण से जुड़ी है, जहाँ अध्ययन, तपस्या, अनुशासन और प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण जीवन का महत्त्व है। क्रौंच पक्षी के प्रसंग में उनकी करुणा यह संकेत देती है कि जीव-जगत के प्रति संवेदनशीलता मानवीय चेतना का आवश्यक गुण है। भारतीय संस्कृति में नदियों को माता, पृथ्वी को धारण करने वाली शक्ति और वृक्षों को जीवन के सहायक रूप में सम्मान देने की परंपरा रही है। यह दृष्टि मनुष्य को प्रकृति के प्रति केवल उपभोग की भावना से नहीं, बल्कि संरक्षण और कृतज्ञता के भाव से जोड़ती है।

आज पर्यावरण प्रदूषण, जल संकट, वनों के क्षरण और जैव विविधता के ह्रास जैसी चुनौतियाँ हमारे सामने हैं। ऐसे समय में रामायण से मिलने वाली प्रकृति-संवेदनशील दृष्टि को व्यवहार में उतारना आवश्यक है। जल का संरक्षण, वृक्षारोपण, जीव-जंतुओं के प्रति दया और प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग समाज के प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है। महर्षि वाल्मीकि की स्मृति को सार्थक बनाने का एक मार्ग यह भी है कि हम प्रकृति के प्रति अपने कर्तव्यों को पहचानें और आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वच्छ, संतुलित तथा सुरक्षित पर्यावरण छोड़ने का संकल्प लें।

भारतीय संस्कृति और वैश्विक चेतना में रामायण का प्रभाव

महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण ने भारतीय साहित्य और संस्कृति को गहराई से प्रभावित किया है। रामकथा ने विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनेक रूप ग्रहण किए और लोकपरंपराओं, नाट्यकलाओं, संगीत, चित्रकला तथा धार्मिक उत्सवों को समृद्ध किया। देश के विभिन्न क्षेत्रों में रामलीला और रामकथा की परंपराएँ आज भी जनजीवन का महत्त्वपूर्ण हिस्सा हैं।

भारत की सीमाओं से बाहर भी रामकथा के विविध रूप दक्षिण-पूर्व एशिया सहित अनेक क्षेत्रों की सांस्कृतिक परंपराओं में दिखाई देते हैं। अलग-अलग समाजों ने अपने भाषायी और सांस्कृतिक परिवेश के अनुरूप रामकथा को अपनाया, जिससे इसका व्यापक सांस्कृतिक प्रभाव स्पष्ट होता है। यह प्रभाव केवल धार्मिक आस्था तक सीमित नहीं है। रामायण में वर्णित नैतिक द्वंद्व, पारिवारिक संबंध, सत्ता के दायित्व, मित्रता, निष्ठा और न्याय जैसे विषय मानव जीवन के सार्वकालिक प्रश्न हैं। इसी कारण विभिन्न पीढ़ियों के लोग इस महाकाव्य को पढ़ते, सुनते और इसके पात्रों तथा प्रसंगों पर विचार करते रहे हैं। महर्षि वाल्मीकि ने अपनी रचना के माध्यम से भारतीय संस्कृति को ऐसा साहित्यिक आधार दिया, जिसने लोकजीवन और उच्च साहित्य के बीच सेतु का कार्य किया। रामकथा राजमहलों से लेकर सामान्य परिवारों तक पहुँची और पीढ़ियों के संस्कारों का हिस्सा बनी।

आज के समाज के लिए महर्षि वाल्मीकि का संदेश

महर्षि वाल्मीकि की प्रासंगिकता केवल अतीत के गौरवगान में नहीं, बल्कि वर्तमान के जीवन-मूल्यों में निहित है। उनके जीवन और साहित्य से हमें अनेक प्रेरणाएँ प्राप्त होती हैं। पहली प्रेरणा है—आत्मचिंतन और साधना। मनुष्य को निरंतर ज्ञान प्राप्त करने, अपने विचारों को परिष्कृत करने और श्रेष्ठ जीवन-मूल्यों को अपनाने का प्रयास करना चाहिए। दूसरी प्रेरणा है—करुणा। दूसरों की पीड़ा को समझने और उसके निवारण का प्रयास करने से ही समाज मानवीय बनता है। तीसरी प्रेरणा है—ज्ञान और संस्कार। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य मनुष्य के व्यक्तित्व को परिष्कृत करना है। चौथी प्रेरणा है—कर्तव्य और मर्यादा। परिवार, समाज और राष्ट्र के प्रति अपने उत्तरदायित्वों का निर्वाह ही जीवन को सार्थक बनाता है। पाँचवीं प्रेरणा है—सामाजिक समरसता। परस्पर सम्मान और सहयोग के बिना किसी समाज की एकता स्थायी नहीं हो सकती।

इन आदर्शों को अपनाने के लिए बड़े-बड़े उपदेशों की अपेक्षा दैनिक जीवन में छोटे-छोटे संकल्प अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। परिवार में बुजुर्गों का सम्मान, बच्चों में अच्छे संस्कार, समाज के वंचित लोगों की सहायता, शिक्षा का प्रसार, प्रकृति का संरक्षण और सार्वजनिक जीवन में ईमानदारी—ये सभी कार्य महर्षि वाल्मीकि की प्रेरणा को जीवन में उतारने के व्यावहारिक मार्ग हैं।

युगों-युगों तक आलोकित रहने वाली ऋषि-परंपरा

महर्षि वाल्मीकि भारतीय ऋषि-परंपरा के ऐसे महान व्यक्तित्व हैं, जिनका योगदान साहित्य, दर्शन, संस्कृति और समाज—सभी क्षेत्रों में अमिट है। उन्होंने रामायण के माध्यम से भगवान श्रीराम के जीवन को काव्यात्मक अभिव्यक्ति दी और मानव समाज को मर्यादा, कर्तव्य, करुणा तथा आदर्श आचरण की अमूल्य शिक्षा प्रदान की।

उनकी महानता इस बात में निहित है कि उनकी रचना किसी एक समय या समाज की सीमाओं में बँधकर नहीं रह गई। रामायण आज भी परिवारों में पढ़ी जाती है, मंचों पर प्रस्तुत होती है, मंदिरों और सांस्कृतिक आयोजनों में गाई जाती है तथा जीवन के कठिन प्रश्नों पर विचार करने की प्रेरणा देती है। महर्षि वाल्मीकि की जयंती पर उनका स्मरण करना केवल एक महान ऋषि के प्रति श्रद्धा प्रकट करना नहीं, बल्कि उन मूल्यों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराना भी है, जिन्होंने भारतीय सभ्यता को निरंतर शक्ति प्रदान की है।

आइए, हम महर्षि वाल्मीकि के जीवन से साधना और ज्ञान की प्रेरणा लें, उनकी रामायण से मर्यादा और कर्तव्य का संदेश ग्रहण करें, सामाजिक समरसता को अपने आचरण में स्थान दें और ज्ञान तथा संस्कार से संपन्न समाज के निर्माण में योगदान करें। यही आदिकवि महर्षि वाल्मीकि के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी और यही उस महान सांस्कृतिक परंपरा का सम्मान होगा, जिसने भारत को युगों-युगों से धर्म, ज्ञान, करुणा और लोकमंगल की भूमि के रूप में प्रतिष्ठित किया है।

सुबोध चंद्र
प्रांत संगठन मंत्री
(इंद्रप्रस्थ)
विश्व हिंदू परिषद

कोटिया मुद्दे पर राज्यपाल और मुख्यमंत्री को रामचंद्र काडम ने लिखा पत्र

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड
ओडिशा

भूबनेश्वर : कोटिया को लेकर कांग्रेस विधायक दल के नेता रामचंद्र काडम ने राज्यपाल और मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा चुनाव की घोषणा किए जाने के विरोध में तत्काल उचित कानूनी एवं प्रशासनिक प्रक्रिया शुरू करने की मांग की है। अपने पत्र में उन्होंने कहा है कि कोटिया में ओडिशा प्रशासन की उपस्थिति को और मजबूत किया जाए तथा स्थानीय लोगों को आवश्यक सेवाओं और कल्याणकारी योजनाओं का निरंतर लाभ मिलना सुनिश्चित किया जाए।

उन्होंने वर्ष 2025 में गठित 16 सदस्यीय कोटिया समिति की सिफारिशों को स्पष्ट करने और मौजूदा नियमों के अनुसार उनके क्रियान्वयन की स्थिति सार्वजनिक करने की भी मांग की है। काडम ने संबंधित विभागों, कोरापुट जिला प्रशासन और निर्वाचित जनप्रतिनिधियों को शामिल करते हुए एक उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक बुलाने का सुझाव दिया है, ताकि निर्धारित समयसीमा के भीतर कार्ययोजना तैयार की जा सके। उन्होंने कहा कि कोटिया के लोगों की समस्याओं के समाधान और ओडिशा प्रशासन के प्रति उनका विश्वास बढ़ाने के लिए वरिष्ठ अधिकारियों को नियमित रूप से कोटिया का दौरा करना चाहिए।

झारखंड में धान का एमएसपी रू 2550 से रू 2570 प्रति क्विंटल निर्धारित

मंत्री इरफान अंसारी के पहल पर दर निर्धारित, 40 लाख क्विंटल धान 43 करोड़ रूपये में खरीदी जायेगी

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, केंद्र सरकार ने खरीफ विपणन मौसम 2026-27 के लिए सामान्य धान का न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) 2441 और ग्रेड-ए धान का 2461 रुपये प्रति क्विंटल निर्धारित किया है. राज्य सरकार के प्रस्तावित बोनस को जोड़ने पर सामान्य धान की दर 2550 और ग्रेड-ए धान की दर 2570 रुपये प्रति क्विंटल हो जायेगी. हालांकि, बोनस बढ़ाने के प्रस्ताव पर अभी मंजूरी मिलनी बाकी है.

विभाग ने 40 लाख क्विंटल धान खरीद के लक्ष्य के आधार पर बोनस भुगतान के लिए 43 करोड़ 60 लाख रुपये की संभावित राशि का आकलन किया है. इसके लिए योजना प्राधिकृत समिति के समक्ष प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया है. विभागीय सचिव राजेश कुमार शर्मा ने बताया कि प्रस्ताव को जल्द कैबिनेट के समक्ष भेजकर मंजूरी लेने की प्रक्रिया पूरी की जायेगी.



उन्होंने कहा कि धान कटनी शुरू होने से पहले अधिप्राप्ति की तैयारियां पूरी करने का निर्देश मंत्री ने दिया है. विभागीय स्तर पर लगातार समीक्षा और बैठकें की जा रही हैं, ताकि किसानों को धान बेचने में परेशानी नहीं हो.

विभागीय आकलन के अनुसार, केंद्र सरकार की राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (एनएफएसए) योजना के लिए 19.60 लाख क्विंटल और झारखंड राज्य खाद्य सुरक्षा योजना के लिए 19,79,412 क्विंटल धान की जरूरत है. इस तरह कुल आवश्यकता 39,39,412 क्विंटल आंकी गयी है. इसे देखते हुए खरीद का लक्ष्य बढ़ाकर 40 लाख क्विंटल करने का प्रस्ताव रखा गया है. धान की खरीद झारखंड राज्य खाद्य एवं असैनिक आपूर्ति निगम लिमिटेड के माध्यम से की जायेगी.

मंत्री डॉ इरफान अंसारी ने कहा कि हेमंत सोरेन सरकार किसानों की आय बढ़ाने और उनकी मेहनत का उचित मूल्य दिलाने के लिए प्रतिबद्ध है. किसान मजबूत होंगे, तभी गांवों की अर्थव्यवस्था और राज्य मजबूत होगा. सरकार का प्रयास है कि किसानों को उनकी उपज का बेहतर मूल्य मिले और खेती को अधिक लाभकारी बनाया जा सके.

सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय MINISTRY OF ROAD TRANSPORT AND HIGHWAYS
आवास और शहरी कार्य मंत्रालय भारत सरकार MINISTRY OF HOUSING AND URBAN AFFAIRS GOVERNMENT OF INDIA
Government of National Capital Territory of Delhi राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार

परिवर्तन योजना

आप सादर आमंत्रित हैं

ट्रांसपोर्ट मेला

पुराना वाहन बदलें, नया वाहन खरीदें
(स्क्रैपिंग या बाहर बेचें)

सब कुछ एक ही जगह, एक ही दिन!

बुधवार 28 अक्टूबर 2026
समय: सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक
सुबह 10 बजे तक ज़रूर पहुंचें, मेला शाम 6 बजे तक चलेगा
स्थान: वाहन निरीक्षण इकाई, बुराड़ी, दिल्ली
जिला परिवहन कार्यालय के पास, चालक प्रशिक्षण संस्थान के नज़दीक, उत्तरी दिल्ली

एक ही जगह: स्क्रैपिंग सुविधा, वाहन निर्माता, डीलर, रीसेलर, बैंक व एनबीएफसी

1 पंजीकरण करें — प्रवेश पर हेल्पडेस्क से अपना पंजीकरण करें
2 पुराना वाहन बदलें — स्क्रैपिंग सुविधा पर स्क्रैप करें, या वाहन बाहर बेचें
3 वाहन चुनें — वाहन निर्माता, डीलर व रीसेलर के स्टॉल पर वाहन चुनें और बुक करें
4 लोन लें — बैंक व एनबीएफसी से आसान लोन लें और वाहन खरीदें

₹10 लाख तक के फायदे पाएं
5% ब्याज अनुदान • कम से कम 8% डीलर डिस्काउंट • 100% रोड टैक्स में छूट
100% पंजीकरण शुल्क माफ • ईवी पर एक बार का लाभ • मासिक फ्यूल वाउचर

साथ लाएं: वाहन की आरसी • आधार से जुड़ा मोबाइल • बैंक खाता विवरण
फर्म / संस्थान के लिए: पैन / सीआईएन

पहले से पंजीकरण करना हो तो क्यूआर स्कैन करें
या मेले में मौके पर भी पंजीकरण हो जाएगा
हेल्पलाइन: (011) 23310080 | parivartan.parivahan.gov.in

झारखंड में खनिज सेस वसुली हेतु नवंबर में विशेष विधानसभा सत्र

एम एम डी आर एक्ट के चलते सेस वसूली में प्रभाव पड़ा है

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, खनिज पर सेस (उपकर) वसूलने के अधिकार को लेकर झारखंड सरकार नवंबर के पहले सप्ताह में विधानसभा का विशेष सत्र बुलाने की तैयारी कर रही है। मंगलवार को होने वाली मंत्रिमंडल की बैठक में दो दिवसीय विशेष सत्र के आयोजन पर अंतिम निर्णय लिया जा सकता है। राज्य सरकार केंद्र सरकार के हालिया खान और खनिज विकास एवं विनियमन संशोधन अधिनियम का विरोध कर रही है। सरकार का कहना है कि नए अधिनियम से खनिज पर सेस वसूलने का राज्य का अधिकार प्रभावित हुआ है। इससे मुख्यमंत्री मंइयां सम्मान योजना समेत कई जनकल्याणकारी योजनाओं के संचालन पर संकट पैदा हो सकता है।

राज्य सरकार विशेष सत्र के दौरान केंद्र के संशोधित अधिनियम पर विधानसभा में चर्चा कराएगी



और इसके विरोध में प्रस्ताव पारित करने की तैयारी में है। मंत्रिमंडल से मंजूरी मिलने के बाद प्रस्ताव को राज्यपाल की स्वीकृति के लिए भेजा जाएगा। राज्यपाल की मंजूरी मिलने के बाद ही विशेष सत्र आयोजित किया जा सकेगा। सरकार इस मुद्दे पर अपना विरोध दर्ज कराते हुए खनिज पर सेस वसूलने के अधिकार को बनाए रखने की कोशिश करें

केंद्र सरकार की ओर से नियमों में बदलाव किए जाने के बावजूद झारखंड सरकार ने खनिज पर सेस की वसूली बंद नहीं की है। राज्य सरकार के अनुसार, अब तक 1,000 करोड़ रुपये से अधिक सेस वसूला जा चुका है। सरकार खनिज पर सेस लगाने की अपनी शक्ति छोड़ने को तैयार नहीं है। वह इस मुद्दे को राज्य के प्राकृतिक संसाधनों और जल, जंगल तथा जमीन पर अधिकारों से जोड़कर देख रही है।

इससे पहले झारखंड सरकार ने पांच और छह अक्टूबर को विधानसभा का विशेष सत्र बुलाने की रूपरेखा तैयार की थी। हालांकि, मंत्री दीपिका पांडेय सिंह की पुत्री का सड़क हादसे में निधन होने और मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की माता रूपी सोरेन के गंभीर रूप से बीमार होने के बाद निधन के कारण बैठकें टालनी पड़ी थीं।

11वीं व 13वीं जेपीएससी परीक्षा रद्द करने के मामले पर आई ए याचिका हुई खारीज

सभी अभ्यर्थियों की नजर हाईकोर्ट के अगले निर्णय पर

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची: झारखंड हाईकोर्ट में 11वीं से 13वीं झारखंड संयुक्त सिविल सेवा परीक्षा के मुख्य परिणाम को रद्द करने के मामले में दायर अपील याचिकाओं पर सुनवाई हुई. चीफ जस्टिस एमएस सोनक की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने सुनवाई के दौरान प्रार्थियों और प्रतिवादी पक्ष की दलीलें सुनीं. इसके बाद खंडपीठ ने अपीलकर्ताओं को राहत देने से इनकार करते हुए उनकी इंट्रा-लोकेट्री अपील (आईए) याचिका खारिज कर दी. अदालत ने कहा कि जब संबंधित मामले में एकल पीठ अपना आदेश सुरक्षित रख चुकी है, तो इस स्तर पर आदेश पारित नहीं किया जा सकता. इस मामले में अपीलकर्ता अयूब तिर्की एवं अन्य की ओर से अपील याचिका दायर कर एकल पीठ के आदेश को चुनौती दी गई

सुनवाई के दौरान प्रतिवादी सफल अभ्यर्थियों की ओर से अधिवक्ता अमृतांश वत्स ने खंडपीठ को बताया कि झारखंड सरकार की ओर से परीक्षा रद्द करने संबंधी अधिसूचना को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर एकल पीठ में सुनवाई पूरी हो चुकी है. एकल पीठ ने सभी पक्षों की दलीलें सुनने के बाद अपना फैसला सुरक्षित रख लिया है. ऐसे में जब मूल विवाद पर एकल पीठ का फैसला आना बाकी है, तब इस स्तर पर हस्तक्षेप को लेकर आदेश पारित करने का औचित्य नहीं है. खंडपीठ ने दोनों पक्षों को सुनने के बाद प्रार्थियों को अंतरिम राहत देने से इनकार कर दिया.



मामले में अपीलकर्ता की ओर से खंडपीठ को बताया गया कि राज्य सरकार ने संयुक्त सिविल सेवा परीक्षा रद्द कर दी है. इस फैसले को सफल अभ्यर्थियों ने रिट याचिका दायर कर चुनौती दी है. परीक्षा रद्द करने की अधिसूचना और इसके कानूनी प्रभाव को लेकर विवाद हाईकोर्ट में विचाराधीन है. इसी मामले में एकल पीठ के आदेश को चुनौती देते हुए अयूब तिर्की एवं अन्य की ओर से अपील याचिका दायर की गई है. अपीलकर्ताओं ने मामले में हस्तक्षेप की मांग की थी। चीफ जस्टिस एमएस सोनक की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने सुनवाई के दौरान दोनों पक्षों की दलीलों पर विचार किया. सफल अभ्यर्थियों की ओर से बताया गया कि परीक्षा रद्द करने के फैसले को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर एकल पीठ में सुनवाई पूरी हो चुकी है. वहीं, अपीलकर्ता पक्ष ने परीक्षा रद्द किये जाने और उससे संबंधित विवाद की ओर अदालत का ध्यान आकृष्ट कराया. दोनों पक्षों को सुनने के बाद खंडपीठ ने हस्तक्षेप याचिका खारिज कर दी. इस सुनवाई में प्रार्थियों को राहत नहीं मिली है, लेकिन इससे परीक्षा रद्द करने के मूल विवाद का अंतिम निपटारा नहीं हुआ है. राज्य सरकार की अधिसूचना को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर एकल पीठ का फैसला अभी महत्वपूर्ण है. एकल पीठ के आदेश के बाद ही मामले की आगे की कानूनी स्थिति स्पष्ट होगी. फिलहाल, 11वीं से 13वीं जेपीएससी संयुक्त सिविल सेवा परीक्षा के मुख्य परिणाम को लेकर अभ्यर्थियों की निगाहें हाईकोर्ट के अगले फैसले पर है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023